

14
57



धर्मरत्न बजाचार्य सुरत श्री महाविहार

DH 75

गुरुपुत्र

1195

युवर्ष

गी

ॐ नमः श्रीसर्ववृद्धवाधिसत्त्व
नाथे ॥ नमः ॥ शुभं नमः
येकसमयगृहकृतकथा
श्रीवृद्धनाथ ॥ वाधि
कथासुखसाधमहावक्तव्यागि



॥ नमः श्रीरुग्गवसे ॥ आर्यपुत्रावावमि
निगमिविजयसादा ॥ शुभं नमः
गुरुविजयवधमधारीग १
सत्त्वसमययामहाकूलदव
चमहादवक्तव्या ॥ दृढयावमहापृथिः

वीदवक्तव्यादावीसाचमहादवक्तव्या ॥ चवसुम्वारिमहादवक्तारिवक्तव्यनागयक्तव्य
सगन्धसूत्रगवृत्तकित्तव
नन्दारुग्गवसे नमः दवाचन ॥
गवानाद ॥ गाथाहिरुनं च
मिष्टिगं ॥ शुभं पृथिव्युक्तं पृथिविसत्त्वमपूत्रनिदानं सगुवाङ्मयसर्वपुत्रमार्गसमिधं ॥

दि

ककागमिन्नयव(ननगम्रीत्रवपयत्रोक्र(नन॥दगदिद्रुचनसृषूवृद्धमधिज्ञानमधिद्विगं॥
जुक्रासुवाउ॥पूर्वस्मिदक्रिः (नवन्नकुरुना॥यथिः मायासमिमाउरुउरुवड
नुरिस्रव॥गंयवश्चास्यधि हनंमांगल्यदगनारु मं॥सव्यायविनासार्थस
वपायक्यंकवं॥सर्वसोख्य यदाकावंसर्व३॥खवि नागनं॥मलसर्वरुनत्व
सर्वशीसमलंकनं॥उपदगलियायदिसत्त्वानद्रादगायव॥अलकायविविद्यादिदव

मासपवांसूखा॥कानकयायउनानिद्रा॥कूदम्बादिषयदुना॥पत्रस्यवविवृद्धावाअथनाः
येवृयदुना॥(माकायाम् यनर्थत्रयवसनचः वत्र॥गहनकुरुपीजयाकाः
खाददावृक्षगदं॥यायः कंयग्नकसप्र(माकाः याससमृद्धिगं॥ननसस्त्रान
युविना(मगवांसूकुमुरु मं॥गृध्नियरुदंसूयं गम्रीत्रंवृद्ध(मावत्रंमामनस्का
यसन्नास्या॥युवित्रमुत्रलंकना॥कषांसर्वकथानित्यमवसगा॥सूदावृक्षा॥नजसावास्यसूः

वि

कस्य गामा न स चे पा विना ॥ स्वय न क सा क पा ला हि मा मा र्णा ॥ स ग ॥ १ ॥ ४ ॥ क षां व क्तां क वि षा नि ष
न क र्य क्का दि रि ॥ स व स ॥ ३ ॥ नी म द द वी क था यी ऊ य वा सि नी ॥ द्वा वी नी र न मा ना व ॥
दृ द्वा य थि वी द व ना ॥ व क्ता ॥ ३ ॥ दु सि द ग न्दु य म द दि कि न्न य थ व ॥ ग व ॥ ३ ॥ ३ ॥
सा द्द य क्क गं व च य न्न गे ॥ १ ॥ १ ॥ व रु रु प सं क म्प स म न्ना ॥ व स वा द ना ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥
षा नि दि वा ना गो स मा दि ना ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ दं स र्गं प का सि षा ग म्पु वं व द्वा ॥ ग व वं ॥ ३ ॥ ३ ॥
व द्वा स सं स व व द्वा नां ३ सं रं क ॥

स्य का टी रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ दं स र्गं य वा ना य व य नि च ॥ य क वि द न् मा द न य व प्ता क वा नि दि ॥ १ ॥ १ ॥
जि ना रु वि षा नि षा न क ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ द व ना ग ॥ स न्धे थ कि न्न वा स व यु क्क
क ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ द व ना ग ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ द व ना ग ॥
सि नां ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ द व ना ग ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ द व ना ग ॥
स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥
स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥ स्य का दि रि ॥ १ ॥ १ ॥ ३ ॥

६	वा॥ यावद्दमकमलमूलकर्मपथं समादाय यत्॥ तावन्निरुगवता लोडनमाध्यासिकं वाद्यानि वस्तु		
	निसत्त्वानां यविसकानि॥ अन्तः	ग॥ समं वीरमान्मवृधि	वास्त्रिमर्दुयावृद्धिना॥
	सत्त्वा॥ सन्नयिना॥ पाणवान्न	नलोडनन॥ अथकस्य	पूर्वस्य वृद्धान्मृत्तिमः
	नसिकावशमाभा॥ वदियवृ	पांचिकांचिकयमानः	सगृहं विपुसविस्तीर्णमं
	पुविरुमरुवृद्धे दूर्यमयमभकदियवत्तपुण्यं कथागरविगृहदियामिका नैनगन्धनरु		

टं॥ कस्मिंश्च गृहं वरुदिगिवत्ताविदियवत्तमयान्नामनानि पाइरु गा नरुवन॥ कषवासनष		
दियानि पय्यकानि दियवः	त्तइययुगपहफानि	पाइरुनानि वरुवृशापूव
स्तिमनत्तक्राणस्तथागरु॥	याइरुकोदक्रिणनः	वत्तकुरुत्तागरु॥ पाइ
रुन॥ पय्यिमनामिनायुक्त	भागन॥ पाइरुन॥	उरुथइन्दुलिस्ववस्तथाः
गरु॥ पाइरुन॥ समन्तवयाइरुगाआसनवृद्धारुगवन्तुवृत्तिमंदसमपू॥ अथतादववाः		

ऊरुदंमदानगवंसदनावरुनासिनरुदंवरुवा॥ यावरुसादसुमदासादससाकवाकुं॥
 यावत्समनासुदगसुदिदुः गंगानदीवातिकासमा नाकवागव रुनावरुसेः
 नरुदोवरुवृष्टिवातिवपु ष्यातिपावृष्टिवातिव रुथातिपवाद्यत्त॥ स
 चिवास्मिन्नि सादसुमदासादः सुनाकवागोसत्वावृक्षा नरुगवदिवसुखनसमः
 नागनावरुवृ॥ जातुनाथसत्वावृयातिपग्धनि॥ वधिवाथसत्वा॥ सत्वासु॥ गद्वानिगुः

ग

ध्वनि॥ उत्तरुनाथसत्वा॥ स्मृतिंयमिलरु नविक्रिफचिरुथस्मृतिमनावरुवृ॥ नग्राथसत्वाथी
 वनपावृगावरुवृ॥ डिचत्ति नाथसत्वा॥ पत्रिपुर्गुगा यावरुवृ॥ रुपिनाथस
 त्वाविगकरुपुववरुवृ॥ नाग स्पृष्टाथसत्वाविगक यागावरुवृ॥ दीनकाः
 याथसत्वा॥ पत्रिपुर्गुन्द्रिया ववरुवृ॥ विरुथमव रुनासाथीरुनवस्मितां
 साकपाइरुवावरुवृ॥ अथवृचिवकडुवाधिसत्वास्मान्चक्षुर्गवगाइष्ट्वाथयथाकावरुवकथः

या

भक्तदिगि॥ संसृष्ट उदय आरु मना ४ यमदिन ४ योकि सोमनस्य जागायन नव द्वा र ग व न क रु नां
ऊर्लियल मा का व न रु नां व द्वा र
न स्म व मा (क्ष) र ग व न ४ गाय
य मान ४ स्ति ना व रु व ॥ क थः
रु मा यूप मा लं य द्वा गी गि व र्णा लि ॥ अथ ख लू न व द्वा र ग व न ४ स्म ना ४ सं प जा ना सं वृ चि

ग व ना ४ न स्म व मा (क्ष)
मून वा य ४ य मा ल सं ग
म न स्ति भ क य रु ग व

र ग व न ४ गाय मून गु ला
य पा फ रु नां चि नां चि नः
न ४ गाय मून व वं प यी

१

व व र्त्त क रुं वा धि स त्व म न द वा व र्त्त ॥ ० ॥ मा लं क ल पू र्ण वं चि न य वं प यी गं रु ग व न ४ गाय
य मून वा य ४ य मा लं ॥ क रु
क ला क स मा व क स व रु क स
स म र्थ ४ स्म रु ग व न ४ गाय मून
व द य वा न क का ठि रि ४ स्म य यि त्वा रु थ ग ना न रु न ४ स म्प रुं व द्वा ॥ स म न न वा द रु ग व न व द्वा

स्म द ना ॥ न र व क ल पूः
ग म न वा द्वा नि का यांः
न रु थ ग रु स्म य ४ य मा

रु गं स म न प गा म ४ स द व
स द व मा नू पा स वा यां य ४
रं प र्थ न स धि ग नुं ॥ या

३

रुगवद्रिगभागमायू४यसाक्षनिर्दण॥ अथमावदुद्धान्तावनकासावचवावृणावचवायदवपु
 का४सत्तिपकिगा४॥ यावत्ताला
 विसत्तकादिनियुगगकसदः
 मकाआसंन॥ अथकमभागः
 साक्षनिर्दगंगा थारिवरावन्॥ जलापुष्टुवपुसवपुगयनेगलयिहुंविन्दुरि॥ ननुगायकसूनवा

यकगन्धर्वसूउक्ति
 आनि॥ कस्मिन्निविचक
 गा४सर्ववकि४पेर्षदा

वसदावगाअनकानिचवा
 नावाधिसत्तस्यगृदसमा
 रुगवकगायकसूनवायू४य

८

यू४गयंगलयिहुंकनचिन्॥ सभवपवसाक्षनिर्दत्तागयंगवसखाया॥ ननुगायकसूनवायू४गयंग
 लायिहुंकचिन्॥ या४काः
 हुंसर्वाननुवायूजिनसः
 रुगायकसूनवायू४गयंगल
 वा॥ प्रथमिश्चसंवृद्ध४सखाकानदिलसुग४॥ यस्माद्वकावलाकसुगथेवक्षोवपस्यो॥ विवग४

वित्पिथी४सन्नियाव
 वे॥ आकागंयदिवाकः
 यिहुंकचिन्॥ प्ररुकानि

न४यवसाक्षव४॥ गयंगलयि
 धिदिक्तुसिथिहुंकचिन्॥ न
 वकल्यानिकल्याकादिगोनि

५

पापदिंसायावद्भूदकं चरुजनं ॥ यस्मात्कृष्णमहात्मस्य आयुः संख्या न लभ्यते ॥ चरुका निचकल्यानि
 संख्यायावत्कथं वचः ॥ कस्मात् ॥ किं समयसादिमा किञ्चिः ॥ त्वं वसंगयं ॥ नडिन स्यायुः ॥ य
 युक्तं च विस्मं र्थाय लभ्यः ॥ क ॥ अथ खलु नस्मिं सम ॥ यमरुपे यदि जायते वा कथं ॥ त
 पापकोटिनाम बाधन ॥ जनकैवा धनसदसी ॥ सार्द्धं रुगवत् ॥ पूजा कर्म कृत्वा
 कथा गुरुसमहाय विनिर्वाण गच्छंत्वा सदसात् ॥ यरुगवत्कथं वल ॥ शान्तिपत्र रुगवत्कथं वलमाह ॥

॥ ० ॥ सचरु किल रुगवान् सर्व सत्त्वान्कं यकामदा कावृत्तिकादि केषी सर्व सत्त्वानां माता पितृ रुग् ॥
 अ ॥ जसमसमरुत्कथं वृत्ता ॥ नाक कथामहायुक्ता ॥ न सूर्य समरुत्क ॥ अदित्वं
 सर्व सत्त्वानां बाधनं स्वसन्ध ॥ मिमक्षकं वन्दे हिरुग ॥ वांरुषीरुगादरु ॥ अथ वृ
 दानरुगावनरुगायैषादि सर्व ॥ सत्त्वपियदगेनानाम ॥ लिप्तविक्रमावकस्यपति
 रानसूर्यत्वं स जायते वा कथं कोटिनां बाधनमवमाह ॥ किं नूत्वं महाबाधन रुगवत्कथं वलमाह ॥

वरं यावसि॥ अदं न व वंद दामि॥ वा द्रु ह आद॥ अदं स सि म लि त्सा वि कु मा व रु ग व रु ४ पू जा यः
 रु ना य रु ग व रु ४ स र्प प रु ल मा नु षाः मा नु षा रु मि क्का मि निः व दि रुं व रुं वा रु म रि य या
 उ ना ये नं स र्प प रु ल मा नु षाः रु म रि पू ज यि त्सा रि द मा धि प रं ज रु म रु मि॥ १०
 न वं ग रु य रु ॥ रु नं त्वं लि त्सा विः कु मा व स व रुं य रु साः रु म स रुं ड वि रु यं स र्प य
 व क प रु क वृ द्धा नां ना दृ गे ल रु ह गु ले ४ स म न्वा ग रु ४ कि ल स व रुं य रु सा रु म स रुं रु व यि य मि॥

न वं रु लि त्सा वि कु मा व ड वि रु यं ड व न्वा थं स व रुं य रु सा रु म स रुं अ सा क म कं य रु न रु पी का
 नां वा द्रु ह स र्प मा नु षा रुं क रुं क व रु क नि क्रि य वान् ॥ अ दं न व वं या थ य न स रु ४
 क्रि य म व रु दि द मा धि प रं य रु नि ला रि ना रु वि य नि ॥ त्वं कि ल रु लि त्सा वि कु मा
 व स र्प प रु ल मा नु षा रुं क रुं क रुं ग रु सा या रि रुं ॥ वा रु क ल रु क नि क्रि य व दिः
 रु स स र्प स रु नां रि द मा धि प रं य रु सा रु ४ नी रु रु ४ ॥ न वं म या व रु लि त्सा वि कु मा व दा रुं ॥ अ थ

७१

सर्वसाकपियदगनानासलित्तविक्रमात्राचार्यवाक्यवहकोधित्यवाद्गङ्गाथारित्रधारायत॥ यः
 दायागुस्मगंगायागदयः॥ सुमानिवा॥ वक्रः॥ काका
 कित्ता॥ उन्मत्तासूरुदया॥ नाखड्गुत्रासुमः॥ रुविषानि॥ गंखवर्धुश्रका
 तुरुविषानि॥ यदाकच्यः॥ सोमानापावः॥ सूरुः॥ नदासर्षपमावः॥ यकंवा ११
 एरुदावातुरुविषानि॥ यदासगकपादानासप्लासुमनारुवत्॥ दुरुधायपेकमीचनदावातु

रुविषानि॥ यदानीफूमदानाथदनाजायनिपातुता॥ उलोकांनादिसर्ववांरुदावातुरुविषानि॥
 यदागगविषाएननिः॥ लीसूरुदंरुवत्॥ स्वर्गसा
 कि॥ नानिः॥ लीयदावृक्ष॥ चरुंरुक्षयत्सुषिक॥ नदार्थयनदावातुरुविषा
 विषानि॥ यदासयचटंपी॥ तामक्रिकाग्रामवाविः॥ नार्द्रययविषावहनदावातुरु
 वातुरुविषानि॥ यदागिर्यापसंपत्तागदरुसुखिनारुवत्॥ कगलंनृत्तमनयूनदावातुरुविः

अ
दि

ममरुपिण्डः पूनस्त्रिभुविशकाय कृणाभातु रेविष्यति॥ उपायभातु निरूपयं सत्त्वानां दिगकात्रं ॥
धर्मकायादिसंयुक्ता धर्मकाः ॥ १३ ॥
गना॥ च न कुर्मं मया ह्यत्वाया
मूनः कर्म॥ ॥ ॥ अथ स्वस
युः प्रमाणादिदं गंयत्वा सर्वत्र नूतनायां सम्यक् साधो विरुन्मूत्यादिना निरूपय रुद्रमन संकल्प

चकस्त्रनिर्धोषणगाथा मरुगवत॥ नवद्वयं विनिर्वाकित धर्मः प्रविदीयत॥ सत्त्वानां पविषाका
या॥ यत्रिनिर्वाकितं निर्दग्धं यत्॥ ॥
विविधां यदां सत्त्वानां दिगका
रुपां वृक्षानां रुगवतां नयादः
प्रमाणादिदं गंयत्वा रुद्र उदय आरुमनाः प्रमृदिनः प्रीति सो मनस्य जातः ॥ ॥ दात्रं यो निपासायः ॥

५७

विडड १ खासु (थ द सा क जू न न व ड न्द्रि ग द ना दि ना ॥ ग म्प नु सर्व व म ना नि सा क ॥ स म न स ल्पा रु द
या द ना य था न था न या गा ॥ ३ न रु या म नी न्द्र ॥ य थः ॥ व स व र्ण यु लो प य त्त्वं १ सं सा त्र
स च्च ह म दा म नी न्द्र ॥ ४ ॥ क थः ॥ व रु न्द्र यु ध सा ग ना ॥ १ ॥ ३ पु जा १ स वि वा ध म्प यु लो प य १ ३
गा ॥ अ न न व ड न्द्रि द्वा व ना दि ना रु व नु व द्वा ॥ ३ य त्र स च्च स ल्पा १ ॥ ग म्प रु व नु ॥
वृ द्ध लं व वां ग वा धा १ प व र्ण यु नु र्धु ध म्प व क्ति न्द्रु क ल्या नि अ चि न्द्रि या नि द ग नु ध म्प ड ग ना दि

गा य ॥ रु न नु क्क ग्ग नि ध म नु द १ खी स म स वा गं क थ द्वा व म्पा दं ॥ य स त्त्व नि द्द्र न्द्रु या य रु म्प १
दी प सं प क्ति ना यि गा ना १ ॥ ग्ग न्द्रु न्द्रु न्द्रि सं प वा दि तां ॥ न मा वृ द्वा य व वा स
रु व न्द्रु ॥ जा नि स म्प १ स ल्पा रु वं नु स च्च जा ती ग ना ॥ ३ जा नि स द्वा का य १ ॥ अ न स म
न १ स ग नं म नी न्द्रु ग्ग न्द्रु ॥ क र्ण व व नं य द्वा व ॥ ३ म न व ड न्द्रि द्वा व ना दि ना ॥
स रं रु वृ द्ध दि स दा स सा ग म्प ॥ वि व र्ण यु नु र्धु ल्पा य क म्प व ल नु क्क ग ल्या नि ग्गु र्धु क्रि या नि ॥ न मा स वा

५१
गो

समपिसर्वपाणिनां याचतुर्गोदं गनपार्थनाय ॥ अन्ननवदं नृदिधावनादिनाः कृत्स्नचिह्नं वां पविः
पत्रयया ॥ यथा ननवकः उपयत्तसत्ता आदोष संयकलितानि गगना ॥ विस्ती
हृत्काथपत्रिभूमिनि वीपलं रथ्यमिह वृत्ता मना ॥ यदृखसत्ता पवनाथ ॥ ११
धावाननवकवृत्तममन वसाक ॥ अन्ननवदं नृदिधावना सर्वचिह्नं वां पविः
मनुइखा ॥ निस्काक्षमपत्रिभूमिं मगवत्तं कृतानि च ॥ कानाकवां रुवेयं वगवत्तं ॥ गवत्तं रुः

म ॥ समन्तादवन्तु मां वृद्धा ॥ कृपाकावत्तं चरुम ॥ अन्नयं पत्रिभूमिं नृदिगदिकृत्तवस्तिः
ना ॥ यच्चमपापकं कर्म कृतं पूर्वसदा वृत्ता ॥ ३
दं दगवत्तायक ॥ मागापि रुनवत्तना वृद्धाना मयजानना ॥ कृमसंवा वृद्धा
रुनयवत्तायं कृतं मया ॥ चमयं मयं मरुनक सवृत्तमदनव ॥ नावृत्तमः
दमरुनवत्तायं कृतं मया ॥ इयिनिर्गंदं वृत्तं वदं रुनायिकम ॥ अनादीनवदं वृत्तयः

५१
५

पापं कुरुं मया ॥ वासवद्विपुत्रासन अहानावृत्तमसा ॥ यापमिरुवसा श्वेव कुं गवा कुरुवृत्तसा ॥ की
जवगिरिवा श्वेव (ग) कुरुवा गवगनवा ॥ अरु कुरु नदाधनय कुरु पापं कुरुं मया ॥
अनायुं जनसं सग्यादीया सास्येदुरुता ॥ आथ दाविददाधनय कुरु पापा ८ क १८
नामया ॥ वासनागमकाः अस्मिं कामानां रुयदः हुता ॥ अनेश्वर्यगुरुनायि यः
रुयाय ८ कतामया ॥ वलविरुव (ग) श्वेव कामका प्रवगनवा ॥ कृत्विपासादिन नायि यरु पापं कुरुं

मया ॥ यातार्थरुअनार्थववमार्थमीषदुरुताविविधकुरुगसंतापेरुपापं कुरुं मया ॥ कायवावसाः
नसं पापं विवधुवविनेचन न ॥ यत्तु नमीदृमं वृपं न सर्वदगयामादं ॥ यरुवृद्धवृ
धमेषुशावकयूरु (थेववा ॥ अ लोत्रवं कुरुं साद्विरुत्सर्वः दगयामादं ॥ यरुत्पुरुकवृद्ध
षुवाधिसत्त्वषुवापून ८ ॥ अ (गोः ववं कुरुं साद्विरुत्सर्वं दग यासादं ॥ सदस्मयति क्रिय ८
सादजानन नमसदा ॥ मातापिरुय (गोववं न सर्वदगयामादं ॥ मस्वत्तनायि वा सत्तामानदपोरुननवा ॥

ॐ

मागद्वेषमादननसर्वद्वयामादं॥पुत्रयित्वादगदिक्कलाकदगवलाडिनान्॥उद्धविष्णामादंस
त्वात्सर्वद्वेषादगदिगि॥स्वात्पथिष्यदगदुर्मांसर्वसः॥त्वात्त्रिभुवनान्॥दगदुर्मा
सिद्धित्वात्सर्वद्वेषानुत्थागक॥ॐकैकसादिसत्त्वमात्रयं॥कल्पकादिया॥यावद्धव्यंदि १८
कत्सर्वमादिकुंद्वेषसागया॥ॐनयंसत्त्वानदेगयंग॥श्रीमान्दगनामिमांसवर्धुप
रामारुमातामसर्वकमाक्यंकवी॥यनेकल्पसदसुवृत्तं पापं सदावृत्तं॥ॐकवलायकागनुसर्ववज्र

मिसंक्रयं॥दगसयिष्यंमांभमांसर्वधूपरामारुमां॥यष्टिनिशुलांनयंसंयानुपायसंक्रयं॥स्वस्था
मिदगदुर्मातादगवत्तावधव॥ॐआरुसयंवृद्धगुः॥लेखयंरुवसागमाक॥न
वसंसावसमद्वेषांगम्रीवंगुः॥ॐसागया॥अविनियंवृद्धगुलो१सर्वद्वेषपूर्वय॥
समाविगनसदसोधावनीरित्र॥विनिये१॥ॐद्विषेवसवा॥ॐद्वेषयंदगवलाकस१वाव
लाकयमांवृद्ध१समन्वादनधरसा॥अत्ययंयकिगुक्ताहुमात्रयहुमांरुयान्॥यहुयायंरुतंपूर्वमया

७

कल्पगतेषु च ॥ नृणां च विना दसु कृत्येषु यादिक ॥ १ ॥ एवमिषा यकसां सततदीनमानः
 सः ॥ यत्र यत्र च विद्यामिनवा ॥ स्मिन्मयनं कचिन् ॥ सर्व ॥ कावृणिकावृद्धाः ॥ सर्वरुः
 यदनादिनाः ॥ अत्ययं परिगृ ॥ द्रुमाचयद्रुमांरुः ॥ यातु ॥ कृगकसांरुनंसं ॥ २०
 एवादयद्रुमथागताः ॥ स्त्रायय ॥ द्रुमां वृद्धाः ॥ कावृणिकावृद्धाः ॥ विमलादके ॥ सर्वयापंद
 गयामियद्रुपूवृकंमया ॥ यच्च द्रुमादिमयापंदसर्वदगयाम्यां ॥ आयत्तासर्वमापयं सर्वद्रुमक

महा ॥ न कदापि नृणां पंयद्रुममद्रुमं ॥ निविधं कायिकं कर्मावाचिकं च ॥ मानसं चियका
 वंचनं सर्वदगयाम्यदं ॥ काय ॥ द्रुमां वृद्धां सनसाचविचि ॥ निरं द्रुमं दगविधं कर्मा ॥
 सर्वदगयाम्यदं ॥ दगावृगसाः ॥ नञि स्वाभिवित्तावृगसा ॥ दग ॥ स्त्रायामिदगद्रुमाः
 चरुवदगवसाकम ॥ यच्च मया ॥ यकं कर्मा अनिष्टरुन ॥ यादकं ॥ नत्तवृन्दगयिष्या
 मिवृद्धां नीयुवतः ॥ स्मिन् ॥ यचायिउमृदीयसिंययान्नासाकवातुषा ॥ कृचनिकृगलंकर्मा नत्तवृज्जन्

थ
न

मादथायत्रयुष्माङ्किंमञ्जकायवादनसाधिवनकृगजमूअनस्य (अयंवाधिमूरुमां॥ हवगतिः
संकटवासवृद्धिनापायमपि यत्कृतंनसदावृणं॥ दग वनसंकटमयनःस्त्रिकः
नसर्वपापंयुक्तिदगयायामिः वाकृत्यापंयेत्समंविन उत्तमसंकटाविविधेषाका २।
मयवाजसंकटरुवसंकटसाः कसंकट॥ मुखकृतंक्रुग सकटचापयविरुसंकटः
पायमिनागमसंकटनचला रुसंकट॥ वागसंकट द्वपसंकट माद नमसंकटवपि॥ दक्षसंकटकास

संकटपूथपाङ्कनसंकटवयिजिनसंकटसंमुखस्त्रिकःरुत्सर्वपापयुक्तिदगयामि॥ वन्दामिवृद्धानः
गुहसागयायमान॥ सुवर्ण वक्ष्मिनेरुसितदिगना न॥ कथाङ्किनानांगवर्धवजामि
मङ्गायनोसचङ्किनोनमामि॥ सुवर्णवर्णकनकाचला रं॥ वेदुयनिर्मलविशुद्धसः
जायनाङ्गागीरुङ्किनीः कालनाकसवृद्धसूर्यो॥ कवृणायुविवमकंनमसाच
कानां॥ सुनिर्मलसूत्रचिवंसूत्रिनाङ्किनां॥ समुद्रसूर्यकनकामलनिःसृताङ्गायिकफसनसा

थ
दि

कलनायिकया॥ पद्मादनं मुनिनिगा कलत्रभिजासं द्वा किं भल्ल कलधवं जलित कदियाङ्ग॥ अन्वङ्ग
नसुत्रवित्रेऽसुविवादिना कथीयं कलङ्कनाकः सत्रभिजासं॥ सन्निवृत्तगमः
मिसूर्यवृत्तिशक॥ वेदु यानि मेलविभालविचि कुरुवृ॥ नासावृत्तेन नरुः २२
ठिकलादिगाङ्गनानाविचिः कुरुसमलं कुरुवृत्तिजासं ॥ त्वंसविश्वसिमदामुनिसूर्यः
कल्पः संसायनपतिनवा सनीयमल्लभाकाकुरुमत्रलगाय कुरुकुरुं गेदः खावृत्तेन मकुम्भिकच

धुवृत्तेन संसायनयसुगुरुसुवृत्तिजासं॥ वन्दामिवृत्तकनका कलाङ्गानसुवृत्तेन वावरासिगा
ङ्गान॥ हलनाकवात्सल्युत्ताः कुरुमानविचिकुरुपानः गुरुत्तेन कुरुङ्गान॥ यथासमद
कलमपुमयं यथा मदीवाल् वृत्तेन न कुरुयायेथेववाकाः
गमननयासं॥ गथेववृत्तस्य गुरुङ्गाननानगकुरुः कुंखलसचसत्ते॥ अनुककः
स्थानिदुस्तुचिकुरुनगवपयं नगुङ्गानिजातुं॥ मदीसंलगासगिनि ४ समागनागं गुरुकुरुवपि

गद्य ज्ञानिनुं ॥ उलं च वा साय मयि यमाहं न गद्य वद्व सगुण गपानं ॥ न गद्य गी सत्त रुव रुस ध्व गुण न व ह
 न कीर्त्तौ गी गुण न गी गी न ल रु (न न ॥ अ गी न न न न न सखि न न ॥ अ न न न न न न न न न
 कर्म लो रु व य व द्वा न चि य न सा क ॥ द (ग य व मी रु गः मादि नाय मा व य स त्वा न्द रु २२
 ४ स्वयी ति गान ॥ अ य य मा वं स व नं स मी नं प व रु य यं गुरु धर्म च कं ॥ नि द्र य क त्या नि अ
 चि न्ति या नि र्ग य स त्वा न रु न न पा नि ना य न य व द्या न मि ना अ नू रु ना य (थे व पूर्व कानां ॥ ह न य रु गाः

निव मय ३४ खान ॥ ग म य वा गां रु थ द्र व मा दान ॥ का कि स थ नि रु थ य वा दं जा नि ग गां जा कि स द सु का ३
 द ४ ॥ अ नू स थ यं स रु नं म नी ल्यं श न्दी य रु थं व नं मू दानं ॥ अ न न वा दं रु ग स न क र्म लो
 स रु य व द्वा दि स दा स मा ग मं वि व रु यं ख लू पा प क र्म च थ य पृ ष्ठा नि गु र्वा क या नि ॥ स ३
 व रु रु गं पृ व म च पा नि नां स च व सा का रु य ग म नू ला क ॥ यः स त्व वि क स न्द्रि य अ रु दी ना ४
 रु सा चि रु ग स न्द्रि य रु रु सां प नं ॥ य वा वि ना द् व ल क्री ण ग ना नि ग न रु ना थ द ग दि गा स ॥ रु स चि रु य

लुचयाविनालदुनरुनुवावाग्यवश्रुदियानि॥ कजाउवोवसमगाडिगावश्वाफानात्रिवेरुयग
 केवसनापयत्ना॥ नसर्विसत्त
 स्यात्रेधायगाडिगावन्ननव
 आयाससदमुयाकलाविसिः
 संगडिगामुयानुगाठनरा॥ वश्वाथमुकावजीविनशावसनागनानिरुयालानुसर्वायसत्तकुरुष

व्यासनागनदृष्टिगादि
 द्वयीडिगाविविधेष्वयस
 कुरुयदावृत्तगाकपोका

मयानुकरुयगके४यनमे४
 नवदगस्तिगानि॥ अन्नकः २४
 ॥ नसर्विसुयंरुचवन्ननरा४

निपीडिगाथनरुनुकलडनपानचिगांअन्नाथपग्यनुविचिगुपांवधिनाथगृधनुमनारुघागां॥ नग्न
 थवमग्निसरुनुविगादवि
 चवसत्ता४सखिनारुवः
 लुसर्वाजिस्त्रूपपासादिः
 ना१ससमदपून्था४सदचिरुमारुधरुवनुकपांवीभासृदंगापठदासुधाषकात्ता४सूवसूपशात्यसपः

दसत्ताथधनानिनरुनु॥
 नु॥ माकस्यचिद्वाचकुड
 कसीमयूपा४अन्नकसूख

पुरुकधनथान्यविचिगुयत्ता४स
 ४खथदत्तासूदगजा४सत्तकुरुवः
 संचिगनिरुधनु॥ मनगाकपा

दिनीलिः सदमुचिगुमानुलुगुसगुनु॥ अत्तं वपानं च गले ववमुं॥ धनं दित्रत्वं सलिमूक्तिरूपं संसुवः
 नृये रुयविचिनुवत्तं॥ मा ३१ खगदाः क्वचित्तकिः ॥ मा येकसत्तः यमिकूलद
 गोसर्वे च गलनु उदाववः ॥ ४१ यरुं कवा लानुयव ॥ मा यक्षाया काचि संय किमनूः
 यासाकसाकषलुगुमनः ॥ सायपलिः ॥ सत्तोरिया ॥ या ४ सदचिनुमानु ४ पू. स्थनरु
 सत्तयत्रिपूययनु॥ गत्तं च मात्तं च विज्ञयनं वा धूपं च पूरुं कसमचपूरुं चिकानरुक्कस्थि वव यनुः

२७

रुद्रनुगसत्तुरुवनुया ॥ कर्चनुयुजांद गसुदिगा सुअविनियंस चैरथागमानां॥ सवाधिसत्तानपिः
 आवकानां धर्मस्य वाधिपः ॥ गिसुस्तिगसानीवांगमीः ॥ सविविवजयनुवनुयुयाः
 किं कवीथिरुला ॥ आसाः ॥ दयनुजिनवाजसुकिं ॥ रुनुवदुहिसदासमागमं॥ उः
 ३४ कलीनादिरुवनुनिः ॥ लंयदुगधर्मधनवान्य ॥ समुद्रकागा ॥ वृयनव (हूनय
 गनकीरा समसं कगा रुनुअनककत्तां॥ सवाभियानिसवगारुवनुसूया ल्पया वाथ विद्रपुतिगाः

थः न स वि वा धाय च नु नि सं ॥ च नु च पा न मि ना सु व दू ॥ प ग्ध नु व द्वा न्द ग सु दि गा सु व त्वा रु मः
 रु रु सु र्वा प वि द्वा न ॥ वे उ र्थ व त्ता स न स त्ति वः धू न ॥ ग्ध नु ध म्मा थ प का ग्धः
 मा ना न ॥ पा पा नि क म्माः नि म या डि ना नि पू का डि न य रु व सं क ८ वू ॥ य पा य क म्मा २३
 रि व ना व रु न न स वि द्वाः य नु च नि व वा नि ला या ४ ॥ य स व स त्वा रु व व न्द न स्मा ४
 सं सा व पा ले द रु व न्द व द्वा ४ ॥ प द्वा क न्द र्थ सि न्द रु व न्द ना न्द म्मा नु ३ ४ ख न्द प द्वा रु व न्द ॥ य चा पि सः

त्वा रु द्वा म्मा धाय य चा पि ज्ज न्द प र्वा क वा रु व ॥ क र्त्त नु ग म्मा वि वि वि न्द प र्वा क त्वा र्थ प र्वा क न्द मा द या मि ॥
 रु न्द व म्मा प र्वा क न्द मा द न न का य न वा चा म न मा डि रु न ॥ प नि व न्द सि दि ४ स रु त्ता
 म मा सु र्वा ग य वा वि वि व ज्ञा न रु वा ॥ या व न्द रु ना षा नि द ग व ता न्द दा व प स त्तः
 रु द्वा म न्द मा न्द न ॥ मा य र्वा वि ता म न व गि ना य व र्थि य क तां उ द रु व न्द या न्द
 च रु रि शा क रि व व रु रि रु रि ॥ प र्वा ४ मि या वा द्वा व रु रि या वा य रु षा क म्मा नि रु नां उ रि रि रि रिः

घटमोत्रमदीवृद्धकगं नीलसूक्तं चिककागनिकागं॥ गंखरुखानसूपाधुतदनेंदमविवाडिनहासि
 ननारुं॥ नीलविगासविम
 लसूक्तिद्वयप्रपरागिरयः
 नवप्रतिवर्तुं शूक्ष्मनिगा
 रिसूवर्तुसूद्वयं नागमूखात्तनपातयतिर्तु॥ अगुधवागविगिधनासागंमृदकसर्वदिनांगसूक्तं॥ नक

द्वभक्तं नीलमिवास्वतः
 नमूखा रं॥ गंखरुमाः
 कलकीधगगीवगाकुम

पुष्पादिरुवां॥ पन्नसूवर्तुविगा
 लनिरोगमूखनार्तुदक्रिणावलि
 नर्तुमभाक्तेलनारुं कांचनकाः

२६

समकनशामसूखायवातसूयामपदक्रिणवर्तुं॥ नीलनिराकलकधुलजगनीलविवाडिनमाससूगी
 यं॥ आरुसमानयरासिः
 कलिनाकं सर्वसूखनचक
 नडुगमिथनसूवसर्वसूः
 वधुकनकनिरासं कांचनकफयरासिकगां नं सोमगगां कसूविमलवर्तुं विवागिनवाडिनसूवि

नगांयं पूडिनसूविदग
 यिगसत्त्वं॥ नवकेगति
 खाधिगसत्त्वं सर्वपगाः

दिगिना कइ४खमननयगाः
 सधनियोगनिषूयनसूवमः
 नकनं अयायगनिषू॥ वधुसू

मलवदनं॥ कवचवृद्धा कवचमलगां सिंहमिवाकमविकमना गां॥ सलिलदस्तपासम्विकवाद्रं मावृणु
 त्रिकसासनगवा॥ व्यामय रुद्र
 रुवप्रतिमनीलुं सर्वपरासि
 कसदसुगमय॥ कपिचनिः
 वाकवसदसुगमं कुरु मनन सदसुगमय॥ पण्डितसुखपूतथ मरुतसूर्य॥ पृथ्वीसदसुगमनात्रिकायं सर्वः

कुरु मंथिकवस्त्रिसूर्यः
 कुरु मननं॥ चन्द्रनिः
 विरुसर्वमदधिकवृद्धप

सद्रुममिवपुनयनं॥ निर्मलगा
 भाकसलसुखवृद्धा संकुरु मनः
 लसविवाचननाथ॥ वृद्धदिः

२८

शुक्लविलंबकमगमं॥ गोमुगकुलु निरुंति कवाद्रं विमलसक्रनमल्लिकदसं दमिकलापमसात्रिकः
 रुतं॥ शस्त्रवृद्धापमथगम
 द्रुनि॥ कपडिनातकवामि
 दानेवर्गुगमनसुखरुमिः
 वकुं॥ यगुलसाधुनिवृत्तिडिनानां सावववायविचिगुभूतकेशाचकडिनसगुलानगकासिडिडा

वृद्धाष्टशस्त्रवृद्धापमथव
 पुष्पमंकाथनवाचमनः
 नापि॥ डिङ्गाभनवपिबूः

रुवनिष्टशस्त्रवृद्धापमथवस्त्रिः
 नययत्न॥ पृथ्वीदानसुगमय
 द्रुगुलानिकलासदसुगमनंदिः

सद्रुगुविशुद्धिः ॥ कसमगकिदिमचिडिनानां चकयुमसादिविस्तवकुं ॥ सच्चसदवकुलाक
 समद्रुगु ॥ सचरुवायकप्रदि नायुधुना नगदमकुगः ॥ यपमाकुं भवचचकयुमासग
 नानां ॥ वरुिउसंमुनमडि नसचकाथनवाचयमः ॥ त्वमभन ॥ एसमयसंचिनयूः ३०
 ल्यरुसागं ननचसत्तयरा रुडिनत्वं चवंकविचन ॥ वपनिवृद्धं चवंकशानिचयः
 एभिधानं ॥ यवचकयुचिमचरुवकजामिप्रनागक कल्पमनका ॥ ॐ हगुरुजीपगमिसवपुंहीदग

दसनरुगु ॥ मि ॐ हगडिनमुमुनिकसलाक चवाजाजामिषूजामिषूकनरुयं ॥ वृद्धगुलानिमनः
 कमकुलाययिचइलरुकल्पस दसुशाप्रमृगु ॥ यवइ ॥ स्वप्रगमापिकयूनदगयिः
 दिवसंगमापि ॥ ३४ स्वसमृद्धि माचयिसत्वायूवायवडि ॥ वयिपात्रमिनारुिशा ॥ वाधि
 मनरुवयययगुलरुयं यगः रुवकुमसाप्रमयथा ॥ ३ ॥ रुवीपदानवियाकरुसन
 सचिडिनानचसमुनिदना ॥ संमुखयगमिगायमूनीलुंयाकचमं चक्रुगुलरुयं ॥ य ॐ सदावकः

दोममपूजो कनकलुं कनकय हास्य वं॥ नउरिदात्रक कनक रुयं वाधिमनूक वया कवर्षं च॥ ययिच सः
 लज्जजन ज्ञाना गवर्षा विदी नवासन गताथा॥ कयूः रुवय ज्ञाना गक सच्चिनाक्ष
 पत्रायल गवर्षा लिथ्या॥ इ४ खः समरु व संकय क र्णाः सर्वसुख सच आक वरुन ३१
 कल्य ज्ञाना गक वाधिव प्रयं॥ य रुक पूर्व काठि गताथा॥ सधुय र्णा सा रु स द गन ना
 ययाप समुदं ग्मा वरु मयं॥ कर्म समुद वि की र्थु मयं॥ कृग समुदा व द्धि यरु मयं॥ पूष्य समुद यय

सु१
 यमसंज्ञान समुद विष्णो वरु मयं॥ विमलज्ञान परा स व वन सच्चिनाक्ष समुद रुवया॥ वाधियु लेः
 रुल वत्त पयु लु द गन स वरु परा स व वन यय
 परा स विष्णो वरु मयं॥ विमलज्ञान परा स व व सधु परा स रु विष्णो नि मयं॥ वाधि
 ल परा स विष्णो वरु मयं॥ विमलज्ञान परा स व व ल काय परा स रु विष्णो नि मयं प
 ल परा स विष्णो वरु मयं॥ सच्चिनाक्ष विगि र्थ रु वयं॥ पूष्य व प्रमं ले मच्चि रु नि
 ल ३४ ख समुद उरु व पिता व॥ सर्वसुख सच सा ग व ना च॥ कल्य मना गक वाधिव प्रयं॥ य रु कयू

३२

वद्विजानमानमानगव्यस्तुंखसुसर्वधर्माः॥यस्यदसुखंइवकारुभनसंक्रपनादगिनगृन्धधर्माः॥
अन्यवृणथेनयददुल्लिखसत्त्वा नकावृन्धवमादः॥यार्थापकागिनंसुखवयदुः
मनयथाहिकानकिदिसवसत्त्वाः॥अयंचकाः॥यायथश्चगृन्धगामे॥संगाम
वोयापमं॥लुदियानि॥गान्यकगामनिवसनिः॥धननविजाननियप्रसयन॥
वाकिल्लियंनपमगयूवावनिः॥गल्लियंगयविचायन॥याल्लियंगयविचिगुदात्रिडिद्वल्लिः॥

यं निरुपमं प्रकृतवर्गं ॥ कायं ह्ययं स गगनाभाव निमग्नं ह्ययं प्रमत्तं विद्याय न च ॥ षष्ठि ह्ययं नीतिः
 वस्य प्रहस्य कस्य कं विषयं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥
 विषयं विद्याय न च ॥ यथा ॥ नमो ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥
 नमो ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥
 यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥

समं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥
 व्यापारं च ॥ असावकं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥
 वृत्तं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥
 यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥
 विधानि द्वे द्वे गामी द्वे द्वे गामी च ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥ यमं ह्ययं प्रकृतवर्गं ॥

निमित्तं वगथं गति सा वगथ ॥ ॐ सो वद द्या क्रयतां व उरु न जा व गथानि लमा व गथ ॥ ॐ सो दि	ज्ञानमध्यस्ति नं वा ॥ गः	त्वायथा पूर्व कृत न क संक्ष
द्वउद्वग मो न रानि ॥ चित्तं च वि	था कृतं पूर्व कृत पवत्याः	शेषानि लं यि कृत यान्तः ३४
दव मन शेष च निष्कया या ॥ यः	क्षु निवा रिते न थ कि मि	कृत ह नं ॥ क्रिय ४ भ गः
सा फः काय शेषा म न पृ वीष पः		
नय थ का ह र न ॥ य सा दि त्वं द व न च रि व सा क रि वा न स ल रू था पू ज सा वा ॥ १० ना दि न क र व लू स		

वैद्यमा ज विद्य न ४ प र य सं र वा थ न न म ह न सं र वा थ न सा त्मा दा र न क या प र नि र वा न सा च र	विद्यमान क दा वि विद्य न	अ विद्य न ४ प र य सं र वा थ ॥
ना दि अ रि अ सं र वा थ ॥ अ	न त्मा त्म या उ क अ विद्य	न वा ॥ सं स्का व वि ह न स ना स
अ विद्य मा ने व म विद्य या च	द ना ॥ रू षु उ या दा न न थ	र व ना जा नि उ वा म व ल ॥ भा क
य पं ष डाय न स ग न थे व व		
उ वा नां ॥ इ द्या नि सं स्का व अ वि नि या नि सं सा व च कृ य थ स्ति ना नि ॥ अ र न सं र न अ सं र वा थ अः		

यानिगथिरुविवाचनंरथादृष्टीगनंरु।सुथआत्मनाहानासिनाकिन्दथक्रमजानं॥स्वचालयंयम्
 थगुन्यरुनंरुगननंरुवाः
 धिगुनंरुदाव॥विगुनंः
 नजमनयवाजयंशुरुं॥
 नायवादाभभवधम्मरुनी॥
 आयुविनाभवधम्मगं
 स्वयविकनंभवधम्मवये॥पवाडिनाभवधम्मगुव॥उदुयिनाभवधम्मवये॥
 वमजमनयवाजयंरुदगिनं
 नविषादंजमनयवाजयंरुदगिनं
 स्वयविकनंभवधम्मवये॥
 स्वयविकनंभवधम्मवये॥

३५

नाभसत्तंरुवसमूदाधियिथिनानिभगीत्थपायपथानि॥क्रमविदादगमयित्त्वपानिना॥यसार्थयुवः
 सदमनककस्याअचिनि
 यायडिगनायदिववि
 ययविधययमाणादभा
 चयादीचयविषयडित्वा॥
 यनारुमांगयियपुं॥सव
 नूवेइयविचिनुवत्ताः
 वृक्ररुवावनस्यमिरु॥सर्वचयवधीवृदंरुयित्वाचगत्तर्वक्रयाक्कन्नजयमा॥चुंवागिक
 त्ववाक्षयदृष्टवृत्तमद्वसोका
 धनदिवत्थमनिमकिद्वयधन
 निदिदितागिसादनायांसर्व

विष्णुयावदाका गंगाचवं ॥ विष्णुका गंगारिताय प्रवर्तनी वज्रसमानिवा ॥ सर्वसत्त्वानि न कश्चि
 नवरुनननये ॥ सर्वगव
 हानन ॥ मदासुत ॥ अनेक
 ॥ विष्णुसूत्रं पुण्यं साकः
 मयेष्ट ॥ ॥ अथ खसूत्रं वला मदावा ॥ धृगवा क्षमदावा जाविद्वर कामदावा

३७

विष्णुया कामदावा उक्त्याया सनरुनकां गंगवीववा लियारुप दक्षिणान् मनु सानिष्टिथियां पः
 निष्ठाया यनरुगवां रुनां अलिः
 पुण्यं साकः ससुगुदवा ॥ ४८ ॥
 चरुथागन सनवागन ॥ ४९ ॥
 यक ॥ ४९ ॥ सच साकया ससुगु ॥ ४९ ॥ विविगु वल्लि ॥ ४९ ॥ सच दवना लासि ॥ ४९ ॥ सच सत्ता नायव मसूखयदाय

क० स च न व क नि र्थ क यानि य म ज क इ ४ ख सं (गा ष क ४ स च रु य य नि ग म न ४ स च य व च क प नि निः		
वरु क ४ इ क्रि क का न्ना व पु ग म	ना या वि का न्ना व पु ना	ग का हान स च य ग ४ पु का
म क ४ य व म गा नि क व ४ (गाः	का या स पु ग म ना वि वि	व ना ना प द व पु ग म यि ना ॥ ३०
उ प उ व ग र स र सु पु ना ग यिः	ता ० म स र उ न रु ग	व न स र पु र ग मा रु म स र ३
दु वा ड स र यं च सू रु रु वा न का नां वि रु व न प ष डि संप का थ मा न स्या वं च रु रु म दा या जा नां स व स		

उ कि ४

प रि वा या तां ॥ प न न व ध र्म य व (ध न ध र्मा म रु व स न व म दि या स र व म दा ड सा वि व रु यि ष नि ॥ ३		
जू सा कं का र्थ व व लं व रु म व	सं उ नि नं रु वि ष नि ॥ ३	रु उ थ यि यं व ल क्री वा सा
कं का र्थ मा दि भ नि ॥ व यं रु ग	व न् व त्वा वा म दा या जा	ना ध र्मि का थ ध र्म वा दि न
थ ध र्म व यं रु द न रु ग व न्	द न ना ग य रु ग न् व स म	व ग वं व म दा व ग म नां वा
जा लं का व यि ष मा म ॥ व यं रु ग व न् व त्वा वा म दा या जा ४ सा र्धं म स्या विं ग नि म दा य रु स ना य नि रिः		

वनकेशयक्रगकसदमे॥ सकनसमिनें सर्वजम्बूदीपं दिव्यनवकृपाविशुद्धनागिकाकमानूषकन
 ववजाकयिष्यामः॥ अत्रकयिष्यामः॥ यविषावयिष्यामः॥ ननरुदुरुदकरुगवत्त
 स्माकंचतुर्भुमदावाजानांसा॥ कयासंनिर्गन्त्यादि॥ ता॥ यकचिरुदकरुगवत्त ३८
 अस्मिंजम्बूदीपविषासाप्यवः॥ वकुलवापदगारविषाः॥ निद्रिद्रिका नाप्रववाना
 नावित्वेवपदवगनेवपदवसदमेवपदवगनसदमेवपदगारविषानि॥ नवयंरुदकरुगवत्तचत्ता

यामदावाजा अस्मसुवर्षुपरासारुमस्यसुवर्षुवाजसानवाश्रसुवर्षुवात्रिणांरिद्रुकांसंवादनं कं
 विष्यामः॥ यदाचमरुदकरुगवत्तधर्मराजकारि
 जानांसंवादनयावृद्धाविषा॥ ननचयव्यवृविषय
 यष्वयमंयसुवर्षुपरासारुः॥ समुद्रवाजंविस्मयः॥ वृषसंयमयुस्मयुगवृविष
 आवप्राप्तिविषयगनानिनाविषान्यपदवगनानिउपदवसदसाध्यपदवगनसदसाधिव

पुगमयिषानि॥यस्य चरुद नरुगव नमन्य वाउस्य विषय मसूनु वाउधन कारि क वाध मरुह
 काउपसंका नारु विषानि॥ • ॥ अयं मनुष्य वाउ ॥ ५॥ मंसवर्षु यरा मारु मसूनु
 नु वाउं शुभ या नु युत्वा च न वां सूनु धात्र का लां रि क
 स आत्र क्रीक यो न व वि वा लं पत्रिय दं पत्रियात्र मं क
 वं च त्वा वा म दा वां जा सु स म नू य वा उ स स च वि ष य ग ना ना व स त्वा ना आ व क्रां क त्रि षा म ४ प त्रि

३२

ना नं पत्रिय दं पत्रियात्र नं भा नि स स्त य लं क त्रि षा म ॥ य दा च र उ द न रु ग व न म नू य वा उ ४ स
 नु धा त्र का लां रि क रि कृ ल्प पा स का पा सि काः नां स च सू र वा प क व लो ४ सू र व
 नां क र्पा न ॥ न व र्यं रु दः न रु ग वं च त्वा वा म दा वा उा सं म नू य वा उं स च वा
 ऊ स ४ स त्क न न वं क त्रि षा मा गु वृ क्क मं क त्रिः षा मा मा नि मं य पू डि मं व सः
 च वि ष य पू च पु गं स नी यं क त्रि षा मा ॥ • वा अ थ ख लू रु ग वां थ शु र्मा म दा वा उा नां सा धू का न

सदाग॥ ० वासाधूसाधूमदावाजा॥ साधूसाधूयुष्माकंमदावाजा॥ यथापिकययंपूर्वदिनरुगाः
 धिकायाजुवयापिककग लमुनावदुवदकादिनि यक्रमकसदमुययुष्मासिनाभ
 मिक्कायधमवादिनध धर्मनदयानांमनूया नांमजलकावयधंयथापि ४०
 नायुर्वदीयवाकुंसर्वसः त्वानादिगचिको॥ सुख मेकुचिको॥ सर्वसत्त्वादिगस
 स्वाध्यागयपुमियत्नासत्त्वादिगयनिधधका॥ सर्वसत्त्वानादिगायसंदावाहियुक्तामययंवेत्तावाः

सदावाजान॥ कषांसनूयावाजसावसुवर्षुपरासाकमसुवर्षुवाजसायुजासंस्कावाहियुक्तानांमाः
 यक्रांकत्रिष्यथयत्रिजार्ण यत्रिगदंयत्रिपात्रनंभा किंस्वसायनंकत्रिष्यन॥ कनय
 वारिश्चतुसदावाजो॥ स वसयत्रिवात्रेवभकेयः यक्रमकसदमेवमीनानागतप
 रूत्यत्नानांवृद्धानांरुग वक्रांधर्मभगीआवक्रि कारुत्रिष्यमिपत्रिपासिनाचप
 त्रिगुदीगाचरुविष्यमि॥ कनयुष्माकंयदुर्धुमदावाजानांसवसयत्रिवावासासनकषांयक्रमकसः

दसाष्टां देवानां देवासूत्रसंघाभसमरित्वृजनाउयाहविष्मि ॥ असूत्राणां च यदा उयाहविष्मि ॥
 धर्ममभसूत्रसर्वपत्रव कपथमकसूत्रवर्षुय लसोरुमससूत्रवृजनासार्थ
 यनसां सूत्रवृजनायकानां रिक्तुलिकुत्थपासकाया सिकानासावकां विष्मथयः
 त्रिगदं यत्रिपासनं गानि स्वसंयनकविष्म ॥ ७० ॥ अथ वेगवला मदा
 बाजा वृत्तवाक्षमदाबाजावि वृत्तका मदा बाजावि वृत्तपा कामदाबाजा उच्छायासनसूत्रकां गा

४१

निरीववानि ४ पावृषदक्रिष्णानि जान्मसुलानि पृथिव्यां पृथिव्या यनरुगवां मना उरिं पृथ
 मरुगवन्मनदवावर्क ॥ ७१ ॥ अयं रुद ॥ रुग वन्मरुवर्षुपृथ साकमसूत्र
 नुवाजा १ नागनधनियरुः गामनगवनिगमजन पदवाद्यवाउवाजी वृषवः
 विष्मि ॥ यसायसमनूषाः वाउसाविषयमनूपा फारुविष्मि ॥ कथिरुदः
 नरुगवन्मनूषावाजारुवन् यनामनदधनुसमयनवाउगा रुदवाउर्त्तका वयन् ॥ असूत्रसूत्रवर्षु

पुरासाकमस्यसुखवाउसा ॥ नारुवंसाधसुखवाउकाहिकुहिकुधुपासकायामिका ॥ ४८
 कुर्यादुक्कुर्यान्मानयत्युक्थसककसमिनेसुव ॥ ४९
 शुभयान् ॥ जभनधमभुवः ॥ ५०
 मदावाजांमवसपविवावा ॥ ५१
 वासदगोउसाविवद्वयन् ॥ मदानंवीर्यश्चरुमववसंवासाकंकायपूकठ ॥ ५२
 थियथल श्रीथासाकं

विवद्वयन् ॥ कनवयंरुदककगवंथरागामदावाजा ॥ ५३
 हिःकायात्सरावेवकदि ॥ ५४
 उधानिपूसंयमिषाम ॥ ५५
 किरुपांयमनूपावाजाना ॥ ५६
 अयिरुजावावकां कलिषाम ॥ ५७
 यविगलंयविशदंयविपाजनंदधुयविदावंगमुपविदावंगानिचः

सयनं च कविषाम् ४० कर्षां च वक्राणां कर्षां च विषया सौ च वक्रां कविषाम् ४१ यत्रि
 नैष विषयं यत्रिषा नर्नदं ६० यत्रि दार्जं ससुप विदार्जं ६१ गान्ति ससयलं कविषाम् ४२
 च विषयं सवृत्तं पायासं ६२ यत्रि विमाचयिषाम् ४३ वक्राणि च यत्रि विवर्तयिषा ४३
 म४ य४ कश्चिन्मम नृपय ६३ अस्यासा सवर्तुपरासाः ६४ रुमस्य सवर्तुपरासाः ६५
 नयि ४५ पूजयि ४६ ॥ अन्त्य ४ सामन्तक ४७ पुनिग ४८ वाडा ४९ व ॥ यदा च रुदन्त रुगवं रुमसामन्तक

सयकिगशा वा ४८ नर्वचिर्क मस्यायं रुसादं च रुवं (गनं वल काथन सार्द्धं ससयविषयमूयसं कसयंः
 विनागयि ४९ ॥ ० ॥ रुनखल ४९ पूनरुदन्त रुगवं कास ५० नगनसमथना ससवर्तु
 परासा रुमस्य सवर्तुपरासा ५१ रुजा नृगथन रुमसा ५२ सनक रुमपकिग रुजा
 सान्ते वा ४९ रुसादं सगा मा ५३ रुविषयि ५४ रुविषयि ५५ रुविषयि ५६ रुविषयि ५७ रुविषयि ५८ रुविषयि ५९ रुविषयि ६०
 रुविषयि ६१ रुविषयि ६२ रुविषयि ६३ रुविषयि ६४ रुविषयि ६५ रुविषयि ६६ रुविषयि ६७ रुविषयि ६८ रुविषयि ६९ रुविषयि ७०

कृपगगानि विषयपाइरुनानि रुविषयानि ॥ यदा चरुद नरुगवन्तु स्यासामनक स्यापनिगकुवाउ
 स्यासपयगगानि चवंवृपादि नानापडवगगानि नाः नाया कृपगगानि रुवयू॥
 सचरुद नरुगवं सामनकः यतिगकुवाउ श्रुतु वंगि नौ सनां याउ यित्वा यववे ४४
 कुगमनाय सविषया लिङ्काः नारुवन् ॥ यथायं सव धुयुग सा रुम ४ सूरुनुवा
 नारुवन् ॥ स्यापनिगकुवाउ ४ सार्द्धं चरुदं गवन्तु कोयनरुं विषयमपसंकु मिठुका भारुवन् विनामि

दुका भारुवन् ॥ कवयंरुद नरुगवं चला गामदा वाउ ४ सवलय विवा ४॥ अन्न केयकू वाकू सगम सद
 सैवद (ग) ना सारुवे रुगु पसंकु मिष्यास ४॥ कं यव चकू माध्मनं सा गपनि पत्नं ग
 (थेव) यति निवरु यिष्या माः नानाया कृपगगानि ना यसंद विष्या मा विद्यां श्रु कयि
 याम ४॥ यथा नरुपत्रयकं न गन्तु निरु विषय उप संका मिठुं ॥ कू ४ पून विनामं
 क विषयानि ॥ ॐ ॥ अथरुगवं रुपां चरुधु मिदा वाउ नां सावू कायमदा ॥ ॐ ॥ सावू सावू मदा

नाजा ४ सा वृख लूयून यूषा कं मदा नाजानां ययुयमसा अरुं रवा काटी नियुमभन सदससमदानी
 नाया अनुरु नाया ४॥ सः स्व सं वा (ध) रे थै य रुषा कषां मनुष्य नाजाना मस्य च स
 वर्तुय रु सा रु म स्य सुरु नु वा उ सा (ध) रु रु मा यक्रां क विषा थ प विना भं प वि ४५
 ग्रहं प वि या स नं गानि स्व स्य य नं क विषा थ गानि च ना उ क सा नि च गानि च न
 म ना सि गानि च वा द्वा नि गानि च विषया नि जा व रु थि थ प वि ना भं प वि ग्रहं प वि या स नं द धु प

विदा व भ सु य विदा वं गानि स्व स्य य नं क विषा थ गानि च विषया नि सर्व रु था प द वा प स (र्ग) या
 या सं स ४ प वि सा च यिषा थ प व च का नि च नि वः क विषा थ स च उ म्बु दी य ग ना
 नां वा स्य मनुष्य वा उ स्यः अ क सद या रु धु न याः वि य द या वि वा द या डी स र्ग मा
 प य थ य थ च रु यूषा कं च रु धुं म दा ना जानां स व स य वि वा ना नां अ स्मिं उ म्बु
 दी प रु प च रु धुं न ग व सद स पु ना नि च रु व भो कि न ग व सद सा नि क य रु य विषय च रि च म य रु न च

小

स्वयं स्वयं विषयश्च लिखन् ॥ न च शुद्धिं न दायाजानां सवत्सपविवाया
 लां अयं ऊर्ध्वदीपः ॥ स्त्री गुरुः
 विषयि सुखि क्रय प्रमदी
 यश्च वदन् न समाकीर्तु
 यमि ॥ अतु मा मादं मा सः
 समस्तानि च सच्चानि
 अदा वा नुं गहन क्रय च नु
 सूर्याश्च समाग्र दिव्यनि ॥
 नियमि विनि सर्व ऊर्ध्वदीप गगानि च सत्त्वानि सर्व धन धान्य समृद्धानि
 रुविषयि मदा रागानि

वामत्सत्रातिचरुविषयनियविस्वागवनिदगकगसकर्मपथसमन्वागगानिचरुविषयनि॥यद्रूयः
 यसासूगमोसुगजाकउय पत्त्यनदवउवनानिचा कीर्तुनिरुविषयनिदवदव
 पुरुषा॥यत्कथितसदावा ऊरुवन॥यः॥लूमस्य सवर्तुपदासाकसस्यसुवन्द ४१
 वाऊसासाकवगमा नयिगावेपूऊयिगावः कषांचसुवन्दवावकागांरि
 कृतिरूथपासकापासिकानासोत्तर्यसत्कृपाङ्कुरकृपान्मानयत्पूऊयगा॥यूष्माकंचरुर्लूमः

दावाऊनांसवलयविवावासासनकषांचयकगकसदसासासनकम्पार्थायसककससिगंवर्मीसूव
 र्गुपदासाकसंसुगवाऊ दुंगृष्टन॥सूजनवर्मा यवक्षसलिसादकनयूष्माकः
 मगान्यासरावानिसन पयगा॥सेदमोऊसायूष्माकमगानिगवीवाभिविव
 दयगा॥मदचयूष्माकं वीर्षिरेखासववर्तच वयूषं४संऊनयगा॥कऊयथि
 ययसम्प्रीययूष्माकंविवदयगा॥ ३६॥ कनचसन्पवाऊनसमगावसूनस्तेथागकस्या

सूक्तं

हस्तः संमत्तं वदन्त्यादि त्वा मदा विपुल विस्तीर्ण पूजा कृत्वा रु विष्णु नि ॥ ० ॥ न न च मनूष्या ऊ ना नी
ना ना ग मे य स्य त्वा नां वृद्धा ना मन क र्वा न था ग ना ना
चिं न्या स द नी वि स्ती र्ण स र्वा य क र्वा ले पू जा कृ त्वा रु वि
म द न्या व क्ता कृ त्वा रु वि ष्य ः नि ॥ न न च र स्य ग्रा ह्य न
नंद धु प वि द्वा त्रं भ र्गु प वि द्वा त्रं ग नि स्व स्य य नं कृ त्वा रु वि ष्य नि ॥ जू य म द्वा ष्या य ग्रा ऊ पू ज्वा नां च स र्वा
का टि नि य न ग न स द्वा ना ना म
ष्य नि ॥ न न च र स्य म नू ष्या ऊ स्य
क्रां य त्रि डा नं य त्रि य दं प वि षा न

४८

न ४ पू व स्य च ग्रा ऊ कृ त्वा रु वि ष्य नि य त्रि डा नं य त्रि य दं प वि षा न नं ग नि स्व
स्व य नं कृ त्वा रु वि ष्य नि ॥ वा ऊ कृ त्वा नि वा सि न्य थ स र्वा
सू र्य सो मन स म न्या ग ना रु वि ना वा त्र नि म नू रु वि ः
व वि ष या नी वा वा कृ त्वा नि रु वि ष्य नि य त्रि डा चि ता
नि च रु वि ष्य नि स र्वा य व च कान व म दि ता नि चानू य स र्ग नि चानू या या सा नि च नि ॥ ५७ ॥ च व मू क

द व ना ऊ जा व रु वा य वि रु न
ष्य नि ॥ ना नि च वा रु नि ना नि
वा नू र्णी ठि ना नि वा क रु का ः

५२

मोक्षकस्य हि क्रात्रनिकगसु संज्ञा उपादयिष्या ॥ मनमन्थनाजननस्मिंका स समथ ज्ञानमदिषीवाः
ऊर्णशायना ऊर्द्धदिनप्रथ सर्वान्क ४ पूत्रगलधपिय दिना रणी यक्रिया ४ पिय वव
नेथा गमदिषीवा ऊर्णशायना ऊर्द्धदिन प्रसर्वान्क ४ पूत्रः गला था सापयिष्या ४ नाना वि
विना श्रव मंगम लयूजा आ ह्यापयिष्या ॥ अचिनिः या अरुता या पीया आत्मानं स
कर्णयिष्या ॥ अचिन नपी नि सुखन सुखापयिष्यां सुखन्दिय भवतु विनयं सुखन्दिय भवतु विनयं ॥ ३

रुविषयि॥ अन्नकषां यदिथा दावाभां मानूषकानां वा ऊर्गुगमसदृशानां सारुविषयि॥ सर्वज्जातिषु
 मदेवार्थपाकारुविषयि॥ दीर्घायुष्यथरुविषयिः चित्रजीवीचरुविषयि॥ पक्षिण
 तवांश्चादयवचनश्रयगस्त्रीः चसूचिभासकीरिश्चपसं मनीयथरुविषयिसदवमान ५१
 वासूत्रसाकससूखिनश्चरु विषयि॥ उदायादावाभां वदियमानूषकाभां सुखानां सारु
 रुविषयि॥ सदावसथमदानयवसवगवावीचरिद्रूपपासादिकादगनीयपत्रमयाथुरुवसूयचरुः

यासमन्वागमधरुविषयि॥ सर्वज्जातिषुगथागमसमवधानगमारुविषयि॥ सर्वज्ञानमिश्रानिवयः
 मिलयान॥ अथविमिनयुः विषयि॥ ॐ मानावन्त्रयानिमः
 दावाजोयुलानसंसानिसंय विषयि॥ ॐ मानावन्त्रयानिमः
 साधर्मरुगमकस्यानिकभाः विषयि॥ ॐ मानावन्त्रयानिमः
 गायमूनिरुथागमाइदन्ताम्यसूवृद्धदवाऊकसखजनमनूगाविषयि॥ सर्वसाकविषयनीकं वसथवः

र्शयामि॥ अथादमननधर्मवत्तनवेवर्कि कारुविद्यामनरुवायां सम्यक्सात्मे॥ अथमयागुथा
 गनकाटिनियुगगनसदसाः॥ अथागिगानिरुविषयि॥ अथमयागीतानगनपुण्यत्वा
 नांरुगवतामचिन्तामरुतीः॥ विपूसाविरुर्गुपूजादः॥ नांरुविषयि॥ अथममनवकन ७२
 किनिरुगानियमसाकडः॥ खन्यनगः समुच्चिन्नानि॥ रुविषयि॥ अथमयागनकानां वः
 क्षुद्राजलकाटिनियुगगनसदसात्तरावपनिसयानां कगलमूलवीजान्यववृफानिरुविषयि॥ अथम

यानकानां भवत्तकाटिनियुगगनसदसात्तरावपनिसयानां कगलमूलवीजान्यववृफानिरुविषयि॥ अथमः
 यानकानिचववर्किवाडका॥ टिनियुगगनसदसात्तरा॥ ववीजान्यवसायितानिरुविषय
 नि॥ अथमयागनकानिसः॥ त्रकाटिनियुगगनसदः॥ मासिसंसायायविभाचिगानिरु
 विषयि॥ अथमयाचिन्ताम॥ विपूसाविरुर्गुपविमिन॥ पृथक्चः यविगृहीतारुविषय
 नि॥ अथममसचानिः ४ पूवणसदसावक्रादुनांरुविषयि॥ अथममवाडकसः अचिन्तामसमविगिष्टानरु

५३

[illegible]

या ॥ ८० ॥ नानागन्धधूपसमाकृताभिसंस्काराणि ॥ कनककलवमस्तु कनकसमजादगस्तु दिक्पुत्रकपुर्ग
 गानदीवालूकापमवृद्धकृतः काठिनियुगगनसदसपुत्र नक्षत्रांगकनदीवालूकाः
 समानान्धधूपसमाकृताभिसंस्काराणि ॥ कनकवालूका कृतानिनानागन्धधूपसमा
 कृतसदसपुत्रकानानागन्धधूपसमाकृतानिनानागन्धधूपसमाकृतानिनानागन्धधूपसमाकृतानि
 गानदीवालूका ॥ सवर्गवर्गमयावरासायादरुविषयि ॥ कनकावरासनागन्धधूपसमाकृतानिनानागन्धधूपसमाकृतानि

५४

समानिवृद्धकृतकाठिनियुगगनसदसान्वरासितानिरुविषयि ॥ समननत्रयादरुतानिचमदाः
 वाडाः ॥ नानावर्गानिषागिदा यानिनानिजूनकानिः गंगानदीवालूकासमानिवृद्ध
 कृतकाठिनियुगगनसदसाः निपुनिष्ठितारुथागताः संवधर्मरुजकंसमन्वागः
 नाकविषयि ॥ ६० ॥ साधका वागिचपदासनिसाध साधसत्यवृषसाधपूजस्तुः
 सत्यवृषयस्तुमिमभवपंगम्रीवभवंगम्रीवार्थभवंगम्रीवावरासमवसचिन्तागुहाधर्मसमन्वाग

मंसुवर्धुयराशारुमंसुवर्धुवाङ्गविस्तुप्रमसंपुकागयिगुरुकास॥ नयेगसत्ता० संवर्धुमलसूजन
 समन्वागगारुविष्णुनि॥ य०० मंसुवर्धुयराशारुमंसु
 निष्पापराकुदीयानिष्पावयि यानिस्त्रिष्यनिस्त्रि
 यवाप्यानिस्त्रिष्यनिस्त्रिष्यदि संयुकागयिष्णुनिष्यदि
 स्वाध्यायिष्णुनिष्पापानिष्पापनिस्त्रिष्यविष्णुनि॥ ० ॥ गुरुसद्वर्धु॥ ७ ॥ सद्वर्धुवर्धुनासपूवर्धुसंवर्धु
 म

७५

पुराशारुमंसुवर्धुवाङ्गविस्तुप्रमसंपुकागयिगुरुकास॥ नयेगसत्ता० संवर्धुमलसूजन
 अनुरुवायासमयंवा००० ॥ अथखलुगानिसमन्वा
 समपूवर्धुवर्धुकादिनियुक्त गुरुसद्वर्धुअनकानि
 माहिस्त्रिष्यनिस्त्रिष्यनिस्त्रिष्यदि वृषनिस्त्रिष्यनिस्त्रिष्यदि
 वाचकस्त्रिष्यनिस्त्रिष्यनिस्त्रिष्यदि वाचकस्त्रिष्यनिस्त्रिष्यदि
 दग्गसूदिद्वुगंगानदिवाल्काः
 कथागुरुकादिनियुक्तगुरुदः
 सनननसमयनेकपदनेकः
 उपसंकेमिष्णुसिस्त्रिष्यनि

यथानागमवनिवाधिमर्त्युपदगयिष्यसित्वंसत्यवृषवाधिमर्त्युववागगनादमवाकासमपविष्टः
 सचेनैजाकूपनिविगिष्टः
 नान्यविष्टानानिअविष्टिः
 कप्रिष्यसित्वंसत्यवृषवाः
 दामादमुजाकवाउन्ः॥पवाउयिष्यसित्वंसत्यवृषदुमवाउमसापविष्टः॥कविमवृषपवमविः

निमवासत्वांमिकासाः
 नान्यनकादिदृष्टवका
 विमर्त्यु॥पविगयिष्यमि

नवालिचननपथवमवजाका
 टिनियूनगनसदुमानिसमसं
 त्वंसत्यवृषसत्वालिसादुमम

७३

एतान्दगर्ननानाविष्टमवृषमविनामावसेनां॥अरिसंठात्तसित्वंसत्यवृषवाधिमर्त्युववागगना
 इत्यमपुगाकविदजलुग
 वृषाथसावदुवजासना
 नरुवधमवर्कं॥पवाद
 सित्वंसत्यवृषसित्वंसत्यवृषानरुवधमवर्कं॥४कयिष्यसित्वंसत्यवृषमदाधमवर्कं॥पदानयि

श्रीवमनरुवांसमाकं
 पविष्टः॥सवजिनादिमं
 निष्यसित्वंसत्यवृषानः

भावि॥पवरुयिष्यसित्वंसत्यः
 सुमंपवमगहृपंदादगाकावम
 रुवंधमवर्कवायं॥आपूवयिष्य

षसित्वंसत्पूषानूरुवां धमात्कां यवर्षयि षसित्वंसत्पूषानूरुवं सदा वर्मवर्षय वा ऊयि षसित्वं
 सत्पूषानकानिक्रमग नमदमाभियगात्रयि ष सि ४ त्वंसत्पूषानकानिसत्त्वका
 ढिनियुगगनसदमाभिस रीमात्तदा रुयममदा न ॥ यत्रिमात्रयि षसित्वंसत्पू ५१
 वानकानिसत्त्वकाढिनियु नगनसदमाभिसंसावच कोत् ॥ आवागयि षसित्वंसत्पू
 पूषानकानिनथागनकाढिनियुगगनसदमाभिनथावर्मजं प एङ्गदया ॥ यत्रवेवा सोमनूषवाः

उ४पूषारिसंस्कायनकगलारिसंस्कायनचननेव चालाखावनचदष्ट धामिकलाविं ननमदमात्राशेथर्योः
 तांविद्विष्यति ॥ दष्ट धामिकः धाविन्ननमदमात्राचवाठ कउसासमन्वागकारुविष्य
 ति ॥ शियाचनउसाचनश्वाचाः संकृतारुविष्यति ॥ सर्व परार्थिकाश्च सर्वगवथः
 सद्वर्मनसूनिगृहीतारुविष्य ति ॥ चवमूकचत्वाधामः दावाजारुगवकरीनदवाच
 न् ॥ ६० ॥ य४ शिरुदनरुगवन्मनूषवाजारुयन् ॥ साधनने वंययलधमो गोवधलमंसूवर्षुपरासा

रुमंसुखं नु वा ऊं शृ मया न॥ नाथ सुखं नु वा व का हि कृ हि कृ ध्या म का पा सि का ४ स त्क या ऊं व कृ या ना
 नय त्पु उ त्थ न॥ अ स्मा कं च दु र्भु म दा वा जा ना म थ य न दा ऊ क र्ज स (ग) धि र्ग (ग) ध य न॥
 ना ना ग (ग) द क सं सि कं कृ या न॥ न श्र ध र्मा श व द म स्मा हि श्रु हि श्रु म दा वा ऊ ४ सा द्दः ५७
 सा वा व नं शृ म या दा स ना इ थ ये स च व ना व कि श्रि सार्ग क र्ज प र्ग म द या न॥ स म न
 न व नि व धु स च रु द न रु ग वं रु स हि क्रा ध र्मा स न ग न स॥ न न म नू या वा ऊ ना स्मा कं च दु र्भु मि दा वा ३

जाना म थ य ना ना ग न्ध य यि न वा स द भू पि र व न रु द न रु ग वं रु स स व धु य हा सा रु न स स ग न्ध वा
 कृ स पू जा थ य ना ना ग (ग) वृ ना ना ग न्ध य व ना नि थ व नि॥ न मि स्र व कृ र्ज व म
 रु र्ति इ स्मा कं च दु र्भु म दा वा जा नां स क स क रु व न ग ना न्य य न वी कृ ना ना ग न्ध
 धू प न ना कृ ग नि स रु स नि॥ उ दा वां थ ग न्ध ना वा स नि॥ स व धु व धु म या थ वा व
 हा सा ४ पा द रु वि ष नि॥ न न वा व हा म ना स्मा कं रु व ना ना व हा सि ना नि रु वि ष नि॥ व कृ व ४ स दा व न ४

गक सच दवाना मिदु व सव सखा थ मदा दवा दवा या थ मदा दवा ॥ श्रिय थ मदा दवा ॥ सं उ य स मदा
 यक्रम नाप क व द्वा विंग मी नी वः सदा यक्रम नापो नी नां स दश व स च द व पू स च
 ऊपा हो थ मदा यक्रम नाप क मा निरुद स च मदा यक्रम नाप क दी नी सा थ पंच प नाय क दी नी सा थ पंच प
 रुग म य वि वा वा या ॥ अ न व नः क स च ना ग वा ऊ स च न वं रु द न रु ग वं स क सः
 क रु ग व न ग मा नां न न क रु स व मू द रु ना प र्थ न नी कृ ना ना ग न्ध वृ प त ना कृ ना मि सं स्म स्य नि ॥ ३ ॥

५१८

दावा थ ना ना ग न्ध वृ प त ना कृ ना मि सं स्म स्य नि ॥ ३ ॥ क या वा व द्वा स या स च रु व ना न्यः
 व रु मि ना रु वि ष नि ॥ ३ ॥ ॥ च व म क रु ग वां थ रु वा म हा वा जा भ क द वा च न ॥ ३ ॥
 न क व सं यू षा कं च रु रु मि द्वा वा जा नां स क स क रु व नः ग ना ना मृ प र्थ न नी कृ ना ना नि ना
 ना ग न्ध वृ प त ना कृ ना मि सं स्म स्य नि ॥ ३ ॥ ॥ क रु स द रु ॥ स रु प वृ पि ना चः
 म दा वा जा रु न म नू षा वा ज न ना ना ग न्ध वृ प त ना कृ ना मि सं स्म स्य नि ॥ ३ ॥

लो वधूय कट कट संय वि गृही गानाना गन्धधूप वगानि ध्वनि ॥ गन क्रम सव मद्रु रुन स च स्यांति
 साद सुमदा साद साय साकः
 कवा उमदा यक वा उनीप
 सुमदा वा उका यिका नीद
 संज्ञाना संज्ञाय गनाय गानां स च सुव न पूरि साद सुमदा साद सुसा क वा सुका टि ग न पूरु य लिं ग वृ द

३०

वनिका यषू स च सी च द वना गन्ध स्रव ग वृ उ कि त्र म दा व ग नां य रु व न ग ना नां वा प र्थ न नी क्र ग
 गानि नाना गन्ध धूप लना रुः
 सुव सुमदा वा व रु सा ४ पा द
 रु वि ष नि ॥ ८७ ॥ च व म
 द न रु ग व न्म व धु प रु सा रु म स्य सु ग न्द वा उ सा ना न्य व वृ पा नि द ध मि का नि सा व प वा उ यि षा मि का नि

वगुमानि संयथा मानस्य वृद्धसहसा वयस्कृगसससस्य मनूष्य वा ऊष्णानूकस्या चापविमिनपत्थस्तुः
 पत्रियदंसस्य मानास्तु व यं रुदन्त रुगवन्वत्वाया मदा वा जा ४ सवपविवा वा अश्वके
 यक्रगगसदमे १ साद्वं स्वरु वनगगा नानागन्धपूयस ताकृगासं आदितासमाना अदृष्टे ३१
 वास्तु रावेयनकस्य मनूष्य वा ऊष्णपगनसंस्कात्रः कूटसू (भाधिरं नाना गन्धकस
 सि कं नाना संका संकं वा ऊकृलं नाय संक मिष्या भावमिगवत्ता यव द्वा वसदाय नि ४ भवत्थ दवानामि

न्यसत्रस्वगीचमदादवीथीथमदादवीदृढायमदाएथिवीदवना संकं थमदायक्रसनाय निव द्वा वि
 गतिमदायक्रसनाय कय थमदश्च वदवपू गाव ऊपा नि थगुय काधिय निमो निः
 थमयुक्रसनाय नि ४ दावी नीचपंचपूगनपविवा वा अन्नवगदथना गवा ऊ ४ सा ग
 वथना वा वा ऊ ११ अन्नका निवदवकाटि नियुगन गसदसा नि अदृष्टो वास्तु रावेय
 ननस्य मनूष्य वा ऊ स्य यगनं नाना संका वसमलंकं वा ऊ कृलं यगन स वमो राग कस्य रि ४ पूषा रि ४

सुयावत्तं गोवृद्धी नं नाना संकाव सम संकनं धर्मा स न प ह फं न ग व र्म सु व ला य न व यं रु द न रुः
 ग वं श च्चा धा म दा वा जा अ न के य क्र म न स द से वः शि थ स र्वे ४ सा र्द्ध स म ग्रा रु वि षा म
 न स म नू षा वा उ स क ला ल मि उ स दा य क स क ला ल मि उ स पा प क स न रू व स म दा व सा
 दा व दा रु ४॥ अ न न ध र्मा रुः न व स न सं ग र्थि ना ४ स नः ग स म नू षा वा उ सा व सां क विः
 व्या मः प वि ना ले प वि य दं प वि या ल नं ग नि स स य नं क वि षा म ४॥ न स वा उ क ल स य न ग व स व वि ष य

३२

स्य व व क्रां क वि षा म ४॥ प वि ना ले प वि य दं प वि या ल नं ग नि स स य नं क वि षा म ४ न व वि ष यं स र्वो प रु था प
 स र्गो पा या म स ४ प वि भाः व वि षा म ४ कि ॥ ७ ॥ य ४ क थि रु द न रु न व न नू षा वाः
 डा रु य श स व म नू षा वा उ स वि ष य य ४ स व लु प रु सा रु म स स रू रु द वा उ स य व य रु ॥
 य दा वा सो रु द न रु ग व न नू षा वा उ ४ स व लु प रु सा रु म स स रू रु द वा उ स वा व कीः
 रि रु रि रु लु पा ग का पा सि का न स क र्था म मा न य न पू उ य द स्या र्क च रु रुं स दा वा जा ना म न का नि य रु

कादिनिवृत्तगगनसदमान्यभकानिधर्मशवलेनापुननधमामरुवसननसंकर्षयत्तयगिमानयदिमानि		
दिव्यात्मरुयानिमदभाः	उसानविवर्द्धयत्तवाः	साकंदीर्यवस्त्रामचवलंचसंडः
नयकुरुयथियथयसमं	वासाकंकायधनविवः	द्वयत्तनपिरुदन्वयंरुगवंधेत्ता ३३
धामदवाजाः सवसपवि	वावापूभकेयकैकादिनि	युगगगनसदसुसुसुवविषयवक्रा
कविष्ठाभारुदन्वगवविषयमसाकंडयंकुरुसवविषयवासिनादोः गवनासंविषंडयन्निदवः		

नाथरुदन्वगवनंविषयसूयन्ने॥ नरुवविषयनानाविष्ठाविषयसावारुविषयनि॥ दारुनानिच		
वाजसंक्रान्तिरुविषयनिसर्व	विषयगगानिचसत्ताः	निकसदजानानिरुविषयनि
रुधुनजानानिविगृहीतानिवा	दसायत्तानि॥ नानादि	वाथयदवागविषयपाइ
रुविषयनि॥ नानादिगुणः ४	गनात्वाकापाना ४ पदः	रुविषयनिगहनक्रुगामिच
पवस्यप्रभविबूधानिरुविषयनिसूर्ययमिबूयकानिससात्यादयिषानिचधुगदाथरुविषयनि॥ सूर्य		

यदायमननसमिगं गं नानवगमोसूर्यचन्दनसो नादयथगमोर विषयः ॥ ३ ॥ कौलागसदृशवर्तुनिपवित्र
 गकातिगमनानवकासनकार्यं यादृरविषयिनि ॥ एथिवी कपाथरविषयनिकृपाथः
 एथिवीगमा संक्रयं न संक्रयं एतन्निकृतिविषयवामा थवासां नि ॥ विषयवर्षाथर ३५
 विषयनिद्रितिकृकानावथसः वेथयरविषयिनि ॥ पत्र वजागिवरद्विषयविनम्ब
 नि ॥ आयासवद्रुंरविषयिनि ॥ नयंसमाकं रुदनरुगवं थतुर्धुं सदावाजानां सवलपविवागामास

नकषांरयक्रगमसदृमाभीविषयवासिनांचदवनागा नांरद्विषयमूयकनरुतुविषयं सान्धवः
 पूषागिनानाविषयनूपदः वगमानिरुविषयिनिउ पदवसदृमानिच ॥ यः कश्चि रु
 दनरुगवन्नानूषावाजा रुवन् ॥ यज्जात्मनामद नीयक्रां कुरुकामारुवन् ॥ विषय
 यनानाविषयनिवाउसीः खान्यनूरुविषुकाभाः रुवन् ॥ सर्वसूखसमर्थिनां नचिः
 यक्षवाजसंकुरुकामारुवन् ॥ स वविषयवासिनांचसत्त्वा नांरुखाययिषुकामारुवन् सर्वपचकानि

चपवाऊयिरुकाभारुधनु॥सर्वसखनविषयंपत्रिपात्रयिरुकाभारुधनु॥वर्मनवाऊत्वंकात्रयिरु
 काभारुधनु॥सर्वविषयंच
 रुधनु॥ननचरुदन्तरुग
 नय॥युत्वाचनारुत्रका
 व्या॥मानयिरुका॥यूऊयिनया॥वर्यंचत्तात्रामदावाऊ॥सचसपत्रिवावाअभनेववर्मयवनक

सचेरुयापुदवापसर्गा
 वस्मनयवाऊनायंसूव
 रिक्कुरिक्कुर्यपासका

पायाभस॥यत्रिभात्रयिरुकाभा
 रुयुकाभारुम॥सूकुचवाऊ॥य
 यासिका॥सूकुरुया॥युवकुरुः

उ३

मलमूलोपचयनाभनवर्मासूकवसनसंनययिनया॥सूसाकंचमानिदिव्यात्मरानिमदगाऊसाविवर्द्ध
 रुयानि॥...॥नकस्य
 यंसूवर्गुपुलाशारुमसूवन्द
 किकसाकारुत्रनवनानावि
 नाविधानिगात्रानिउपदगिगानि॥यावन्निचनानाविले॥यंचारिहैरुषिरिहोकि कलारु वा निचसः

दगा॥...॥यहूक
 वाऊ॥यमनया॥याव
 भानिगात्रानिउपगिगिना

रुगवंरुनमनूयावाऊनावसुम
 निरुदन्तरुगर्ववक्कुरुल्लो
 नि॥यावन्निचनानाविले॥यंचारिहैरुषिरिहोकि कलारु वा निचसः

ॐ
॥
॥

त्वानामथायगास्तथापदगिगानि॥ रुदनरुनवंसुश्रवकृदुगनसदमुज्जनकसाथगककाठिनियः
 नगनसदमुज्जनसर्वस्यः श्रयंवातिरुसमपिः काठिनियुनगनसदमुज्जनकथा
 गनाश्रुनवश्रविगिगुन वथमंसुवधुयरासारु मसुवदुवाजविसुवधसत्ताः
 नामथायसंपकागयिनः॥ यथायंसर्वजमुदीयन तानांमनुष्यवाजानांवाजसंः
 कात्रयिनव्या॥ यथाचसर्वसत्त्वानिसुखयिगानिरुवनि॥ यथाचसर्वविषयान्त्पीडिताथरुविष्यः

३३

किष्कणकाशा॥ यथायवचकानियवाडिगानिरुविष्यनियथासुखीरुगानियथाचरुविषयाज्
 नूपायासाथयथाचसर्व विषयधर्माजनूपाया साथरुविष्यनि॥ अनयदु
 नाथयथाथयथाचरुम नूपायाज् ४ स्थयुस्वयुः विषयधर्मदगीधर्माकाशुपु
 सिगारुविष्यनि॥ आदिः पिनाथयथाचसर्वदेव गारुवनानादीपिगानिरुविः
 यनिदवेदेवपूर्वथा॥ यथाचवयंचत्वाथामदावाज् ४ सवलपविवावाजनकानिजकगनसद

मासि सर्वे उन्मूढा यगनाथ दवगभाः सन्तर्पिता रुविष्यन्ति संयसादिनाथा यथा यास्माकं कायमदा
 नवीर्यवसं वस्त्रमं वसं अनिरुविष्यन्ति ॥ यथा
 श्रुयसासायारुनिवि गति ॥ यथा च सर्व उन्मूः
 लोयश्च वद्रुजा कीर्तुमन व्यथयथा च सर्व उन्मूढा
 विषयिना नात्र किमन रुविष्यन्ति ॥ यथा च सत्त्वान्नककल्पका टिनियुक्तगमसदमा निष्पत्तिरान्य

३०

दायादासि सुखान्न रुविष्यन्ति ॥ वद्वेश्वरुगवहिः सार्द्धं समवधानगमानिरुविष्यन्ति प्रजागमध्वना
 नुरुवीसम्यक्स्थाविम रि संरात्पन्त ॥ कत्तवम
 न्यकम्बुनमदगाकाव धावना विद्याननगवका
 यकनयनथागमस्सभना नाविष्यन्नक सर्वयं चारि
 मासि चैकसम्यक् वद्वेश्वरुका टिनियुक्तगमसदमा निष्पत्तिरान्य

वाङ्मनः॥सदगः॥यदर्थं जानाधर्मलवपातयन्नुविषयानि॥यनायं कस्युदीपः॥सूक्तमयः॥सूक्तिकाव		
मलीयः॥सर्वकुजसूक्ष्मदीपः॥सूक्ति	नानिरुवन्ति॥सर्वसत्त्वा	नि॥यस्यनास्तिनवयमवि
वयपियमात्मसोऽप्यपियमाः	ववाङ्मनः॥नेत्रयपिय	तावत्तावत्कृतसूक्तदिः ॥१
यंयवमसकसंक्रयकवः॥यव	वकुनिवर्तनकं वंशुरु	कवथपवमरुयवासनद
वशापवमयुरुकनायंसूक्तुवाङ्मनः॥यथाकृत्तुवचिः॥सर्वगुणसंरुवः॥सूक्तदसंरुः॥कथेवायंसू		

कुन्दवाङ्मनः॥सदगः॥यदर्थं जानाधर्मलवपातयन्नुविषयानि॥यनायं कस्युदीपः॥सूक्तमयः॥सूक्तिकाव		
मलीयः॥सर्वकुजसूक्ष्मदीपः॥सूक्ति	नानिरुवन्ति॥सर्वसत्त्वा	नि॥यस्यनास्तिनवयमवि
वयपियमात्मसोऽप्यपियमाः	ववाङ्मनः॥नेत्रयपिय	तावत्तावत्कृतसूक्तदिः ॥१
यंयवमसकसंक्रयकवः॥यव	वकुनिवर्तनकं वंशुरु	कवथपवमरुयवासनद
वशापवमयुरुकनायंसूक्तुवाङ्मनः॥यथाकृत्तुवचिः॥सर्वगुणसंरुवः॥सूक्तदसंरुः॥कथेवायंसू		

नसदुजानिबक्रनिविषयदगसूदिभासू॥ ४२॥ निरुनुमिमंयमूदिनविर्कियुदुदुअकसूदीयगः
 नानिविविकानिदवगभासि॥ नसर्वदवगभा४२॥ नुसूकुमिदंयमूदिनाथ॥ क
 डावसंवीर्यवसंसरुनरुननव सावदवकार्याविवद्वयिष्य ॥ ४२
 नि॥ ॥ ॥ अथखसूचलाः ॥ वामदावाजारुगवका इतिकादिमानुवंदूपाभाथ॥
 गुत्ताययपापावरुदुआजुदुगयापाउदिरुपापाकदुमवगन॥ सूरुक्रमंयमादिना॥ वायुमिषय

वरुयाभासू॥ ४॥ नचसंमाने॥ गविसे॥ यरुविहिरुंगयलंगेवविंमनपीमिसूखसोमनरुनसमन्वा
 गमारुलायूनवपिरुगवकं दियमान्दाववकसूमेव वकिवनिता॥ अथवकिमि
 लायकिवितालायासनरुय कांभानिबीववानिया ववित्तादकिनानिजान
 मधुलानिएथियांयकिष्टाय यनरुगवांरुनांज सिंपलमारुगवकमनः
 दवाचरु॥ ॥ ॥ वयंमपिरुगवंरुदुनवलावामदावाजायकेकामहावाज॥ यंयपंचककगकय

ध्रुपरासारुमः सुप्रनुवाजः कषां वृद्धसदभाववृक्कगलमूला नामथयिचिचंजम्बदीपयचयन॥ न
 चक्रियमनेवायथन॥ अः नकानिचसत्त्वानिः मंसवर्धुयलसारुमंसुप्रनुवा
 उंग्रत्वाञ्चविन्नतिक्रेयः हारुधयू॥ अविनां चहानसुचंयनिलरुननइ १४
 समवचयू॥ संयनिलरु यू॥ जानिगानूयदंवा यविमिगंचयूत्थसुचंयनियः
 क्रियू॥ सवंगारुकगलाथरुधयू॥ नानागित्यविधिह्यथनदिदंसंयूकं स्नानकर्महाविष्टामिनस्यव

मरुगकस्यरिक्कासुषांचधर्मशवणिकानां सत्त्वानामथाय॥ सवैयदनकृकजलमवनयोजकसि
 कलदकलूवडिन्वठामवडः स्व प्रविषायकपीजसर्व काश्वदेवताडाः प्रगमंया
 सानि॥ ओषधयामाथनस्याः पर्यनिलवपुतिगा॥ व यागावाचनपृक्कागीविष
 साम्यकममी॥ ॐ नुदहसामदाः स्वमाथामकंजुगुवत्वं वं॥ नीवसुर्कसुजवसंसि
 इकीयुर्नुवसंनगसंयनिलयंचन्दनंमनगिलासमात्रकंनुवसुर्कः ३३ कर्ममूहसर्वपा॥ नवदंः

चवसुक्तलाउसीवत्तागकगलं॥चतानिसमरुगनिपुष्यनक्रुक्षयोषयन॥०॥मेमनपदेयुगुभन
 धाचारिमन्त्रयन॥०॥नयः॥था॥०॥सूक्तकवना॥केराग॥दंसत्र॥०॥नृजा
 मलिनकउपसदग्रवनासिकः॥कृकृकलविमलमनि॥शीलमनिसन्निवृष्टमवनि॥१५
 गिगिविसन्त्यस्त्रिमस्वादा॥०॥॥गमयनमगुलकंदुः॥स्वामृकपुष्यानिस्त्राययन॥
 सवधुहा॥०॥पुष्याहा॥०॥सवधु॥०॥स्त्राययन॥॥वर्मनानिचपूष्यानिचस्त्राययन॥॥कन्या॥०॥सूक्तवि

मान्यसाध त्वाया ददध विस्व ४ शुभु नं धूप यो त्विरुं प ३ रुया नि या जय नू ॥ रुच उ य का के थ नान्द वां
 समलं रुतां ॥ आद भन य दा य थ मय ग की नि या जय नू ॥ भी मा व न्चं न ४ कृ या नू य थ
 कार्य समाल रुता ॥ अन न मः रुय दा क भन सी मा य न्चं स मा य रुता ॥ स्या य १ थ द
 म ॥ अक न य न दि लि दि लि मि रै शि ल स्वा दा ॥ ० ॥ रुग व न ४ पृष्ट न ४ स्ना त्वा अ
 न न म लु जा प न स्ना न ग नि या जय नू ॥ ० ॥ न य थ ॥ सु ग रु वि ग रु वि ग मा व नि स्वा दा ॥ ० ॥ न रु शा

यः पातयन्नुचतुर्दिगन्तुः सपीडावासासि कर्मरुयावदं ॥ आहुसंक्रातुसंरुनागामानुरुय
 दावृक्षसमविगमस्वादा ॥ ० ॥ सगमस्वादा ॥ ० ॥ सागवसंरुनायस्वादा ॥ ० ॥
 सन्तमात्रनायस्वादा ॥ ० ॥ नीलकर्तुयस्वादा ॥ ० ॥ अयत्राडिनायवीर्यः ॥ ० ॥
 यस्वादा ॥ ० ॥ दिमवसंरुना यस्वादा ॥ ० ॥ अनिमि वरकायस्वादा ॥ ० ॥ नमाः
 रुगवर्षेवाद्मन्धनमः सत्रस्वसिधुसकपदासंखन्नमस्यदुस्वादा ॥ ० ॥ चकनस्नानकर्मणा

१३

कस्यधर्मरुनेकस्यरिक्कावर्थाय कषांचधर्मशत्रुविकानां सखकानामर्थायस्यमवादनंरुगगनः
 सिद्धयदवगलेसार्द्धं ॥ ननु चअभवानगत्रवानिः गमवाविदाप्रवासर्वभायागः
 यममनंकविष्णामि ॥ सर्वय रुकसिकलूयनक्रुज सपीडावाइः सप्रविनायकपी
 डांसर्वकार्यदशनाजपम मयिष्णामि ॥ यथाकवां सगुदुषावकानांरिक्कारिक्कय
 वासकापसिकानाडीविगानूयदारुयन् ॥ संसात्रनिर्वाणंचयमिलरुयूषाअवैवर्किकाथरुवयूजनरु

वायाः सम्यक् ॥ ८॥ ० ॥ ॐ ॥ अथ खलु गवां सवस्व सो दधौ साधुकात्र न दान् ॥ ॐ ॥ साय
 साधु सवस्व निमदा दधीवद्र ऊनदिना यवद्र ऊनसूः स्वाय एमि पत्ना ॥ यत्नया हीः
 मानि मन्त्रा यधीनि संयुक्ता नि ॥ साय सवस्व नीमदा दधीरु गवतः ॥ पादा स्त्रिव न्द नं रु
 त्वा न कान निवर्त्तु ॥ ॐ ॥ ॥ अथ खलु चाश्या याक व न कोलि नाम दावा ॥ ८॥ ०
 सवस्व नीमा वा दय निम ॥ सवस्व निमदा दधी पूड नी या म हत या विखा ना सर्व सा क पू व न द ह्ना मः

११

हायु ला गिख य स मा गि ना ना उ हा व व व वा मि नी ॥ थुरु व रुं धा व य नि ॥ क पा द न नि स्रु ति स च द वा
 स म ग म नां ॥ स रु व य नं लि दं डि का वि मू खं च स त्वा नां रु स नु व य नं थु रं ॥ म्पा थ थ
 दं ॥ मू प्र वि य अ व ड अ व जा व नि दि यु स विं ग स विं ग स वः नि मू ख म वी चि स म ति दिः
 ग म ति ॥ अ गी म गी न स वि न स चः वृ डि वि चि वी म वि मि पा न थं सा क अं रु क थि य ३
 सिद्ध व न री म मू खि न ग वि व वी ॥ अ प ति द न अ प ति द न वृ डि न मू खि म वि म दा द वी प ति ट द न म र्का

वंसर्वसत्त्वानां वृद्धिः यन्निदं नारुवन्तु विशामसिद्धिनुगं कृत्वा कुरुयिट्ककाद्यादिषु ॥ ० ॥
 नयथा ॥ ० ॥ सदायुगवदिति दितिमिति विचरुमम विचरुमममायासर्वसः
 त्वानां च रुगवत्यादयाः सत्रस सा अनूराधनकदावः कयवतिदितिमितिदि
 लिखावाद्यामिमदादयो वृद्ध सखनधर्मसखनसंय सखनरुनुसखनवव
 षसखनयशाकसखवादिनः सन्निगतकषांसखवचनन आवाद्यामिमदादयो ॥ दितिदितिः

१७

मिति विचरुमममन्तिनामायासर्वसत्त्वानां ॥ ७ ॥ नमारुगवसो सत्रसो मिथ्यं दुसन्नुयदाः
 स्वादा ॥ ७ ॥ अथाचार्या कलकाणिनामदावात्र ल॥ सत्रसनीमदादयो
 मिमाहिर्गार्थारिवरुखावीक ॥ ७ ॥ मयवशरुमागदवीसद च ॥ सायामिदवीयवः
 सारुमयावृक्का ॥ यामारुग वगन्वसत्रनुसाक ॥
 नानाविचिगुगुलसमसंयुता ॥ सत्रसनीनामविगासनगायु ॥ लाविमसहानगुलेविकी

धुनाजाविचिनुवत्तारुमदगनाया साधामिमां पवव वा क्युलोविमिष्टे ॥ सिद्धि कवासेयवमारुमाये ॥
 पुनरुदनायेगुला कवाये ॥ विम
 माये ॥ गुलाययायेगुरुदगना
 विमलयरायेरुनाकवायेरुः
 मलिवाइसमलंकुतायेपुगुगगा ॥ अयदगनायेमनाहूवाक्ययेरुदसुवायेगग्रीवपुहायसमः

नारुमायेकमनाकला

ये ॥ गुलोत्रिन् ४ समः

निसमयनायेसिद्धारु

ये ॥ सुनावननायेनयनारु

लंकुताये ॥ वन्दायमायेः

मायेनववादनाये ॥ वल

१२

त्रिनाये ॥ कार्यागसाधनकवायेसुसत्तनायेदवासूत्रेवरिपूडिनाये ॥ सर्वसूत्रासूत्रगललयवः
 विनायेरुगगले ४ सदाः
 पुयकुरुगुलोद्यं ॥ सर्व
 वरुगुमीसर्वसत्तांथः
 प० कुरिय ४ ॥ सर्वोरिपायधनवायनालीसिद्धिवयाप्रानिगिवासदावमिति ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

संपूडिनायेनमस्वादा ॥

सत्तानांविगिष्टांसिद्धिं

गरुम ॥ १ नांसमाका

॥ ० ॥ अदंदवीनमस्यामिसाम

पददागुसर्वकार्यानिनिस्पंदः

कवपुववायं ॥ कात्यसमत्ताय

सवर्गुयरासारुमसूनुदुवाऊसवसमीदवीयविवर्तनामाष्टमः॥ ॐ ॥ अथखलूमीमदादः
 वीरुगवन्नंप्रममोदवा यन॥ ॐ ॥ अद
 मदादवीरुसाधर्मराम कसोरिक्रीवोसूखना
 पागुगयनासनशानपय यरुषययविसावेवनी
 कः॥ सवर्गुयकवधसम्यत्ता रुविषानि॥ अवेकल्यनांचयनिसयानसवसूचिकारुविषानिसूखचिकारु

६०

वाणिदिवापनिनामयिषानि॥ ॐ नथसूवर्गुयरासारुमा लूनुदुवाऊचानाविधानियदवाऊ
 नानिउपनामयिषानि॥ यनांस वर्गुयरासारुमः॥ स
 ववृककुगसमूतानांसत्ता नाम थीयविवंऊसूदोयय
 वानकवीरुमि॥ सत्वाः॥ सवर्गु पुरासारुमंसूनुदुवा
 लकादिनियुक्तगनसहसा नयि न्यानिदिवामानूयकानिसूखानियनूरुवेयू॥ इहिकथा

कर्कषयकसूरिकृष्णपदरुधनु॥ सत्ताश्चमनूषसूखायवाभनसूखितारुधयू॥ नथागनसमवः
 धानगनाथेरुधयू॥ अनागन
 वनवकनिर्यकथानियमसाः
 त्रकसमयुलसोगववेड्यकः
 नाइहसमाकंचूद॥ यगुशियामदादव्यामयाकगलमूलमववृक॥ येनेनदियांयांदिगंसत्ता

अनिवाभनूवासमाकं
 कइखानासुनसमः
 नकगिविसूवर्तुकोश

धाविमरिसमूधयू॥ स
 दित्तानिरुधयुविकि॥ न
 नपुलासथीनमेकथागः

८१

नांविदवकियांयांदिगंसत्तान्यवसाकयमि॥ यांयांदिगंडपसंकममि॥ नस्यानस्यांदिगभकानिसः
 त्रकाटिनियुनभनसदगाः
 त्रमांययमिसप्यान्क॥ अ
 सिमूकवडवेकृष्णगंखमि
 पकवमसमृद्धानिसत्तानिरुविषानिधियादव्याधयराधन॥ नस्यवनथागनसपूजाकर्कषागनाथ

दिसवसूखायवाभनः
 लेनवापाननवाधनन
 लायवालजाकनृपवड

सखितानिरुविषानि॥ अथेक
 वाधाननवादिबलासूवर्तुनः
 नादिरुधयुधायकवल्पासर्वा

पूषाश्रुपाश्रुदीपाश्रुदाकवा॥शियादेव्यासिद्धत्वा नामधेयमश्वायि नयं॥	ककवा नि॥नस्यमदानु	व्यनागिविवद्वनविवद्वनवयमि	८२
दीपंदाकवा॥प्रसविदागालि	चदवनासदारुसमस	विनायहमवृकदवनलाहन्ति	
वसाधवल्पायदधिगारानि	हृयरासारुमससुगुः	नुवासेर्केनामधेयमश्वायि	
स्यानिसूचिगुलावा॥सूव			
नयं॥गान्ताच्छीमहादवीसमन्ताद्विष्यति॥कषांचमहनीशियंकविष्यति॥श्रुतकवर्णावाक			

धान्यां पूषाकसमयलानामायानवनसूवर्षुचकनान्निसफत्रपरुवनशीमहादवीयगिवसमि	न्यागिविवद्वयिगुका	मारुवन॥ननलाधयिनयं॥
समाय४कश्चित्पूषावा	सूचवसनवाविभारुः	विद्वयं॥नमसुसुगुनवगात्रः
शुचिल्वनवमुपावृत्तुन	दूर्यकनकगिविसूवर्षु	काञ्चनयुगसशियसुथागनः
त्नकसूमयुगसागववे		
स्यार्दन४सम्यक्सूद्वस्यसिद्धत्वा नामधेयमश्वायि नयं॥शियादेव्यादरुननस्यपूजाकरु		

व्या॥ पूषा वृषगभा धनया ४ नाना न स विहा वाथ निरु क व्या ॥ न स्य व सूर्य रुय ता सा रुम स्य सू न
 नु बा ऊ स्या नू हा व न न न का स न थी म हा द वी न स्य गृ हं स म न्वा द वि ष्य नि ॥ न स्य वः
 म हा न्वा न्वा गि वि वः इ यि ष्य नि ॥ न न थी मः हा द वी मा वा द यि रु का म न ०
 भ वि श्या म न्वा ४ सा व यि न व्या ४ ० ॥ न य थ ॥ ॥ न म ४ स च व द्वा ना म नी ना नाः
 ग न स रू न्वा नां ॥ न म ४ स च व द्वा वा वि स त्वा नां ॥ न मा म्नी य प रू नी ना म्वा वि स त्वा नां ॥ न र्वा

८३

न म स्तु त्वा मां वि श्या य थ ऊ यामि ॥ ० यं भ वि श्या म न्वा ४ ॥ स्वा य थ दं ॥ प नि पू र्ण व त्र म म न्वा ग नः
 म हा का य य नि या य ४ स त्वा र्थ स म ना नू य पू त्र ॥ आ या न व मि ना म हा र्वा गि नाः
 म हा रु ऊ य मं दि न ॥ अः विं गृ ही न ॥ स म या नूः पा स ना ० म म्वा रि क व र्मा नाः
 म नू प दा शा न का ग गि य दा ज वि स व द ना म ४ नु य दा ४ ॥ स म व द्वा वि रि त्र व न
 म क ग र्वा ४ पा रू न्वा न य मा ४ स स प व र्वा म्वा ४ ॥ अ प वा क्ता स पं वा सि न पू र्वा क्ता ॥ अ प वा क्ता स च व

68



नथा गगनस्य ॥ नमः सर्वत्र त्वा कव च्छु कटस्य नथा गगनस्य ॥ सर्वत्र पुष्पा	कस्य ॥ त्रिचित्र कथुनाः	कस्य ॥ त्रिचित्र कथुनाः
कस्य ॥ नमः मन्दाय दीपसा नथा ग	वर्तुगन्धाना मवाधि	मवाधिसत्त्वः ॥ सर्वत्र पु
रुमा रुमाना मवाधिसत्त्वः ॥ स	वाधिसत्त्वः ॥ यत्र किम	सत्त्वः ॥ सदा प्रवृत्तिनाः
नामवाधिसत्त्वः ॥ धर्मा कथानाम		नो कथाना मकथ गगनः ॥
दक्षिण नव त्रकथुना मकथ गगनः ॥	॥ पश्चिम नामिना यूर्ना मकथ गगनः ॥ उक्तं यद् इति	

६५

समाना मकथ गगनः ॥ सर्वत्र पुष्पा रुमा रुमाना मवाधिसत्त्व नामानि यत्र यत्र कि वाचः	समा रुमा नि ॥	॥ ॐ निसर्वत्र पुष्पा रुमा रुमाना मवाधिसत्त्व नामानि यत्र यत्र कि वाचः
यत्र कि वाधिसत्त्वानि संजातिः	नामसं धावली पीविवः	रुदिगमः ॥
सूनु वा ऊस च वृद्ध वाधिसत्त्व	गवन्मम दवा चतः ॥	॥ अयं रुद्र रुद्र गवन्सर्वः
अथ स्वत्वरुद्रा पृथिवी देवगारु		
पुष्पा रुमाना मवाधिसत्त्व सूनु वा ऊस च वृद्ध वाधिसत्त्व नामानि यत्र यत्र कि वाचः		

दलमिदिक नद व वा उ क स वा उप सं क मि य मि य ना यं स व लु प ला सा रु म ४ सू ग नु वा जा वि रु म
 न सं यु का ग यि ष्य ति ॥ य नु य नु र ग व न्दु थि वी य द लो न सा व र्मा ह न क स्य रि का -
 नु का य ग र स्य ध र्मा स न यु रू फ र वि ष्य ति ॥ य नु य नु स न ध र्मा ह न का नि व य ६३
 मं स व लु प ला सा रु मं स ग न्दु न्दु बा उ वि रु म य ह मं यु का ग यि ष्य ति ॥ न न्दु हं रु दः
 न रु ग व न्दु द ए थि वी द व ना न वृ थि वी य द लो वा ग मि ष्या मि ॥ अ न ध र्मा स न ग ना सि अ द ग

मान ना ल र ग व ना रु ना (क न च रु स्य ध र्मा ह न क स्य रि का ४ या द रु सो यु नि सं द वि ष्या मि ॥ आ त्मा नं चाः
 न न ध र्मा श व (न न ध र्माः स न ध र्मा स न सं न र्प यि ष्याः मि सं यु नि मा न यि ष्या मि सं यु न
 यि ष्या मि ॥ आ त्मा नं च स र्प यि ता य नि मा न यि त्या सं प द र्प यि त्या ॥ २२ म म ह
 व द्दि या उ न स द्मा निः ए थि वी रु न्दु आ त्मा नं वा न न ध र्मा श व (न न ध र्मा स
 न व स न या व द्दु म यं ए थि वी न व मू या द य ए थि वी व स न वि व द्द यि ष्या मि ॥ सं यु नि मा न यि ष्या

मिपत्रिपूत्रयिष्यामि॥उपत्रिभ॥गंमंसडयर्थनएथिवीनसंडपादायएथिवीमहुतंसि॥
 नएथिवीवसनसदः॥
 सिंजन्मदीपनानारुः॥
 यन्नि॥सर्वानामवनरु
 विषयनि॥गन्धर्वनवानिस्त्रिभुवनानिआस्वादनीयानिदग्धनीयनवानिमहारुवानिचरु

८१

विषयनि॥नयसत्वास्मानिपानरुजानानिनावाविभानिउपशुक्ल॥आयूवसवर्षुद्विगालिविः
 कयिषयनि॥नजावसवर्षुवूः॥
 नानिअनकानिकार्यगनसद
 सकवमोयानिकभानिकयिः
 प४क्रमशरुविषयनिसूरिकशरुगशरुदशवमलीयशरुदऊनाकीलुमनूयशरुविषयनि॥स

चैव अथ दीपवसुत्तानि सखिगानि रुविष्यन्ति नानाविचित्रां वरिमतं रुविष्यन्ति ॥ गानि सत्ताः
 निगतावसवर्षु नृपसमन्ताः गतानि च रुविष्यन्ति ॥ अस्य सुवर्षु यरा सारुम
 स्पसु रुनुवाउस्यार्थे ॥ नृषां सुग
 मासगता नामनिकमूपसंकमः यशा अस्य सुवर्षु यरा सा
 या ॥ नृषां सुग रुनुवाउस्यार्थे ॥ नृषां सुग रुनुवाउस्यार्थे ॥ नृषां सुग रुनुवाउस्यार्थे ॥

संकमित्वा गानि पसत्तु चि रूनि सच सत्ताना मर्था यदि नायसुखा यमा न्मरुतान कान (ध) वय यशा अः
 स्पसु वर्षु यरा सारुमस्यः सुग रुनुवाउस्यार्थे ॥ अहं दृढा पृथिवी दवता स पत्रिवा
 नाउउसिगवाच रुविष्या मि ॥ नरुद नरुग वंथा साकं कायमदावसवी र्थे स्तान
 संकनिकं रुविष्यन्ति ॥ नउ यथीय सन्नीया साकं कायमावन्ति ॥ मयि च रुद न
 रुग व नृदाया पृथिवी दवतायां ॐ अन्न न धर्मा न्न न स न्न र्पि नायां सदा नउावसवी र्थे स्तान मवगप

मिलायां॥ अयं मदा एधि वीस फयाउन सादसि कायां उचूदीपा मदा एधि वीस न विवद्वयिषाणि॥
 उअस्मिन्नायमदा एधि वीरुविषाणि॥ ० ॥ ॐ मानिचदनेरुगव सर्वसत्ता
 नि एधि वीस त्विषिगानि वृद्धिस्वगृष्टि वेपुस्यतां चगेमिष्यनि मदानि चरुविः
 षानि मदानि चरुत्वास त्वानि एधि वीगगानिः नानाधरागपत्रिशागा नृपरा
 ऋनि सुसानि चानूरुविषाणि॥ गानि च सर्वाणि नानाविधिना न्नपानरा सुवसुभयनासनवसन

६८

रुवनविमानाशाननदीयूक् विष्णुत्सवा ददगडागा वीनि ॐ मानावद्रपाणि नानाविधानृपकचनसुखा
 नि एधि वीस स्मिन्ना नि एधिः वां पादरुगानि एधियाः पुकिस्मिन्ना नि उय रु उनु॥ रुनः
 रुदनेरुगवनरुनु ना सर्व सत्येवस्माकं रुग रुकाक रुया॥ अवगमयं सुवर्णपरा
 सा रुमः सुगुणुवाऊः सः त्वायागवससत्करु यागुवकरुया मानयिरुवाः
 यदाचरुदनेरुगवं रु सर्व सत्त्वानानाकलशानाना गृह रानि शुभयूक्तां धर्मा रागकाना मूयसंयम

क्षया॥ उपसंकम्य संसृज्युषः साकं संसृज्युषः साकं संसृज्युषः साकं संसृज्युषः
 नानाकृतं वृद्धं यमवृष्टं
 साहित्यं यमवृष्टं यमवृष्टं
 धर्मशतं यमवृष्टं यमवृष्टं
 अथासाहित्यं यमवृष्टं यमवृष्टं

दीनारु विषयानि॥ ननय नाना गृहगता रुत्यानां साकं संसृज्युषः साकं संसृज्युषः
 दनगणकदृष्टं नमय्याया
 नगणकदृष्टं नमय्याया
 अदन्तं साकं संसृज्युषः साकं संसृज्युषः
 धर्मशतं यमवृष्टं यमवृष्टं

वीपदलपू॥ ॐ नाना वं वृणानि नाना विधानि सृजान् कुरु निपत्रस्य प्रभा वाचयय ॥ संभवययुश्च कथा
 समन्त्रं वक्रवीचन॥ सर्वे
 सिग्धन जाथा॥ सर्वेषां सत्ता
 निसर्वापिकत्रस्तानि रुयिः
 सर्वाणि नानि सत्तानि मदा धनानि मदा रोगानि मदाना विमूकानि च रु विषानि विषूत्र त्वेषू जूरिपस

२१

त्वानि रु विषानि॥ ० ॥ च वमूक रु गवान् रु दं रु धि वी द वना भरु द वाचन॥ ० ॥ थ क चित् रु धि वी द वः
 रु सत्ता ॐ रु ४ सू व लु प रु
 मनुष्य का आ वि त्वा रु य विं
 त्प न्क॥ थ क चित् रु धि वीः
 थय॥ गानि रु नानि सम सं कृ वी च न्॥ अ न्क भ च क प ना क म्वा च क इ प्प म्वा सम सं कृ गानि च द व ना रुः

नानि॥ कषुसफसूकामावयवषुदवनि काथषुसफवत्तमयानिदिव्यानिविमानानिसर्वोत्तंकात्रममसंरुका
 निसरुकास्यनि॥ कसत्याः०००॥ कामनूषासाकाशविता कषुसफवत्तमथषुदिव्याविमान
 वृषयत्सन्नकषेकेकसिंए थिदवकसफवत्तमथदि अविमानसफवात्रानूपयत्सन्नक॥ तर
 अविंस्यानिदिव्यानिसूखाः नियसूनरुविषानि॥३॥ ०॥ नवकदृढाएथिवीदन्न
 कारुगवन्नमनदवाचत्॥ ०॥ कनादंरुदन्नरुगवन्दृढाएथिवीदवगातस्यधर्मराक्षकस्यरिक्का

धर्मासनगतस्यकषुएथिवीयदणायसिष्यासि॥ अदृग्गमाननान्नकावननस्यधर्मराक्षकस्यरिक्काः
 वरुमाङ्गनपादतलोपनिमंः रुत्रिष्यामि॥ यथाययंसु वधुयरासाकूमसुगुनुवाः
 ऊरुषांवृद्धसदसाववृफक गसमूतानांसुत्तानामथ यवित्रंमृदीयपत्रप्रत्॥ न
 यक्रियमनद्वोपयत्॥ सत्या निधमंसुवधुयरासारु मंसुगुनुवाउंशुधयूशाअन
 गरुध्वननकानिकस्यकाटीनियुगगतसदमातिअविन्यानिदिव्यामानूषाकानिसूखानिअनूरुवयूषा

नथगगनसमवधनगगानिचरुथयू॥ अनागनचननूरुवासंमयसंवाधिमरिसम्वयू॥ सर्व
 नयकनिर्येणनियमसा कइ॥ खानिचारनसम चित्तानिरुथयुविनि॥ ० ॥
 ॥ ॥ ॐ निसु वरुयुगसाकभसुगद वाजदरापृथिवीदवनापवि त३
 ॥ ॥ ॐ निसु मेकादग॥ ॥ अथखलसंकुथानाममहाय
 कृशनायनियवशाविंगनीरिमहायकृशनायनि॥ ॥ ॥ ॐ निसु साद्वस्वायासनादकांगवीवजः

पावरादक्रिभंजानूमधुसंपृथियांयनिश्वायनरुगवांरुना॥ सिंयमसा रुगवन्कभरुदवावरु॥ ७ ॥
 अयंरुदकरुगवत्सवरुयुः रासाकम॥ सुगुदवाजः नरदिवानागनचनिययुग
 भवानगत्रवानिगभवाऊनय दवाऊनयदपदेवावस्था यरुनवागिदिकन्दयवावा
 ऊकृशवायदवाययविषाति॥ रुनादंरुदकरुगवन्सः ऊथानाममहासनायनि ४
 साद्वमशाविंगनीरिमहासनायनिरि॥ ॥ ॥ ॐ निसु कृशनामनगत्रवानिगभवाऊनयदवावस्थावागिदिकन्दः

यवा वा ऊकृत्वा उयसं कसिष्यामि॥ अदृग्मा भनतात्मलावनरस्यधर्मलावकस्यरिक्कावक्रांकत्रिष्यामि॥ प
 त्रिनालंपविशदंयत्रिपासुनंदधु
 कषां च सध्वेषाधर्मशतवहिका
 वलुपुलासारुमात्सुगुलुवाडा
 गनकयदमपिसुवलुपुलासारुमात्सुगुलुवाधकवाधिसत्तनामधयमपियुगंरुवन्॥ उरुदीरंवाच

पत्रिदावंगमुयत्रिदावंः
 नांसीपूज्यदात्रकदावि
 दनगनकाचवुष्यादिका

गान्तिस्वस्ययनंकत्रिष्यामि॥
 कानांयवांकषांचिदिन॥ सु
 अयिमाधगुगारुवनसुन

२५

करथागननामधयंवाऊनगश्चास्यसुवर्णपुलासारुमस्यसुगुलुवाडास्यनामधयंशुगंरुवन्॥ उरुदीकाः
 वागषांसचेषांमात्रक्रांकत्रि
 पत्रिदावंगान्तिस्वस्ययनंच
 वाक्षंरुषांचगामानांरुषांच
 त्रिष्यामिपत्रिनालंपविशदंयत्रिपासुनंदधुपत्रिदावंगमुयत्रिदावंगान्तिस्वस्ययनंकत्रिष्यामि॥ नत्कन

ष्यामि॥ पत्रिगदंयत्रिपात्र
 कत्रिष्यामि॥ रुषांचकृत्वा
 निगसानांरुषांचावधानां

नंपत्रिनालंदधुपत्रिदावंगमु
 नांरुषांचगृहानांरुषांचनगः
 रुषांचवाऊकृत्वा नांमात्रक्रांकः

मनदुःखना॥ सर्वधर्माः यत्रिहाराः॥ सर्वधर्माः ज्वरदुःखाः॥ यावन्तश्च सर्वधर्माः॥ यथाच सर्वधर्माः संस्मिताः
यत्र सर्वधर्माः सम्यग्ज्ञानाः॥ सर्वधर्माः॥ सर्वधर्माश्च दं॥ रुदन्तु वं पुरा॥ अचिन्ता
मरुदन्तु गवन्तु हाना वरुणा॥ अचिन्ता हाना साक॥ अचिन्ता हाना साक॥ अचिन्ता हाना साक॥ तज
मरुदन्तु गवन्तु सर्वधर्माः॥ पूरुन विषयः पुरा रुका॥ यथाच मरुदन्तु गवन्तु सर्वधर्माः
धर्माः सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥ सम्यग्ज्ञानाः॥

वं संजयस्य मदाय क्रमना यत्र संजयः क्रिनाम (वयं समुद्रादि॥ अदन्तु गवन्तु धर्माः हाना साक॥
क्रावा अविह वनाः यत्रिहाराः॥ नमप संद विष्णामि॥ यामा नमप संद विष्णामि॥ यामा
मदानं चरुस्य सम्यग्ज्ञाना वरुणाः॥ अचिन्ता हाना साक॥ अचिन्ता हाना साक॥ अचिन्ता हाना साक॥
कविष्णामि॥ सम्यग्ज्ञाना वरुणाः॥ यामा नमप संद विष्णामि॥ यामा नमप संद विष्णामि॥ यामा
मदानं चरुस्य सम्यग्ज्ञाना वरुणाः॥ यामा नमप संद विष्णामि॥ यामा नमप संद विष्णामि॥ यामा
मदानं चरुस्य सम्यग्ज्ञाना वरुणाः॥ यामा नमप संद विष्णामि॥ यामा नमप संद विष्णामि॥ यामा

महादेव्याशासनमस्तुस्याम्यपित्रिमित्युत्तमयस्तुसमादिगाथाः सत्रस्यस्याः ॥ ननखसूयूनः कासनननसमयनवाः
जावसदकतुः पूनस्यविविधः कमाविविवाहिविकसाः चवाअपुतिविकस्येनदवाचन॥
॥...॥ अस्मिपूतदवः नुसमयंनामवाङ्गांमुंय नमवापूवमविवाहिविकनचवो ॥
अपुतिविकनच॥ पिबुवास्तु वयंनुकमाः सकागाइः कृदीकं॥ ननमयादवनुसमय
नवाङ्गास्तुविंगतिवर्षसहस्राणिवाङ्गांकाविकंवद्व॥ नारिजानामादंसनुग॥ चकविकुक्कलयमाध

मातृभायिकस्यचिदधर्मस्तुनपूर्व॥ कनमरुदवनुसमयंनामवाङ्गांमुं॥ ० ॥ अथखसूकलद
वकवाजावसनुकतुः ननका सनननसमयनपूतसाः वास्तुविविधकमात्रिमाहिरम
थारिदवनुसमयंनामवाः ङगांमुंविस्तुवसंपका भयति॥ वाङ्गांमुंयवस्वामिस
वसन्तदिनंकव॥ सर्वसंग यस्तुवावः सर्वइष्टकना मनं॥ रुष्टयिस्तुविल्वदसः
वन्तवकयः ॥ एथक्॥ सर्वदवनुसमयंयुक्तंयाङ्गलीकना॥ वङ्गाकावगित्रीस्तुसिंदवनुसमागम॥

उस्मिता सा कया सति बुद्धे उपविष्टया ॥ त्वनं ४ सूत्रयुक्ता दवगानां च सीधवः ॥ कृत्वा त्वं संगयानां
 वदित्तया सा कं संगयं ॥ क थं मनुष्यं संरुगा वा जादवः सयाच मं ॥ यदि ह मानुष्य साः
 कजाय न चरुवं नय ॥ कः थं देवमनुष्यं वृत्तं च कत्रिष्यति ॥ न वंदि सा कया सति त ८
 बुद्धे उपविष्टया ॥ सः वसूत्रयुक्ता सा कया साः निदावुवीरु ॥ यदि ह सा कया स
 रिथदिममपृच्छि ॥ सर्वे सत्यदिनार्थयव श्रद्धं गमु मुरु मं ॥ नावीनां संरुवं वक्ष्ये क्वा दं मनुजा सय ॥

दुरुताय न जा नारु वनि विषय वृत्ता ॥ दधद्वा लाम विद्वानमाहुः ४ कृत्वा पथ श्रुति ॥ पूर्वमधिष्ठिता देवैः ४ यः
 ग्याज्ज्ञेय ययन ॥ किं चापि मानुष सा कजाय न मय न नय ॥ अयि ये वद व संरुगा
 दवपुत्र ४ स उच्यते ॥ कयसिं (गदव वा ऊर्ध्वं (गद रु नय सदि ॥ पूर्वस्मि सद देवाः
 नां निर्मिता मनुज श्रव ॥ ४ वसूत्रयुक्ता सा कया साः नां निवाय क ॥ सुदुर्गो रूपा यः
 सत्तां पदार्थं सूत्रा सय ॥ मनुष्या वा धदवा वा न वा विप ॥ वा कसा वा ध वक्ष्ये सा इह कृत्वा नां निवाय क ॥ ४

साधपिनावा नृपतिः सुकर्मो कर्मका विना विपाकरु सदर्शितं दव जाड विधिनि ॥ सुकर्म इह नानाः		
उकर्मनां दृष्टा विना वि	पाकरु सदर्शितं दव वा	उमविधिनि ॥ यदा मूय कर्म वा
जाड सुकर्म विषय स्थिति ॥ नाः	ना नृपति कर्मो न दधु पाः	पजन सव ॥ इह नाना मूय कर्म तत
या मूय मी वद नृपति ॥ ना	थानिक सहाये वद यः	वा दुरु वनिच ॥ पकृष्य निः
वद वद मूय विनि ग व न पृ ॥ यदा मूय कर्म वा जाड सुकर्म विषय स्थिति ॥ दन म विषय द्यो वे ॥ ४ ॥		

येन पि सुदा मू ॥ ४ ॥ विन स नि ग दा वा दृ प व च क स वा क मा न् ॥ रा ग नि च व ला नृ व न नं य सा सि सं		
विनि ॥ वि वि धा नि व ग स्याः	नि द व नि च य व स वं ॥ ३ ॥	य न का र्थ म वा ड लं मी न त्का
र्थ क वि षा नि ॥ वि ला प यः	नि सं वा दं ग ड नृ व व	नृ नो ॥ वि ष मा वा य वा वा नि
वि ष मा ड नृ व य ॥ वि ष	मा य द न क र्मा श्र नृ सु र्था	नृ थे य व ॥ ग स पृ षं रु सं वा डं
नृ स म्प क वि मू य न ॥ इ हि नं रु व न क र्मा य नृ वा जा मू प क क ॥ मू नारु म न सा द वा रु व नि रु व न पृ ॥		

यदायुषः कृत्वा जादयुः कं विवयस्मिन् ॥ न स च दव वा जायव न निचय वस्य न ॥ अथर्मिका अयं वा
 जायवर्मय कृत्वा शिन् ॥ न विवय अयं वा जादवना काययिष्मि ॥ दव नानं यविः
 काया द्विषया स्थानि न अमि ॥ अमना सधर्म स्थवि वयं यरु रुविष्मि ॥ साथानं क
 लहानं व वागानं व समरु व ॥ पकृष्मि निच दव नः उप अ निच दव ना ॥ पसूयः
 न च डाष्टुं सन प ॥ १ ॥ अक मृच्छ नि ॥ २ ॥ विथा गं पा प्रा निगु ना वा थ सून न वा ॥ पीय रु या विथा ॥ गं वा

१००

पीय रु इदि ना थ वा ॥ उका पा ना रु विष्मि नि य नि सूर्य स्मि ॥ थ व च ॥ प व च रु यं चा पि इ रं व द न रु गं ॥ ३
 पिथ मा रा स्थ मी य न इ पि यः मुग र्ज न व च ॥ सू ना री पुं पि या स्वा सं क वा रु या विथाः
 धिन ॥ य व स्य वं रु विष्मि नि कृत्वा ग ध ना नि च ॥ द लो द लो द निष्मि नि ग मु स व यः
 व स्य वं वि वा दा ॥ क ल हा गाः लारु व नि वि व थ पृ च ॥ गृ ह ॥ य नि ग न वा द्यु वा धि रु
 व नि दा वृ ॥ ४ ॥ अथर्मिका रु विष्मि नि द कि नी या स्म द न वं ॥ अमा रा ॥ य वि ष द ॥ थ व रु व न्म स्या य वार्मि ॥

का॥ अ धर्मिक उ न पूजा रु वि षं ति न द न त्रं ॥ धर्मिकानां च स त्वा नां नि य द्वा रु व ति च त्रं ॥ अ धर्मिक
 उ न स न्ना नं धा र्मि कानां च य दं ॥ उ य स रु य क य न न क रु उ ल वा य व ॥ उ य र्वा वा
 वि न स्य नि अ धर्मिक उ ना रु द ॥ स द्ध म त्र स नाः उ य स त्वा उ ४ ए थि वी व स ॥ ३ १०१
 अ स रु उ न स मा नं स रु उ न वि मा न ना ॥ उ य स रु उ र वि ष नि इ र्ति क्र म ग नि र्म
 त्रं ॥ रु ल ग स्य त्र सो उ य न रु व नि न द न त्र ॥ ग्ना न न व द्वा ४ स त्वा रु व नि वि ष य वृ च ॥ म धू वा नि म

हा नि र नि रु सा नि वि ष य पि दि ॥ य वी ना थ रु वि ष नि ति क क द्वा च व च ॥ पू र्व त्र ण नि रु वा नि की
 ज हा स्य व ती नि च ॥ स रु वः ग्ना रु वि ष नि आ या साः ग रु वा क ला ४ ग स्या नां च रु ला
 ना व सि ग्ध रु वं च सं क य त ॥ न त थ यी न यि ष नि ग वी व द्वा य धा व त ४ इ व रु स त्वा रु
 वि ष नि स रु रु मा ४ स रु इ र्वा ४ व द्वा च रु उ नं रु स्वा रु पी ना सा द य नि न ॥ व ल
 च वी र्थ रु मं च न रु नि न द न त्र ॥ ही न वी र्थ नि स त्वा नि रु व नि वि ष य वृ चः स त्वा रु वि ष नि ग नाः

क्रीनानावाधियपीठिकाशायादरुविषयान्तिनक्रानानावाकसंरुवा॥ अर्धमिका रुवदा अर्धमपकसं
 स्त्रिनशाशुवायुकविबुधनि सर्वज्ञाकमधुसंजनेः कदीदगादाषारुवनिविषय
 पूवायदापकस्त्रिभावाजा इक्षुनंसमयक्रमाथनः कार्यसवाजावेदवदुहिवधिः
 स्त्रिनशानकलवागिवाउत्वं इक्षुनंसमयक्रमासः कृताभापययनसवदवसूवा
 लयइक्षुननगहनिपुनिरियायनकपूवा॥ अथनिगदवरुवनायुपानयनिइक्षुनान्॥ यदासूय

१०२

कुरुवावाइक्षुनंविषयस्त्रिनं॥ यिरुमांदववाजानांरुवगसाधनाधिक॥ नगरुवनिपूजत्वंनवाज
 त्वंरुमंरुवग॥ यदायिसरा नकार्यभाथेवयिसूदा वृक्षे॥ नसादधिकृतावाजाद
 वेनुमनूजासयगाइक्षुना नांममनाथयसूकमानां एवरुक॥ दृष्टाधमिकंसत्वा
 नांविपाकजनकानृय॥ स कनइक्षुनानांचकर्मभांः यएथग्विष॥ विपाकरुलद
 गार्थकरावाजादिपाचन॥ अधिस्त्रिभादवगमांदवदुवनूमादिगा॥ आत्मनार्थयवाथायधमार्थविषय

स्यात् ॥ दमनार्थं यत्राक्षुषं गन्धं पापजनं स्यात् ॥ त्रैलोक्यं विनोदं च धर्मार्थं विषयं स्यात् ॥ मात्रा धर्मस्यैकित्वाः
 जाननं समुपश्रुतं ॥ न चान्य
 स्तथापि कानात्र निगुहः ॥ त्र
 दुर्गते विषमदास्यः ॥ एक
 निविषमस्य हि ॥ न साक्षात्पान्त्रयं स्यात् ॥ कुर्यादसकपायकाविष्ठां ॥ धर्मस्य स्यादस्य मात्रा धर्मसमाचन

सादृश्यानां विषयसि
 योरुचिनिगाथनिविषय
 यानिदधन्दाविष्ठा न

सदात्रुता ॥ यथाभाथसमस्यः
 सिंसदात्रुते विष्ठा न च नदाः
 सत्तास्यं ॥ विषमाः सर्वरावः

१०३

त्रैलोक्यं च पवित्रं स्यात् ॥ यत्राक्षुषं गन्धं पापजनं स्यात् ॥ त्रैलोक्यं विनोदं च धर्मार्थं विषयं स्यात् ॥ मात्रा धर्मस्यैकित्वाः
 मायकपनिगारुधन ॥ नैसाव
 वन्दास्यनिगारुधनं ॥ उः
 स्यात् ॥ दं सुकनैसाव्यनजनं ॥
 १ पूर्वकानि च स्यात् ॥ धर्मस्य स्यादस्य मात्रा धर्मसमाचन

मायत्रयं नयमसाधमिः
 मृदोपनथासाकंपूजावः
 सुकननयवाजानं ॥

कान्त्यः ॥ दधियिष्ठा निद
 मात्तकान्त्या ॥ धर्मस्य स्यात्
 पुषयनजनं ॥ दधेदधिसूक

न माधियं ॥ सम्यग्दक्षिण कृत्वा निवृत्तसूर्यकलेव च ॥ कासन वायवा वानि कासेवेव दृष्टमि ॥ सुहिकं
 कर्तव्यं वा दृष्टं धावतसु वा सय ॥ जन्ममामत्र यूनक्षयपूर्वकं ॥ निसुवालयं ॥ न स्यादायं न
 वयमि ॥ पियं जीवन्मात्मनः ॥ आवरुयद्धमवत्तं यन ॥ लोक ॥ सुखीरुवत ॥ धर्मिः ॥ १०४
 कीं जनयत्सा वां यागुषे ॥ समसं ॥ कुरु ॥ सति संभवतु सुखां ॥ सदायाय विवर्जिते ॥ धर्म
 मया सयदा दुर्धर्मसमन्ता सयत् ॥ सुदुर्गस्य य सत्तान्दुष्टं न च निवाचयत् ॥ सुहिकं रुवत वा दृष्टमि

यरुवत नृप ॥ यथानुवृत्तं कुरु नदमन पायका विभां ॥ यगसीरुवत वाजासुखं पाययत्तु ॥ ३
 ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ निसुवर्णय ॥ रुसा रुमसुवर्णय वा ऊद ॥ धनु समयं नाम वा ऊमाः
 सुपवित्रं रुसाय दग ॥ ० ॥ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ससागवा ॥ रुवत यच कुरु ॥ चत्वावि ॥ रुकवसं धवा नदायदाव
 ॥ नवास्मि ॥ दृष्टुं पियं मनायं पूर्वमसं न च रुकमा सीत् ॥ न धर्म कायं पविमार्गमर्थ पियं जीविः

मंरुक्रमनककस्यां॥यथापुर्वकलापुः॥चिन्मिथपुवत्तगिखिसासुगनसाभासभयविनिर्दक
 ससुगनसुगनस्य॥सुसंरुवा
 समुदयश्चनमदीयुगासुग॥
 जकंजलसपानेयवृद्धशुभां
 यमस्याचविवाचमानं॥यकाभयनमिमसुगवाडं॥स्वप्रादिवृद्धयवत्तववाजापीनिसूटंसच

नामवत्तववाजासचक
 डिमद्यथासायचवाऊवा
 ययत्तावत्ताचयंपभाः

वहीचकुदीयः॥
 नीय॥सुधावत्तवकदवा
 मिधमालाकंस्त्रिकसुः

१०५

मनीप्रमसा॥अरिनिष्क्रमवाडकलानिद्वयउयसंक्रमीशवकसंयमगुं॥कथानिपूजांजिनः
 आवकानांवत्ताचयपृक्तनि
 वत्ताचयानामगुनामिदय॥
 त्रिषष्टु॥विचित्रवत्तं॥
 वाडसुगनयनयभा॥वत्ताचयंरिक्कसधर्मालकधावन्यगुदाकनवसंनिषर्षुंरंनलक्ष्मिणिय

धर्मालकं॥कथालि
 कनाकयवत्ताचयादि
 सुगवाडंस्याधामानःसु

रिक्कविद्वारायसंयः
 रिक्कवन्यगुदाकनवस
 खसंनिषर्षु॥देवगिः

या इल न ॥ चषा कुपत्ता चय धर्म लाल का धा प्रनिग म्नी नडिन स्य (गा वं सं) पूरु पला सारु म सूर
 व तं सं शु न्द वा डं स न कं का गः य न ॥ व न्दि त्वं पा दो व न ना चय स स सं रु वा वा ड
 रू दं वी नि ॥ द (ग दि म पू लु भ गो क व कु स व र्णु प ला सारु म सूर व तं अ धि वा
 स यि स व न ना चय थ वा रू थ न सो व स सं रु व स्या ॥ सः व रि सा द मि क ला क था
 मो य द र्पि ना व व रु द व ना ॥ व स धा य द (ग य न म वि गि र्द व त्ना द क गं व ड ला न्दु सि क ॥ पू षा व की

१०३

धु व व लीं स रु त्ता न शा स न या प न दान व न्द ॥ स म लं रु नं वा ड न दा स नं च ॥ रु ने धे डे य ४ स द स न के
 ना ना वि चि रे व न पू षा व न्द ॥ १ ॥ जू षा वि य वा ड न दा स नं च द वा थ ना गा थ स कि
 त्र ना थ य क्ता थ य रु द स दा व ना थ दि यो थ मा न्दा व व पू षा व ये व स्या व की व किः
 न दा स नं च ॥ अ वि नि या नी य न स न स द स का टी या थः आ ग ना द व रु वा य का मा अ
 रि नि धु मि त्र व न ना च यो दि ॥ अ र्था कि य थं नि व सा व पू षा ॥ सा वा पि व त्ना चय ध र्म लाल क १३ रु नः

गुरुः शुचि वसुध कः ॥ उय संकमि त्वा न दा स नं दि क्ता ॥ अति ह त्व न म स्य क व ॥ द व न्द द वा नि च द वः
 नि नि मा न्दा व व पृ ष्ठा य व र्ष यः
 नि नि क्त म अ न्क वी क्ता ॥ अरिः
 हा ध क ॥ अ न्क स वि त्वा द ग स
 स त्वा न क्ता यं अ नि त्वा का वृ थ वि रुं स म्पा द य त्वा ॥ बा ह्म थ न स्या पि स सं ह व स्य प का गि नं स वः

नि ॥ अ वि नि या ह्म यः
 वृ दि त्वा च स सं नि व र्ण
 दि ग्ता स अ वि नि या व

ग न स द्वा नि य वा द यः
 व त्ता च्च या रि क्ता ॥ स व र्म
 द्वा स द्वा का टि य ॥ स र्च व

१००

मि दं न द न्क व ॥ क्ता अ ति ह त्वा नि दि त्वा न का य वा वा म न्क आ दि न न ॥ स द्वा र्म व ग्ता थ प
 म्क न्क ॥ यी नि स द्वा र्म स व
 वा वा ज न द न्क व ॥ अ दि त्वा
 व ॥ व र्ष च्च अ य न्क ज म्क दी य
 ज म्क दी य स र्चि ना थ र्च य नि म हा व ना थ ॥ व र्ष च्च दी य पृ थ व र्षि ना नि स द्वा नि व त्ता नि न द न्क व

द्वा का य ॥ अ म स्य स
 वि ना म नि वा ज व त्ता स
 स स प व त्ता नि व र्म सः

व स य पू ज ना र्थ स सं ह
 त्वा र्थ द्वा ॥ य नि वि च का
 ता नि ॥ थ च द्वा स त्वा र्च व

॥ कयमदावाववकृत्तानि ॥ अन्तानाकानिवसन्नानि चैव दृष्ट्वा चरं वाजसंरुवथ प्रत्नाय वर्ष
 यत्तु जम्बूद्वीपा ॥ चत्वारिद्वीपाः ॥ यानि सत्त्वपूषु निर्या
 न्या ॥ अहं च सगायमनिरुथाः ॥ गतः संरुवा नाम वरु
 वसन्तानादा ॥ चत्वारिद्वीपा
 यारिद्रसप्रमहानकः ॥ यनास्य वाजसंरुवथयकागिरं सुमिदं तदनेय ॥ यत्तु गतं सुमि

१०६

दं नदा पूवाचकायवायामनूमादिनं चरने वमं कृगलन कर्मणा नानूमादन गतं नरन सुवर्धुव
 लुगन पूषा लक्रं ॥ सः ॥ यिकायं यियदभनं सदा ॥ नयनाहि वा संजनकान्कदभ
 नं वनिकं वंदवसदसुकाः ॥ दिनां ॥ नवान्न वं नवनि
 चक्रवर्ति ॥ अनेककृत्यः ॥ गतसदमां यकोदवाज
 कस्य वरुवगकः ॥ नथेव वक्रुपगान्कमानसा ॥ अवागिनामदगवसापमयाथेषां पमानं नकदा

चिविद्यन ॥ नथापममं वद्वपूथस्तु नंयमशुनं चानूमादिनं वयथा रियायनिवा विषाकास धर्मका
 यं वमयादिसप्तमिनि ॥ ३
 ऊसं संखवपवर्त्तनाम
 शिक्कीमहादविननसाध
 नागनय रूप्य नानां वृद्धानां रुगवनां अचित्तां मदनीं विपूसां विमुर्त्तुं सर्वपिक वं ॥ ४ पूजांकः

॥ वाङ्मि
 ॥ वायुः
 कृतपूजां वा कृतद्विना

सूत्रपुत्रासारुमसुवृत्ताः
 देगशा
 वाजुः
 वाङ्मि

१०८

दुकामः ॥ स्यात् अनीनानागनय रूप्य नानां रुगवनां गम्भीयं वृद्धाणां च वं य विह्वलु कामा रुवत ॥ नना
 वधं ननुपद (ग) विदाय वाजुन
 गार्क १५ का गमि ॥ ना वि क्रिफः
 सूत्रपुत्रा ४ ॥ अ न वा ४ ॥ ६ ॥
 निदीयमानरुसां वसायामि मागथा अरुष रु ४ ॥ य ६ ॥ रु सर्ववृद्धानां पूजांक रुमचि क्रिया ॥ गम्भी

वायुद (ग) वायथा यं रुः
 चिरुना वित्रदिन (ग) रुः
 अथ खलू रुगवानिमम

वलुपुत्रासारुमः ४ सूत्रपुत्रः
 नायसूत्रपुत्रासारुमः ४
 वाथरुयस्यामारुयासंपः

वंसर्ववृद्धानां (गाव वं पञ्जानि दुं) ॥ सच यश्चाय संकम्य विदा वं सयं तथा ॥ याव दगीय न सूरुं स धुपु र्ग
 साकम मिदं ॥ अचि न्किय मिः
 म न क ३ ४ ख सा ग वा न् ॥ अ
 ग म्नी व सूरुं म द मान स्यः
 ग ॥ न वा न व न स क स्य कि शि क्क का प मा रु नी ॥ ध र्म वा रु य का ल न य व द्द वा न् न द न वं ॥ य

दं सूरुं अ न नं शु ष सा गः
 दि सूरु स्य य ग्म मि अः
 न वि श न ॥ न गं गा व ऊः

वं ॥ मा य कं स र्व स र्वा नांः
 ध र्म नि ध नं तथा ॥ अ नि
 सा र्थ व न्न व न् ध न साः

११०

व ध र्मा त्म क सूरुं ग म्नी वं स प नि छि नं ॥ न रु व र्ग य म (ध र्मिं य ल्) का क मू निं डि नं ॥ दं सूरुं प काः
 गं म ना रु न स व ष च ॥ या व
 मा नू य का ल् वा व सूरु वा नि यः
 न ॥ न व म चि न्कियं म सं पू षः
 स दा रु नं ॥ यः स क्कु ति नं सूरुं स द न व द नां रु गं ॥ स म न व य नि छ स्य वि दा वं स य नं तथा ॥ अ य

नि क ल्य का द्या वे अ सं
 नू र्ग य न ॥ य दा स न व वि
 क न्चं स मा डि नं ॥ अ क

ख या अ चि न्किया ॥ दि वा
 जा नी या य न सूरुं शु षी यः
 म या ऊ नं ग नं पू र्णु म निः

गच्छति पापानि सर्वदः स्वप्न लक्षणं ॥ यदक्रुषी ज्ञातु काश्वादेव ददावृक्षा ॥ समन्तत्रयविद्यया सर्वदा
 निपना दूखाः ॥ तादृगं ज्ञासः न ननु क्वी नयद्वा सति ॥ १११
 विरुं सुपि नो नय ॥ ननु सभाय विदुः सन् दं सन्तु य का
 वरुथे वपय्या वापू या न अत्र मीया सना देव अनाद ल
 दार्था भिन्नता सन गगानि च ॥ धर्म स्तन क नृपं च कदा चिरु गृह्यत ॥ कदाचि वृद्ध नृपं च वा वि सत्तः

कदाचन ॥ समन्त रूढ नृपं च कचित्म श्रुणु यस्तथा ॥ कचित्मे वीय नृपा निदृग्थ न ननु आसनं ॥ क
 चित्केवल माहासं कचिद्वरुदः ॥ ११२
 संसिद्धि कत्रय ग सं वृद्ध ग सना ॥ य नं मा ऊ सं स मा त्र स ग म
 सर्वयग सापू वयिष्मि ॥ सर्वे च विप वरु स्य निर्जि ग लाः
 सदा स्तानि सर्व पाप विवर्जित ॥ सदा विजित सं ग म श्रि या स च य भा द नि ॥ वृद्धा कि द ग न्द्रा श सा क पा

दिवावागुवमंदिनाशा मदावसेययक्रन्देनावायनमदश्वयो॥ अष्टाविंगनिश्वाप्यमसंऊयपसूखानि
 वा॥ यक्रगनमदश्रिचिदि मरुमदावसे॥ नषांन क्राकविष्यनिमर्वनासूथय
 वा॥ वऊपातिथयक्रन्दः पंचयक्रगनवयि॥ सर्व रिवाविमस्येहिः नषांनक्रांक ११३
 विष्यनि॥ मागिरुदथयक्र न्दः पुर्लुदसूथेवच॥ कृष्णागकथेवयिंगलश्रः
 मदावस॥ चकेकथयक्रन्दः पंचयक्रगनवृग॥ नषांनक्रांकविष्यनिथहिः सूत्रमिदंश्रुनं॥ विगः

सनथगन्धर्वाजिनवाजाजिनघरु॥ मनिक्लानिकृष्टवर्षाविपमित्रवच॥ मदायामामदाकालः
 स्रुक्कगीरुथेवच॥ पांथिकः ऋगलपादथमदाखग
 सथकर्मदावात्रिवच॥ श्रुति नामः सूर्यामित्रात्रलक
 मकूलः कामणम्वथचन्दन॥ नागयत्सादेमवकः सा गसूथेवच॥ मदायलसी
 दिमन्मदावसपवाजमाशा नषांनक्रांकविष्यनिथषां सूत्रमिदंथियं॥ जूनवनफदिनागन्दः साः

गत्रापिनेथेवच॥मृचिलिन्देसपुकोचउरानन्दापनन्दको॥नागगरसदमृहिरुद्विमहिर्मदावसे॥रु
 षांनक्रांकविषानिषांसुमि दंषियं॥अनवरुफदिना (यन्नु॥सागत्रापिनेथेवः
 च॥मृचिलिन्देसपुकोचउरान न्दोपनन्दको॥नागगर सद्मृहिरुद्विमहिर्मदाव
 से॥रुषांनक्रांकविषानिसर्व नाहयरेसवान्॥वली वाङ्मृचिश्रवमचिरुधः
 संवत्र॥पद्मादःखत्ररुचयनधानासासुवाविषा॥असूत्रगेनसदमृहिरुद्विमहिर्मदावसे॥रुषाव

११४

क्रांकविषानिउत्पानरुयरेववान्॥दात्रीनीहृन्मामाचपंचयुगभनेवपि॥रुषांनक्रांकविषानि॥सफ
 मरुस्त्रिगानिच॥चलुवधुलि कार्येवयकृषीचष्टिकान था॥दनीचकृमदनिचसः
 वेसत्ताऊदाविधी॥अमसर्वश द्विमन्मामदावसपवाक मा॥रुषांनक्रांकविषानिस
 मन्नेनवदुदिग॥सत्ररुनीः वपुमृखादवनाचयः चिनिया॥रुषासपुमृखाव
 वंसर्वानिदेवगानिच॥एथिवीदवनायेवरुलगसाविदवना॥आवामरुकेरुपानिवासिन्धानदीद

वना॥ रुसर्वदेवता संद्याः सुपदविनसा॥ रुपां वक्रांक विष्णुनि यथां सुगुमिदं पियं॥ या ऊय निव न सखाः
 नायवर्षु वसन्त॥ श्रीपूत कं
 य सर्वरुग मय निव॥ अलः
 वना ये वग श्री वाय मदा वता॥
 सदा सा विगता निधाऊ न निव॥ या वद ऊन ल स्त न वद न पृथिवी वसे॥ पृथु वग न या ऊ नं पू व लाना

लक्ष्मी विष्णु निरालं क
 श्री पा पद ४ स्व प्रं सर्वः
 सुवर्षु पला सा रु म सु व

यानि व॥ गुरु न क्र गयी ज
 रुता गय निव॥ पृथिवी दः
 लु व स रु पिता॥ अरु व द्धिः

११५

नाऊ २

निवर्तु नि॥ उर्द्ध सदन ग म दी ०० नः सुगु व द मा व लान्॥ सर्वो थ द नानि व द्या टि कृ या व स्ति ना॥ सुव
 र्षु पला सा रु म सु व लु व स रु पिः
 निव ना॥ सुख न पी नि ना रु नि
 वन देव ना॥ पद वि ना रु वि ष
 व क सु मा नि व॥ वि वि ना ४ रु ल व का थ वा द य नि स म न रु ४ स वा नि रु ल का नि आ ला मा नि व ना ३

ना॥ अऊ व न न मा रु
 नाना व स स म पि ता॥ स
 नि ०० रु सु ग य का ग न

नि ल नि ल लक्ष्मी वी य वे ला
 व रु ऊ म्बु दी य सिं रु ल ग स
 ॥ ग स्या नि रु बा न्य व वि चि

निव॥सूर्यमंकरिष्यन्तिनानागन्धपभादिनं॥विचित्ररिष्यपूष्यरिष्यविचित्ररिः॥रुसेत्रयि॥सर्वसू
 धवनस्यरात्रादयन्तिमदिनसं॥सर्वगुणमूदीपसिंहा॥गकन्याअचिन्तिया॥यद
 स्रष्टुमसाद्रुगाः॥पद्मिनीसूर्यः॥संकुसमा॥त्रादुक्तिविः॥चिन्तासिर्वासूर्यपद्मिनीच॥११३
 पद्मकूमदोत्पत्तानिचपूष्यी॥कास्तुथेवच॥कुमाव॥जातिनीमकंरुवकगगनं
 गुरुं॥रमावजाविनिमूकंदि॥गान्धियरास्यवा॥सदसुक्तिवलेवभिक्तासनसूर्यरु॥गम्भीयक्ष

वरासनदुर्विगत्थादयिष्यति॥जम्बूनदसूर्यवृत्त्यविमानान्नवसंस्मिन्॥सूर्यन्ददवयुगाश्चरुन॥स
 तात्सुगयिगः॥उदयन्तिजम्बूदी॥पसुनन्दसंपदविगा॥३॥जननवस्मिन्कासनमोलास
 गांसमन्तुन॥सदवाविगमाके॥लवस्मिन्कास्युत्रादन॥३॥नानापद्मिनीसंकुत्ताकमला
 वावयिष्यति॥सर्वगुणमूदीप॥सिंहानागस्यरुसोवधी॥पविषाचयनिसम्पत्कानयः
 यकनदि॥चन्द्रसूर्याविगोषक्षज्वरासगांनदन्तव॥समायदुक्तिनक्रुवावाकवर्षन्थेवच॥सूरिं

अमनूषाणां च वृद्धा रगवां॥ यावरु सारुगवत॥ सुवर्णु वत्ताक वच्चु कूट सारुगवत स्यादेत ४ सम्यक् समुद्धः
 सपविनिर्वृत्तस्य सद्धमान
 यं नृपक तु नामदात्रक ४ न
 सुवर्णु का अनाहाना मः
 सारुगवत कां च नावहा सारुगवत स्यादेत ४ सम्यक् समुद्धः सपविनिर्वृत्तस्य सद्धमान सर्वे सर्वथा सर्वे न सारुगवतः
 दिन न सर्वे न सर्वे सर्वथा
 सारुगवत स्या न संलोभ
 कथा गमा इह सम्यक् समुद्धः
 सर्वे न सारुगवत स्या न दिन स्याः
 केव विवर्णु वच्चु साक वामी सुवः
 द्वा साक उत्त सारुगवत॥ यावरु स

११६

न स्या यं नृप पलादात्रक ४ न सारुगवत स्या न संलोभ केव विवर्णु वच्चु साक वामी अनुरु वां सम्यक् समुद्धा विम
 हि संलोभ सारुगवत॥ सुवर्णु गवतः
 उत्त सारुगवत॥ विद्या च वध सम्यक्
 स्मा देवा ना अमनूषाणां च वृद्धा
 सारुगवत ४ न सर्वे न र्णीरु द न रगव वं क स नान्क व न आ वा ज य मुखानां द ग नानां देव पू ग स द मा भां॥ यावदि स्त्री शुभ
 ग्मि पलास ग र्णी नाम कथा
 न ४ सारुगवत साक विद नः
 रगवां॥ न सर्वे न दिरु
 गमा इह सम्यक् समुद्धा साकः
 रु व ४ पू व द मा गा वधि ४ ग
 ग नानुरु वा यां सम्यक् संलोभ

विसन्वयार्थाञ्जुवन्॥ नषदूपावमितासपूर्वचत्रिकवन्॥ यत्पूर्वाञ्जुवन्॥ नयनचत्राक्षरुमाञ्जुपि
 यपूर्वार्थाद्दिक्त्र॥ यत्रिष्य
 कवज्वेदुर्थागंखगिसायवाः
 यन्॥ नानात्तपानवमुयनगयः
 पूर्वानश्रयन्॥ नानादक्षिणाश्चवदासीदासाः यत्रिष्यकपूर्वानश्रयन्॥ यथातानभकानिवाविसत्त्व
 कपूर्वानश्रयन्॥ धनः
 लज्जानयत्रजनमत्रकः
 नासनरुवनविमानावाः
 भान्नादित्रयसूत्रधुमनिमूः
 कत्रत्तानिपत्रिष्यकपूर्वानश्रयन् ॥ १ ॥
 सपूष्कित्रिनीकगाः यत्रिष्यकः

काटीनियुक्तगनसदृशाभिपूर्वसंख्ययकल्पकाटिनियुक्तगनसदृशभकानामसंख्ययतथागनकाटीनियु
 क्तगनसदृशाभामभकाचिन्त्य
 त्रिष्यन्ति॥ सर्ववर्धुपत्रिष्यग
 र्थाद्दिक्तापत्रिष्यगानिः
 खगिसायवाः यत्रजनयानिपत्रिष्यगानिपत्रिष्यञ्जुनि॥ अत्रपानवमुयनासनरुवनविमाना
 नानाविचित्रेऽयुजागत
 निपत्रिष्यजिष्यन्ति॥ कत्र
 कत्रिष्यन्ति॥ धनभान्नादि
 सदृशेऽसर्वोपकवलोऽयुजांकः
 वत्रजनयनाक्षरुमाञ्जुपिययूवः
 त्रयसूत्रधुमनिमूकवेदुर्थागः

तामाद्यानप्रक्षिप्रिलोदसिगवाश्ववउवादीसीदासपविष्णुमनिपत्रिष्यन्नि॥ अन्पूर्वमवद्यावमिताऽपत्रि
 प्रयिष्यन्नि॥ अन्पूर्वमवद्यावमिताऽपत्रिप्रयिष्यन्नि॥ अन्पूर्वमवद्यावमिताऽपत्रि
 नूरविष्यन्नि॥ यावद्वद्वशा
 नूनरुदकुरुदकुरुगवन्द
 कौवनाकवगवाजयमुखनिदगदवपूखसदमासीदरुगवतानिकवर्माश्ववलायापसंक्रमन्नि॥ नान्य

प्रसिताऽपत्रिप्रयिष्यन्नि॥
 रुगवडाऽरुथागरुनामः
 कुनाकेनकावलेनकीद

अन्कानिसूखगरुसदमासिअ
 वयंवाकवमंयुक्तिनपान्क॥ नः
 गनारुयकृमलमूखनवतानि

120

रुदिरुगवतानूरुवायांसमाकम्भाओवाकृतानि॥ यद्वतानागरुचन्यनकाशसूखयकलाकादीनि
 यूरुगरुसदमयुक्तिकान्कपूः
 नामत्वयनान्पूर्वमानूरुवांसः
 कृतानामादगदिकुरुदगवूदसः
 साकविधानूरुवाऽपूवदमासावथयऽगास्तावायवानांचमनूयानांचवूदरुगवन्क॥ ० ॥ चवमूक

रुद्विगालन्दुधजागवः
 मयकम्भाधिमरिसंरुत्ता
 दमानिसाकेउत्तत्यन्क

सांसाकनीचककृतगाशुक्
 न॥ यमत्तवदनात्यनगन्ध
 विशाचवमसम्यत्ताऽसूगताः

रुगवांसां वाधिसत्त्वसमर्चयंकूलदवनाभनदवाचन ॥ ० ॥ अस्मि कूलदवनसद्वुवसि कल्पालनं अस्मि
 नदपंकुगलमूलं यसा कूलत्वाद् पश्चिन्त्वा दनानि कालना नवमजावाजयमूखानि दम
 दवयूनुसदमासि नरदिनयविं गरुवनादिदधर्मशवना थायसंकुमानि ॥ नरवांनुया १२१
 नांसस्युवृषाभां दं वाधिसत्त्वया कवमंशुत्वासदशवलेन कूलदवनसुसुवर्णयुगः
 सारुमसासुनुवाजसानि कचिती कावपीनियसा दयनिलया रुवनि ॥ नावविमलवैदूर्यसदशन

यत्रिथुद्विचिरुनसमन्वागनारुवनि विमलविपुलविस्तीर्णुगगलकल्पसदशनगम्रीवमचिरुयसा दन
 समन्वागनारुवनि ॥ अस्मि विमिनं चपूथस्वचं यत्रि गृहीतवन्तारुवनि ॥ नावत्रैल
 दवनकूलनानवकडाः वाजयमूखानि दगदवः पूनुसदमासि सदमशवलेनासा
 सुनुवासानि कचिती कावयसा दयनिलया रु वनि ॥ नावदिमलवैदूर्यसदशन
 नयविथुद्वनचिरुनसमन्वागनारुवनि ॥ यावद्या कवलमनूपाफा ॥ अन्ननकूलदवनधर्मशवनकगः

समस्तोपचयनापि पूर्वपुनिधानवर्गनेगानि कलना नव न जावा ऊपमूखानि दगदव पूरु सदसा निमये क	वा कृगानि ॥ करमानि च	कलदव न पूर्वपुनिधानानीनि ॥
अनुरुत्रायां सम्यक् संवाधो	पुत्रा साक मसू नन्द वा ऊद	गदव पूरु सदसा वा क वलपविः १२२
॥ वा ॐ नि सु वधुः	॥ ॐ ॥ सुग पूर्व क	लदव न इध न संखय न लेवि पूः
॥ वा वरु ४ वा उग	॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥	लेवि च नो वपमये ॥ यदा सीरु नका ॥
॥ ॐ ॥	॥ ॐ ॥	॥ ॐ ॥

मूढा ला क उत्यत्त ॥ विद्या वचन सम्यक् ४ सुग ना ला क विद नरु न ४ पूव द म सा वधि ४ गा स्का दवाना ४ म न	नूपन ४ कलदव न का लन	न न समय न क सारु ग व ना
षा सां च वृद्धा रुगवान् ॥ न न ख	सम्यक् मूढ स्य पविनि	वृत्त स्य स धर्म स्या न्दि न स्यः
वत्त गिखिन रुथा ग रु स्या दे न ४	वग्ध वयु शे नाम वा ऊ वरु	व स्य वा रु ४ स य ध व य रु स्यः
सद्धर्म युनि वृप क वरु मा न सुः		
ऊटि च याना म (रा) शी वरु व ॥ वेय ४ वि कि न्ना क ४ प व म वा यु कृ ग ल ४ मूढा (ज) ना यू वे य गा रु न सम न्वा गः		

भावद्वय ॥ मनखलूपन ४ कलदव नकासनननसमथननस्य ऊटिन्वय स्यात्थिनाऊलवादनामा (ग) क्षीपूः
 कुउत्तनावद्वयविरूप ४ पासा दिकादगनीय ४ यत्रमया गुरुवर्तुपूकलनयाममनाः
 गगनानागा सुकगल ४ सचैगाः सुगनिंगनालिपिसंख्याः गगनाकगल ४ सर्वगित्तीवख
 वा ॥ मनखलूपन ४ कलदव नकासन नननसमथननस्य वाहूः सूत्रग्रन्थविषय ३ नकानि
 सत्त्वगनसदसागिनानायागस्य दानाखवन् ॥ नानायाधियनियीठिगानिद ४ खांतीखाखलीकदूकाममनार्या

१२३

यदनां यदयनि ॥ मनखलूपन ४ कलदव नकासनननसमथननस्य ऊलवादनामा (ग) क्षीपूः स्य गवां जून केषां
 सत्त्वगनसदसागिनानायाग सृष्टानां नानायाधियनिः पीठिगानां सत्त्वनामर्थाय यत्रम
 कावृत्तं विरुमत्यज्ञां वद्वय ॥ जगान्यनकानिसत्त्वगनः सदसागिनानायागस्य दानिनाः
 नायाधियनियीठिगानिचन दिद ४ खांतीखाखलीकदू काममनार्या यदनां यदयनि ॥ ३
 ज्य ४ ममयिनाऊटिन्वय ४ (ग) क्षीवेशयिकित्साक ४ यत्रमवागुरुकगलाइहा ज्ञायवैशगामु ४ समन्यागगावृ

क्षाडीर्मुमदल्लकाइश्चगगावधानूपाफाडीर्मुमवद्वयपवयमानकाशायद्विमासम्वायवयवसर्वकुयामन
 गवनिगमयाद्वुवाडवानीद्वयसंकुमनि॥ननान्यनका
 सृष्टानिनानायाधियत्रिपीठितानि॥नानायाधिरूपः
 वयिगवंडुटिचत्रमूपसंकुमितायाधिकोभसंयत्रिष्टः
 सृष्टनादंसर्वकुयामनगवनिगमऊनपदवाडवाडवानीषूपसंकुमिष्यामि॥उपसंकुमनान्यनकानि

१२४

सत्त्वगनसदमासिनानागसृष्टानिनानायाधियत्रिपीठितानिनानायाधिरूपःपत्रिभाचयिष्यामि॥ननखल
 कलदवनकासनननसमयनऊनवादन॥यष्टिपूनाथन
 पऊगामा॥उपसत्त्वपिठुडुटिचत्रमयादीगिबसावन्दित्वा
 नैस्सकनकास्तिगाऊलयादन॥यष्टिपूनु॥सपिनवंडुटि
 वाडुकोभसंयष्टुनिसा॥रानीद्वियानिलक्रनपत्रिबर्कनिषागव॥कनकासनजायनैवाधयथगवत्रिः

ॐ॥ अजन्तकथं गुह्यं कासकाससूखावदं॥ यनान्नत्रगत्रीयस्य कायाभिनायदत्तं॥ कथं चिकित्साकर्तव्या
 वानपिरुश्रुमिकमथा॥ सत्तिया कसमस्य स्रकथं व्याधियः॥ गान्ध्या॥ किं कासकृपाकवान्
 पिरुंयकृपाककदा॥ किं कासकृ पाक(श्रुपायनपीश्रुनिः॥ मानवा॥ ॥ ॥ अथ खलु १२५
 ऊटिचत्र॥ अश्रीजसवादनस्य॥ श्रियुक्तसारिगंधादिभिरु को गलं विदित्वा दगयनसमा॥
 वर्ध्यावकुन्यामासा॥ अथ यथावदं स्मृतं॥ अथ स्रुथेव दमनसुयश्रुगीषिकस्रुथा॥ ॥ ॥ यवमासकम॥ ॥ ॥

इति संवत्स्रं द्वादशमासिकं स्मृतं॥ अलं च यानं च तथा जीर्यनयेनाथ को गलं स्मृतिपदगिमा॥ नवापिसं
 वत्सत्रयवमनत्रयप्रिवरु निद्रियवावापि॥ पप्रिव वेयसावतु॥ एकावन्तिमा रुमानाचरुद्रियाभिविचिनुवा
 विरुवकगत्रीविष्ठां॥ नकुव वेयसावतु॥ एकावन्तिमा सर्वेषान्नत्रयदृष्टनि॥ षड्वातु
 को गलं पुजानिनवां॥ यथा कसं रुजन्मोषवैवा॥ ॥ वानाधिकाया॥ एतवनिवर्षपि
 रूपकाय॥ अत्रापि सत्त्वा॥ दमनकासकथसान्नियामंकरुधिकावाश्रुवनिगीषा॥ सिग्धास्रवनास्र

त्रसांयवर्षगत्रस्तृग्वंमध्वंरुगीर्ष॥मध्वामसिग्वंरुदमन्कासत्रकापुकदकानिचयीषाकास॥क
 रुधिक॥कृपानिचुकमाः
 रुमाकुः॥सयधुमिनय
 वरुनंर॥किरुलापयत्न
 वाताधिकंरुकिरुसत्तिपाककंकरुविकंसर्वसुजातया॥यत्कात्रयकायुयदाययंरुदन्नपातोषः

रुयिरुविक॥कृपानिजी
 पुकाप॥संवृदसंकुर्वः
 वरुथसत्तिपाक॥पुग

येमात्र॥वाताधिक॥कृपानिजी
 निवात्सकस्यवित्रयनेपिरुवि
 मश्रुकरुयात्करुयवमन्त्र॥

१२३

विदग्धितयामिति॥ ॥अथखलुजलवादनशुद्धिपू॥कनेवत्रपमनेमिरुिकनधातुकोमस्य
 नपविष्टनसर्वाश्चाङ्गायू
 समथजलवादन॥शुद्धिः
 वागनगत्रनिगमऊनयदवाः
 आक्षान्नानागसृष्टानानावाविपविपीठिनामभवमाश्रमासमाहृष्टवशास्मिन्वशास्मीनिज्ज्ञानंय

वदमविगमाश्चरु॥नन
 पू॥कनेवत्रपमनेवत्राः
 हृवाऊवानीषूयसंकुमिः

खलुपू॥कलदेवनकासननन
 ह॥सूत्रश्रवणरुस्यविषयसर्वः
 त्यासर्वेषामनकषांसत्यगमसदः

निहानवान् अदंयुष्माकं नानायाधिपयिष्यमिष्यामि॥ सदृशवत्सलकूलद्वयकनसाञ्जलवादनस्य श्रियः
 कस्य नृदभवेत्पवचनं वाद
 विमदापदयजानानिहवृषा
 वरुवृषा नानिकनकासनमः
 निनानाभागसुखानि नानायाधिपयिष्यमिष्यामि॥ अगानि वरुवृषा नानिविगक

वमानस्य सर्वाभितान्यन
 आश्रमयोधानि॥ अविनो
 मयननयायदययानका

कानिसत्त्वकादिनियुक्तगनसदृशाः
 नयीनिमो मनस्यनसमन्तागतानि
 निसत्त्वकादिनियुक्तगनसदृशाः

१२१

वाधीनिवयथापोवा (नस्मस वलवीर्यसमन्तागतानि वरुवृषा कनखलूपन ४ कूलद्वयकनकासनन
 समयनरुषामनकपांवरसत्त्व
 त्रिपीठिनानांय कचिकुगाः
 वरुनापसंक्रान्तउपसंक्रः
 नाभागसुखानां नानायाधिपयिष्यमिष्यामि॥ अगानि वरुवृषा नानिविगक

कादिनियुक्तगनसदृशाः
 रुनयलस्यस्तववृषाक
 मोवयत्रकिंचिन्नपांसत्वा

नानाभागसुखानां नानायाधिप
 सर्वथनञ्जलवादन ४ श्रियः
 कादिनियुक्तगनसदृशानिनाः

॥ अथ खलूपनः कलदव न कलवादनः (श्रद्धि पूजा सांदायका सांसाद्वमन्यूर्ध्वमथामनगत्र
 निगमजनयदवायुवाजवा नीचनयंकमकिसा ॥ ॥ अथ खलूपनः कलदवः
 कश्यपमकायमनममयन जलवादनः (श्रद्धि पूजा इना नयं मठवीका नाययाः
 फाथनिददभाना नयमांसर कावृकष्टगालकाकय क्रिधः नादिगं वावन्नि ॥ यः
 वाटवीका नाय जूटवी संरवायूचि विनी ॥ नट द्वा न सो नट द्वा ॥ कस्यार्थमिममं सर कावृकष्टगः

१२८

लकाकयक्रिधः नादिगं वावन्नि न सो नट द्वा ॥ यन्नूनमदं नादिगमयमं कुमयं यसांदिभीममांसरः
 कायवृकष्टगालकाकयक्रिधः वावन्नि ॥ अथ ख
 नः (श्रद्धि पूजा इन्यूर्ध्वमानयः कमन्ननृविप्रयनयका
 याकः ॥ ननुमदायूचि विन्याः दगमत्समदसाधियनि
 मत्सगमानि ॥ जलविषदीनानिगतासाकायूचि मूत्त नं नगाडा क्रीदककायां देवतां निक्षुमनी ॥

सा देवता ऊल वादनं शिवाय कभकदवायक ॥	॥ साधु साधु कलपूय स्रजल वादनानाममस्त्याः	
नामूदकं यय ॥ दासां काव	॥ सां ऊल वादनं ॥	॥ यथा दकं वादयति ॥
नरु ॥ सनामानूयं कच ॥ ऊल	॥ वादनं ॥ पाद ॥ कीयनी	॥ मानि देवकमस्त्यामि ॥ १३०
तायाद ॥ यत्रिपूनिदगमः	॥ स्रसदसाभि ॥	॥ अथ खलूकल देवक ऊल वाः
हनस्य शिवाय कभक स्रसदसाभि ॥	॥ कन खलूयून ॥ कल देवकममय	

नाटवी संरुवायां पृथ्वि धां किं चि स्माजमय निष्टमूदकमदक ॥	॥ मानि देवकमस्त्यामि स्रसदसाभि मृगमूखः
॥ विष्टनि ऊल विष्टदीमानिः	॥ धावनि ॥ ॥ अथ ख
शिवाय कभक शिवाय कभक ॥	॥ यसां दिगि ऊल वादनं ॥
सादिगि दगमस्त्या स्रसदसाभिः	॥ ऊल वादनं कच ॥
ऊल वादनं ॥ शिवाय कभक शिवाय कभक ॥	॥ ॥ अथ खलूकल देव

गंधक न॥ सादा क्रीत्ना मिदं प्रमदानं वृत्तं समं दं गं वृत्तं सति वृत्तं मुम गं वां छि त्वा य न सायू वृत्ति नी न
 नाय ज ग माय ग मा न वां द मा ३ नां म त्प स द मा लां दु ३ म मा स्वा रि ४ सु गी क ना च
 वां क न वा न ॥ ॥ अथ खलु कृत द व न ऊ ल वा द न ४ य वृत्ति ला उ द का ग मं प य १३
 व न कृत उ द क सा ग म नं रु व न ॥ व रु दि ग धा वा नि न यो द क म प ल ल न ॥ स गी र्ध
 गी र्ध न द व ला न म म नू ग छ नि ॥ न सा ख ल यून ४ कृत द व न अ ट वी सं रु वा या ४ य वृत्ति ला उ ला ग मा

ना म म न दी य न रु सां उ द क सां ग म नं ॥ न न व स य न सा न दी अ न न थ ल पा य स त्व न न वां द मा नां म त्प ३
 स द मा ला म र्थ न सा न दी र प द र्श न म द पा य न पा नि ना ॥ य रु वां म त्प ना न रु यः
 उ द क सा ग म नं रु वि ष्य नि ॥ स गान्द द्वा वि न य नि ॥ न ग व न उ वा न दी ऊ न स द स
 ला यि न ने व य था वा द यि तुं ॥ कि मं ग यून म र्थे क न ग व वा द यि तुं ॥ स य नि नि रु रुं ४ ॥
 ॥ ॥ अथ खलु कृत द व न ऊ ल वा द न ४ गी र्ध गी र्ध म प सं क ना य न वा जा स्र थ य य रु रु ना प ज मा ३

भायगम्यारुः ४ सूत्रयत्रपुस्तकस्य पादो गि न सानत्वा च कान्तिनिवर्तु ॥ ६० मां यदुक्तिमात्रा ययति स्म ॥ मयाः
 खसूदवस्तुविषयसर्वथाः मनगेवनिगमकनयः दवाहुनाजभनीषस्तत्त्वानां
 व्याधयः संरिक्ता ॥ ४ ॥ नृणां मृषिंस्तु नष्टवी संरुवा नामपुस्तकविहीनमुदगमस्तु
 सदसुखिपनिवसन्ति ॥ ३ ॥ पुद्गीलानि ज्ञादित्यपत्रि नापि नानि ॥ नददातुमदवा
 विंगतिर्न जायते न चां गिर्या ॥ ५ ॥ निगमानां जीविने न दामीनि ॥ यथा मनुष्या लांद र्हे आरु फे खलनाः

१३२

हास्ययत्रपुस्तकानामाख्यानानंददत्तमहावेशाजस्य विंगतिगजात् ॥ आमाखा आद्र ४ ॥ उपसंक्रममहा
 सख्ययनदस्तिभासा ॥ ३ ॥ उप गृहीतवविंगतिगजाः कद्रुसत्त्वानां सुखं ॥ ॥
 ॥ अथ खसूकृतदवगजः लवादन ४ स्य द्वासां व सनजसगरुनयस्वपूनेष्विः
 गतिगजां गृहीत्वानागः मोक्षिकानां सकाशात् ॥ गतेऽष्टादतीनां पतिगृह्यपः
 निनिवर्तु ४ ॥ यत्र जलांगमाना मम हानदीपवदनि ॥ नृणां यसंक्रम्य दकननादती ४ पूयित्वा गजः

एष उदकमायाणीयं यनादवी संरुवापूक त्रिभोक्तनाय संकान् ४ उय संकुमा तद्दकं दक्षिण दव का
 र्थमां पूष्क त्रिभोक्तुदिगं उ दकनपूत्रयित्वा चतुर्दि गं वं कुमनि ॥ यन ऊन वा दना
 नूचं कुमनि कननन दगमः त्वा सदसामि अन्नावः ॥ ॥ अथ खलू कुल दव १३३
 कजलवादन सो कदरु वरु ॥ किमर्थमना निदगमस्त्य सदसामि यनादं कनय वावकि ॥
 कस्त्यपूत्रय कदरु ग वरु ॥ नूनमकमस्त्या ४ क्वाभिनाय त्रिपीठि ताममस कागा ४ ऊनं पविमार्गयनि ॥

यन्नूनमदं रजजनं पय क्यं ॥ ॥ अथ खलू कुल दव कजलवादनं रजजनं पय क्यं ॥ ॥ अथ खलू कुलः
 दव कजलवादन ४ स्वपूवं जला मन्त्रमकदवाचन ॥ ॥ गच्छ कुलपूत्र स्वकं निवर्गनः
 सर्ववत्सल वंदस्मिन्मरिचू अः चभीयुं श्रीयु मूय संकुमा पिनामदसा ४ अक्षिजव वद
 दं रजना कजलवादन वं वदनि ॥ यन किं सिद वरु दक्षि सं स्तुतं रजजनं स्तारु ॥ मा नापि
 शार्ङ्ग गुरु गिन्नादीसी दास कर्म कव स्य कुरु ग ४ सर्वमक व पिछी कृत्वा जला मन्त्रसा दक्षिण दमेव थाप्यः

ऊनवादनयगीर्णविमर्जय॥
यनसकंनिवगनंननायसंका
सा॥विस्तप्रलयथापूर्वकंनत्स
लूऊलाम्बगोदावकस्तुऊऊनं
हवापूर्वविनीकनायसंमकामर॥

॥अथखलूऊलाम्बगोदावक४दक्षिनमरिप्रमगीर्णगीर्णवावगिस्मः
मइयसंकभ्येतांपरुकिंः
यिनामदनऊलाम्बला
दक्षिपुष्टमूयनामगंद
यिनामदस्यायजगोवायामा
यविसर्जितं॥ ॥अथख
स्तिनमरिप्रमयनादवीसं
अथऊनवादन४सकंपूऊलाम्बगमागंददद्यादष्टमुष्टउद

१३४

यःपूवस्थानिकाऊऊनंपनिष्टश्चि
सदमासिसंनरिक्तानि॥यून
नरिक्तमहायानधायमान
मूदममप्रलकालसमयना
मदमघांमत्स्यानांगमूवीपुनीत्यसमूत्यादंधर्मदगयय॥

त्वाचित्वाकुरुपूवप्रिष्ठांप्रक्रियकिसा॥ननादाप्रलनानिदगमत्स्य
सुशोनदठवन्॥अनंभ
००॥यात्रत्तगिस्त्रिः
मधेयंशृयात्तसूगनीः
यत्रत्तगिस्त्रिनरुथागकस्यादक४सम्यकंमूः

यत्रलकालसमयनाप्रग्यायन
नरुथागकस्यादक४सम्यकं
लीकउपयत्तकमि॥यन्नूनः
यत्रलकालसमयनाप्रग्यायन

कस्य नाम त्वयं शययं ॥ न च समयन कस्मिंश्चिद्दीयं वा दृष्टिः ॥ स त्वानामहं ॥ कश्चित्महायानमरिः
 अक्षयनिकविक्लुगयनि ॥ ॥ अथ खलु पून ऊन वाः ॥ दनः ॥ एष्टि पून रुसां वसा याम्
 शीया दो जानू मानं नुयूक्कः ॥ विष्णं यव ल्प वं वा दानः ॥ मूदान यामासा ॥ नमस्तु सखः ॥
 गवता वत्त गिखिन रुथाग ॥ न स्यादेतः ॥ सम्पत्कम्पूक ॥ स्या पूर्व वाधिसत्त्व चर्या च वमा
 न स्य च वं प लिखानमहं ॥ यक विद ग सुदि क्क मत्र न काल समय मम नाम त्वयं शययं ॥ यूरु र्क न कथा त्याः

१३५

दवा नां नुयनिं गानां सखा गता याम्प यथ पू अथ खलु ऊन वा दनः ॥ एष्टि दात्रकः ॥ कथां निर्युत्थः
 निगता नामि सं धर्म न्द भयः ॥ निस्मा ॥ यद्वा सा नः ॥ दं रुवरा स्यात्वा दादि मूः
 त्यथ के ॥ यद्वा विद्या यरा या ॥ संस्का वं प रुयं विहाने ॥ यरयं नाम नू प य रुयं स
 जाय न न पु रुयं स र्गः ॥ स र्गः ॥ एरु या वदना वदना पुः ॥ रुया रु पू रुय य मूपा दान
 मूपा दान प रुथा रु वा रु व रु या जा नि जी नि पु रु या उत्रा म व ग ॥ कय विद व इ ॥ ख दो मन स्या या या

भारुवसं वमस्य कवलस्य महमा ३४ स्वस्व चस्य समुदया रुवति ॥ यद्वा विद्यानि या वासां स्कात्रनि याः
 वादिहाननि या वः विहाननिः या वात्तामय्यनि प्राध ॥ नामय्यनि या वा नुषजः
 यरुननि या वात्तामय्यनि प्राध ॥ सार्गनि या वा द्वेदनानि या वा ॥ यदननि वा नुषा
 ति या वः ॥ रुषा नि या वा इपाः दाननि या वः ॥ उपादाः ननि या वा रुवनि या वः ॥
 रुवनि या वा ऊनि नि या वः ॥ ऊनि नि या वा ऊनामय्यनि प्राध ॥ कयविदवद ४ स्वदोमनस्थाया सा निवः

१३३

या नः ॥ कवलस्य महमा ३४ स्वस्व चस्य नि या वा रुवति ॥ न्निदिक्ल दवननकासननसमथन
 ऊलवादन ४ एष्टियू कुरुपां नि या एष्टानि गनानामिमां धार्मिक कथां कथयनिमा ॥
 सार्द्ध पूजा त्यां ऊला मय्यन ऊल गरु नचयूनयि स्वगृ दमनूया फ अथायत्र नकास
 नसमथन ऊलवादन ४ एष्टियू नामदात्ता वयत्रिभुयाः मदासवमरु गयन गयि नः ॥
 ननवकास समथन मदानि मिह ४ या इह न ४ ॥ यरु स्या वा या अरुथन नानिदगमत्स्य दं सानिकाल

गतानिदवपूत्रयतिंगत्सुसहागगायामपयत्तानिसहापयत्तानां चेषाभयंयूपथनस४पवित्रिकर्कउत्थ
 त्रशाकनवयंकुगलकर्मदेतुः
 रूत॥वयंमस्मिंउम्ययदगम
 सवादननगुष्टिदात्रकलूपरु
 स्माकंयनीसमस्यादावर्भादिगिरुशावत्तगिखिनरुथागरस्योरुन४सम्यक्स्मृदस्यनामध्वयंशविना४

ना०००दवपूत्रयतिंगः
 त्सुसहागगायामपयत्तानिसहापयत्तानां चेषाभयंयूपथनस४पवित्रिकर्कउत्थ
 रूत॥वयंमस्मिंउम्ययदगम
 सवादननगुष्टिदात्रकलूपरु

(गवपयत्ता॥कसाभनद
 कवयंनिर्यागानिगताऊ
 हाऊनवप्रसवगम्रीत्रथा

739

कनकगलधर्मदेतुनाकनयस्यभदवयंदवद्वययत्ता॥यत्तनंवरंयनऊसवादन४गुष्टिदात्रकलूपरु
 पसंकुमम॥उयसंकुम्यन
 वपूत्रयतिंगत्सुसहागगायामपयत्तानिसहापयत्तानां चेषाभयंयूपथनस४पवित्रिकर्कउत्थ
 उपगयनगयिन४कस्येन
 दात्रसदमाहिगीर्वाणपादकलस्त्रापिगानि॥दगमूकादावसदमाहिदकि॥षापा०स्त्रापिगानि॥द

सपूजांकत्रिष्यामशाज्
 ऊनवादनसगुष्टिनाः
 दगमूकादावसदमाहि

थगानिदगदवपूत्रसदमाहिद
 गृदरुक्क॥कनखलूपन४गुष्टि
 गीर्वाणस्त्रापिगानि॥दगमूका

दशमं कृत्वा दात्रसदृशानि वामपाश्वर्यानि ॥ गृहान्नयज्ञानुमानं मान्दात्रवंपूषं वर्षे पावर्षे ॥
 दिव्यायुद्धं रुय ४ यत्रादः ॥ १॥ यनसर्वजम्बुद्वीः ॥ ययनिविवृद्धा ॥ ॥ अथ जः
 सवाहन ४ स्थिपनिविवृः ॥ ४॥ अथमानिदगधव ॥ पूरुसदृशानिखगय ॥ ॥ १३८
 कान्तानि ॥ रुयदवपूनाः ॥ ४॥ सूत्रयत्रयस्य ॥ विषयस्त्वनस्त्वनान्नयमान्दा
 यवपूषवर्षेयवर्षेयनाथनाटवीसंरवापूषविनीरुनायसंकार्क ४ रुतुपूषविष्ठां मान्दात्रवः

पूषंपवर्षेयनरुतुवान्दहिता ४ पूनवपिदवालयंगता ४ रुतुवलि ४ कामगुलेवमनिसाकीउनि
 स्मपत्रिवालयनिसा ॥ मरुः ॥ नींशीसीराग्यतामनूरु ॥ वनिसा ॥ ऊन्वद्वीपवगानी
 पुराणा इह ॥ ॥ अथरु ॥ नृवाजासुवपुलागनः ॥ कमादामासाएरुनि ॥ कि
 मर्थमयत्राशोयनानिनिमिः ॥ कानिपाइरुनानिगवा ॥ वन ॥ यत्खलूदवाजानीया
 न् ॥ ऊलवाहनस्य ॥ स्थिदात्रकस्यवत्वात्रिंशम् ॥ कादात्रसदृशानियवर्षेयानिदिव्यानिचमान्दात्रवः

पूषावर्षाभिनिगच्छन्ति॥वाजाद॥ ॥रुवन्काजलवादनः॥श्रद्धिदात्रकंपियवचननगद्याययन॥
 अथरुगलकमाहामाख्यायनः॥ ॥अलवादनस्यष्टदंननाय॥ ॥संकाकाउपसंकमजलदन
 साश्रद्धिनचरुदवाचन॥वाजा॥ ॥सूत्रग्रथपुरुस्त्रामामनु॥ ॥यन॥ ॥अथजलवादनः॥ ॥३८
 श्रद्धिमदामाह॥साद्वैयनवा॥ ॥कासूत्रग्रथपुरुस्त्रामाय॥ ॥रुगमः॥उपसंकमकान्
 निषर्षु॥वाजाष्टकमि॥अलवादनकिंनिमित्तंजानीयायदयवाकोब्दगानिमित्तानिषादहनानि॥

॥अथजलवादनः॥श्रद्धिसूत्रग्रथपुरुस्त्रामाचरु॥ ॥जानामिदवनियरुदगमत्स्यसदमाहिः
 कालगमानि॥वाजाद॥ ॥ ॥कथंजानामि॥अलवाद् ॥नआद॥ ॥गच्छुदव
 अलाम्ब्रसामदपूष्कविष्ठां॥ ॥पुविगुरु॥किंनानिदग ॥मत्स्यसदमाहिजीवन्ति॥
 अथकालगमानि॥वाजाद॥ ॥नवमस्तु॥ ॥अथज ॥लवादनः॥श्रद्धिजलाम्ब्रः
 दात्रकभरुदवाचरु॥ ॥गच्छकलपूष्कटवीसंरुवायांपूष्कलांयथकिंनानिदगमत्स्यसदमाहिजीव
 वि

नि॥ अथ कालगानि॥ ॥ अथ ऊलाम्बरादावक॥ गीष्वागीसुंयना॥ वीरं हवापूष्कविनीरुनायक
 गभायसंकम्पदभनानिदग
 मत्स्यसदमासिकालगः
 नात्रिमहानंरमान्दात्रवयू
 षावर्षदृष्ट्वापूनत्रयिनिवृत्तः
 पितुत्रतदवाचन॥ ॥
 कालगतानीरुथऊलवाहः
 न॥ अथ ऊलाम्बरादावक
 दिदं वचनं यत्वाथेनवा
 जासूत्रश्वत्रपहसनायसंक
 मेतांयद्वकिमात्राचयकिमा॥ यत्स्वल्दवाजानीयाकानिदगमत्स्यसदमासिकालगतानिदव

१५०

षूयविंगत्सपवनानि॥ कषांदवपूनामामनूरावनायत्रावावीदृगानिष्ठुनिमिरुनियारुहानि॥
 यदस्माकंरुचत्वाविंगत्सका
 हावसदमासिदियाः
 वषिगानि॥ ॥ अथ सवाजा
 ददमुष्टउदयारुमना
 गवात्पूनसांवाविसत्यसमृच्च
 यांकलदवनामनदवरा॥
 दवकश्च॥ सभनकासनभनसमथनसूत्रश्वत्रयराजामवाजावत्सव॥ नखलपूनत्रवदृष्ट्यां॥ ॥

वा

॥ कल्कस्य देना ॥ ^त ॥ दधुयाति ॥ गायकानकासनननसमयनसूत्रयवपुखनामवाजावद्वव ॥
 स्यात्खलूपन ॥ कदवक ॥ न्या ॥ स ननकासनननसमयः नऊटिचयानामस्थितिव
 द्वव ॥ नखलूपनप्रवंदद्वव ॥ ॥ ॥ कल्कस्य देना ॥ ॥ वाजायुद्धादन ॥ सकनकाः १४१
 सनननसमयनऊटिचयानामः स्थितिवद्वव ॥ स्यात्खलूप नसकलदवक ॥ न्या ॥ सकनः
 कासननसमयनऊलवादन ॥ स्थितिवकाह नखलूपनप्रवंदद्वव ॥ ॥ ॥ कल्कस्य देनाप्रदंसकनः

कासननसमयनऊलवादन ॥ स्थितिवकाह न ॥ स्यात्खलूपनसकलदवक ॥ न्यासासनकास
 नननसमयनऊलवादनः स्यऊलामृगहोनामरा स्थितिवद्वव ॥ नखलूपनप्रवंदद्व
 वं ॥ ॥ ॥ कल्कस्य देना ॥ ॥ ननकासननसमयनऊलवा
 दनस्यलामृगहोनामराया द्वव ॥ वाद्ववरुदकनका सननसमयनऊलामृगानाः
 मदावकाह ॥ आनन्द ॥ सकनकासननसमयनऊलमर्गनामदावकाह ॥ स्यात्खलूपनसकलद

वरुणानि कानि कनका लन कन समथ नद ग मत्स्य सदसा धिवरु वू॥ न पून स वंदु वयं ॥
 ॥ गत्क स्या देना ॥ ॥ अ मनि कानि कल नाने वः
 पून सदसा धिवरु वू॥ न पून स वंदु वयं ॥
 न संतपि ना निशु क न व स न
 च ग म्ही व श्रु नी र स म्
 खिन रु था ग न स्या देन ॥ ॥ स म् क म् व स्या नाम वयं अ वि न ॥ क न क म् ल व म् दे तु ना म सानि के ॥

१४२

हा ग ना नि ॥ ये न क म् नू रु वा यं स म् क म् वा (वो) वा क ना नि ॥ अ नी व पी नि प सा द पा मा थ न व म् श्रु नि लो
 व न स र्व वा क व ध ना म (वो) या नि प नि ल वा नी नि ॥
 ना सा न न का ल न क न स म थ न वृ क्क द व ना रु रु ॥ ने र्व
 ल म रु ॥ क न द व न क न का ल न क न स म थ न वृ क्क
 यो थ (वो) वं व दि न वं ॥ य थ म या सं सा व सं स व ना व द व ॥ स त्वा ॥ य वि पा वि ना वा (वो) ॥ थ न स र्व वा क

वक्षस्मिषनिलयान्कनूरुवायांसम्यक्प्रवृत्तिः ॥

गङ्गा जलवाहनस्तु वेभं यये
लदव न पत्र ॥ दिनाथा यात्म
०० दं ॥ विविशुवित्रविसुन

विश्वरूपानामाश्वा दगं
यत्रिन्ना गमयि वा वि स
विपुसविमसविविधयु

॥ नृनि सुवर्णपराभासकन्द

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

स्वस्वमेव हे विनयं ॥ नत्कथं
मगनकिप्रधा ज्युमिहगहा

नदभनवलयवाकभाहगवांरिक्कगनसहमयविवरु४पंचविधचक्रपाठ४पंचालसूजनपदसूजन

743

यदपूजनपदत्रिकां च त्रमा
 गच्छन्तु विविधकसमयः
 नन्दमामन्त्रयन्ति ॥ ह्यत्र
 स्मरन्त्यायं ॥ चन्द्रिका
 पदं ॥ पदपत्रगवन्मन

मिमन्त्रिणं पृथिव्ये दग्धं
यमानन्द पृथिवीय दग्धं
स्यात्स न पृथिवीय ॥ न न

द्वाचरुगवानायूष्मन्म
 भाज्स्मिंवास्मि कस्ताननि
 स्मनरुगवकञ्जहायासनं

॥यहं फमा सनं हगवन्निषीद ऊहृ (ग हृ नृ णां वप्रद

वत्रिष्टमा कृवदयवमामृनकथां विसृज नृणां हिताय रुगवं निधनत्रिययूकाः॥ ॥ अथ रुगवांसः
 स्मिन्नाननिपयति कृतामन्त्र
 सत्त्वानां गत्रीवालिडयं॥ जवंः
 धिवत्र कासपाफः॥ सत्त्वार्थः
 मिकपुमगिनस्य नत्ता वृद्धाटय॥

यरुसा॥ ॐ कृथययंति
 मरुलिकृवा रुगवनम
 सात्रसमदयनित्र नस्य
 ॥ अथ रुगवांसदुमात्रचक्रचवतविलिखितनसन्नस्त्रालिनन

कवाडकृवकात्रिणां वाधिः
 नदवाचन॥ ॥ अयं सः
 उद्धमस्माहितस्त्रीग्ययकिः
 ॥ अथ रुगवांसदुमात्रचक्रचवतविलिखितनसन्नस्त्रालिनन

744

वकमल कामसनपाहिना वत्रभीनलं ऊद्यान॥ वाहनमाश्रयषड्विकारं पृथिवीचवास॥ मलिकनकत्रज
 नविकनंचसूयं नकायूऊम
 विद्यदयान न्दमंसूयं॥ अथा
 नरुददगकनकविसृनमः
 नदवाचन॥ ॥ रुवभमयं रुगवं समूऊन ४ समूदूतं॥ ॥ रुगवानूवाच॥ ॥ सयं रुसमूदूवाः

मा॥ ॥ अथ रुगवानाः
 यूपानानन्दा रुगवकय
 का संकादिगंदिवस्थम

यूपमानंदमा मन्त्रयकसा॥ वि
 निगृह्यसूयं विद्यटमा मासास
 यंसमूदकं उद्धात्ररुगवनम

सर्वउदादानकगामिनः॥ नयउद्यानयामास॥ मरुददगर्दिमकमूदसदगानास्त्रीनिदृष्टुचरुगवन्तः
 मरुदवाचन॥ ॥ रुगवः ॥ तस्त्रीनूपलश्रुन्त॥ ॥ ॥ रुगवानाद॥ ॥ श्रीनीयता
 मानन्दमहोपययसास्त्रीनि ॥ अथायुष्मानानन्दः ॥ नस्त्रीनादायरुगवन्तवृद्धाः
 थापनामयामास॥ रुगवांः ॥ आस्त्रीनिगृहीत्वासंघस्य ॥ पूवन्तः संस्कारावाच॥ ॥ मान
 स्त्रीनिमहायुजगुणामकसासमन्तदमध्यानक्रान्तियविवलङ्गमासादयंगमः संस्कारादयादयः संत

१४५

नसमिन्वालोमनिमनादृष्टात्सादिनाथनिमगः सदादाननिवन्तस्य॥ नतारुगवांरिक्कामनयामास॥ वच
 नरिक्कवावाधिसत्त्वगरीवाः ॥ निगीतमुलवासितानि॥ पत्रमद्वर्तुदग्नानिपुण्यक
 कुरुनानिगनरुहिरिः कुरुकः ॥ वपुदा आवर्जितमनसः ॥ कानिगनावीवाहिसूद्वानन्द
 नस्मा॥ अथायुष्मानानन्दः ॥ कुरुकवपुधरुगवन्तम ॥ नदवाचन॥ ॥ रुगवान
 तीतानागनपयत्यत्तसर्वसाकाहूकृतः सर्वसत्त्वेनमस्कृतः कुरुकथंनथागतनवेनान्यस्त्रीनिनम

मरु ॥ ॥ अथ रुग्गवाना यषान्मानन्दभक्तदशाचरु ॥ ॥ वन्दनीयानीमानास्तीन्यानन्द ॥ ॥ नः
 कस्यदुगात्रिबानन्दारिः ॥ रिमयेवंक्रियमनरुवा ॥ संमयकम्भावित्रिसंवृद्धिनि ॥
 हनपूर्वमानन्दानीकचन्यन ॥ कधनवानवाहनवसा ॥ पयत्नाइयनिदकवलपयाः ॥ १४३
 कुमासदावथानामवाजाह ॥ न॥ नमदवकुमावसद ॥ गानुय४पूजावदवृ४॥ मदा
 यमादामदवामदासत्वांथिनि ॥ ॥ अथवाजाकीउनाथमयानमरिनिषुभनसा॥ नवकुमा

वास्तुसायानस्ययुषान्वाधितयाकुसुमलालयाच० नरुताइन्विचत्रमानामदादादगवनयुस्म
 पवित्रियु४॥ नयूपरुनकुमाः ॥ वापस्त्रायकाअन्याना ॥ पुरतावदवृ४॥ वाऊकुमा
 वास्तुष्टाउयानमदस्यामलः ॥ क्रिनायांनंदादगवनयु ॥ संपवित्रियु४॥ ॥ अः
 थमदायसादागनदयमूवा ॥ वा॥ रीर्मदययमाविग ॥ गन॥ आगकनमावयंथाः
 यदेविनागमापयम४॥ ॥ मदादवउवाच ॥ ॥ नमरुयमस्तपितु०००जनविथागादिम

द्दययवर्कन ॥ ॥ महासत्त्वउवाच ॥ ॥ नवममरुयमिदास्तिनायिगाकावनवममन्त्रिऊ
 नसंमुनविविकयवमसुवि पूसमर्थनालाहंदद यमिमंमसंपदग्यतिच॥
 अथनवाऊकुमात्रासुद्वाद भवनगुत्तविवचंचव यमाताचकांवायोददगुः १४१
 सफादयसुतांयश्चसुनयविः रतांकु रूषयविकषिः तांयवमद्वस्तगतीनां॥६॥
 क्षामहायभादाववीन् ॥ रूकक्षमियंतयस्विनीषंजदयसुतावासफादपसुतावारविष्यति॥७॥ दाः

नीरुजनमसुरुमानाससुनानयिरुक्रयिष्यति ॥ अिषुत्तयावाकासंकविष्यति ॥ महासत्त्वउवाच ॥
 किमस्यासुयस्विन्यारुजनं ॥ ॥ ॥ महायुष्मादउवाः ॥ ॥ मान्ताउष्मानिः
 धियागिवससकाभंरुवशदिद ॥ ॥ जगहजनमूकं ॥ व्याः ॥ युनत्रक्रुक्रुसिंदानां ॥
 महादेवउवाच ॥ ॥ ॥ ॥ वातयस्विनीक्रु रूषयः ॥ ॥ वीगमवीयाजूरंयाभातः
 गषायवमद्वस्तानगयमनयास्तनरुजनमन्वदू ॥ काइसा१याभयविवक्रुभार्थआत्मायविरुगंक्र

यदिनि॥ ॥ महायथा दउवाच॥ ॥ निरुद्धकृत्वा त्रयविद्याग॥ महासत्त्वउवाच॥ ॥ अस्म
 दिधानां दृष्टवंगीया रियुक्ता नाम स्याद्दीना भवनय ॥ अनेषां पुन वा त्रयवि
 त्या गारि त्रुं नां यत्र दिना रि युक्तानां सत्यव्याभां न ॥ अथि॥ कृपाक ७४६
 त्रुममवताय सत्यादिविचदस रयन॥ सदेहगतगं ॥ हक वा नि नि वि का लं॥ म
 दिनमना ॥ यवजीविन गीवा॥ अथ केवा ठकुमात्रा ॥ एवमसं दी फा च वा या यो ॥ कि दु म नि मिः

यमनूनिनीकृत्वा पयक मरुता महासत्त्व स्येन ददत॥ अयमिदानीमा त्रयविद्या गणका ल॥ क
 र॥ सचिप्रमयि वृतायं प्रनिका यामहा द॥ गेयन वस नात्ते रुड ने वा द ने थ॥
 गननपनन वसी रुद ना नैः वननेन विडद कि अ नपूर्व सख रा वं रु न य ॥
 अथि॥ नास्ति न श्यापजीयां॥ सर्व काम (धरु न त्या क॥ नदमिदानीं सत्ति या अ न
 शेऊनामवध समुदा रु वल प्रा न रु ना रु विष्णामि॥ अथि॥ स ह्वा दं द धु रु नं रु व ग न क ति नंः

विष्णुमणिकपूरुनिःसात्रं रुतकलं कृमिभनरुत्रिनं कार्यकृतं ननु हि निःसात्रं निर्विकारं निवृप
विममलं ध्यानं परादि विरुः ॥ संपूर्णं धर्मकार्यं युक्तं ॥ भनरुत्रिनं याप्या नवं सूत्रं ॥
ॐ ॥ सखलं चं कृतं वायसाय ॥ पत्रमकत्रभापत्रिगतः ॥ दद्यात् ॥ कथा विरुयं च काः ॥ १४ त
वा ॥ गच्छतां तावद्वक्तो स्वकाः ॥ यो ध्यादं द्वादश वनयुत्तं ॥ पुत्रश्चामीनि ॥ ॥ अथः
समस्त सत्त्वा वा ऊकृमात्र ॥ नस्मादपवना न्यति निवृत्त्या यथा सयमपगमवत सनाथां पाववनः

मूत्सुयसि ध्यानं च कात्र ॥ च धादुगकादिनार्थमकुलां वा विंशिवृक्षगिवां कात्रुत्थं पददा मिनिधनम
निददं यत्रे इत्थं ॥ नस्मा वा वि ॥ वना मया कितनं सुनिवृत्त
सा गवा न्यति रुया इत्ता वयय ॥ मदं ॥ ॥ अथ या यथा अ
नशा नभा वा सी मे नी व भा वाः ॥ विसत्त्व सान किं विचित्रं
नयमर्थं नृकाय गमुं पथं वरुसा ॥ कृपा मतिनं कवि च्छुमल रुत ॥ सा निवलां वर्ष भनिकां वं भलः

मायदीत्याकयासुगतमृकषायाद्योसमीपपपाक॥प्रयतिनमाकुचवाधिसत्यदुमिप्रियं॥एववविहीन वनी॥गलिनम(य)गमाषधि ऊ॥दिव्यगन्धर्वसन्निविन मनसादवनावाधिसत्तुष्ट पावेनेददंरुसिनत्रवीवपुमृदिग॥गिवं(य)ष्टंस्त्वनंजनमवनाथेवित्रदिनंनित्रायासंभानंत्वं	कात्रंपचवान॥त्रादुगः धसूमवर्ष४यपाक॥ व॥यथाकात्रुधंरुववि	स०००दिनकत्रमानवशा मृधाननत्रात्रिसायावर्जिन सृगमिदसत्यपुसचन॥य	१५०
---	---	---	------------

मिदुनवित्रापाकृष्यसिष्ठं॥ कुरुमाकुभनिर्मासेत्रवित्र म्यमनूनिगम्यमदादेवमेग वसूमनीदगदिद्रुसूफवभि सननूविद्विसृष्ट४सांयकंजाहृताम॥	॥मृथस्वसूसायाद्योत्रवित्रमुक्तिगगवीत्रवाधिसत्त्वमवच्यसूः मस्त्यव(य)वंचकात्रा॥ दवाचन॥॥यत्रवि धसूर्यो४यनतिसकत्रः ॥मदादेवउवाच॥	मृथमदापुलादसंरुमिकः नसमूडासागवान्नाय(य)यं॥ कसूमवर्षयाकृत्तंवामनाम॥ ॥यथाचसकात्रुधवशाकृवा
--	--	---

ज
ह

चरु॥समीकृतांस्वनयहृद्रु॥क्षयना॥द्रुश्चानिवासाजगते॥समन्वितासुदुर्वतामनिविदसंगया
 दुमो॥ ॥अथमोवाजकुमा
 यत्कनपतिनिवन्गकनी
 गलनासमावृतायूकपावत्र
 दिग्विदिद्रुकगाविस्तीर्णदृष्टाचसन्कनैहमोनिधनदुःसविनासंरुमूपलशास्त्रायाचवाद्रुः

मोयत्रमभाकारिहः
 व्याखीसमीपभवतिउ
 संकपुविहृषुनिचाह्यी

मोवासापत्रिपूनाक्रीकमनं
 गमदुः॥नंददृगदुः॥गवंचं
 निवृधिवकदमानि॥नानाः

१११

अरुस्वचंममचदुः॥अदापियहृकयार्थिवायंनथाऊचंनीसूनसावायाएच्छिष्यन्कसाऊननीः
 रुनीय॥कवायुवाणांकम
 दणमवनजीविता॥कथंम
 ॥ ॥अथमोवाजकुमा
 यस्यायस्त्रायकादिगियवावन्क॥कुमावास्त्रयन्क॥यत्रस्याचंदृष्टाचपयद्रुःककुमात्रंनि॥नस्मि

नाथककुगशाजुदादि
 दासत्वविवर्जितावर्यं
 मोवद्रुविविधकनृगं

जस्माकमिदेवगाहिकंननूप
 दास्यामददगनमम्वनाकथा॥
 विनपायुत्रकमदुः॥ककुमा

अ
ह
दि

वसमयदवी गयन नसगना पियविषया गसूचकं संप्रददर्श ॥

॥ कथथा सुनोद न्ना त्याग नं चक्रिय

मानं यय १ क पातथा व काः

१ पुनिल ममाना सुही

माजवं १ धनना द्विय माना १ ॥

अथ दवी रूमिकं पाद्रुसु

ददया सदसापतिविः

वृक्षचिन्नाय नावहवा ॥ किमः

याहूत भगीजलनिधिवसना

कंपतिरुगं सूर्य १ सुनीनः

त्रग्नि १ ॥ मसचक्र चं स्रह्कां वयः

निवाड १ खं कृत्तु निमलो आत्र कि १ ॥ वनयनं स्वसूनं चिश्नी व ॥ सुस्तिभन्त्या नूतां वन विवत्र मिदं कुी उनाथः

१५२

गगाना ॥ अथेवं चिन्तयन्त्या १ ॥ र्गोच संजान ददया पविष्य दद्यानि वदयामास ॥ दवी कृमावय त्रिजा काः

१ कृमावमन्त्र सन्का ॥ नष्ट गुर्य

१ ॥ कृपू पृष्ट दग शवभाञ्च

दवी संकं पित ददया वाषा कुसन

यन वदना राजानमरिग म्मा

वाचा ॥ दवन द्वा मयियस

नष्ट गुर्य १ ॥ वाजा पिसं कं पित द

दय १ यत्र मसं रुम मापद ॥ दा

कष्टं वियू का सिं म्का सि

पियसूनना ॥ ॥ अथ वाजा

दवी मास्वा सया मास ॥ माही दवी पूजा र्थं वयं कृमा वा न्ध वलाय लरुन १ ॥ कृपू पृष्ट कृमा वा न्ध वलाय लरुनः

अ
ह
नि

जनकाय॥ ॥ अथ विवाहव्याजोददर्शद्वयवर्तनवागवर्तनो वाजकृमावोदृष्ट्वा वाजावर्तनीनां च गोश्रास
ह नो कृमावो ननु स च ॥ दाक
हं सुतविया लानामा नरु
हं ॥ हवति सुतविया गाया इ
गंदी मनेसं ॥ ननु वप्रस
प्रमं मयगमावाथनडी वनि
पूजाशा ॥ अथ दवीः
वमिनि वप्रसं रुनयो निव वंनया
खिन रुयनयं साहिया गा ॥ ॥ म
पत्रमं गाहति ह नार्यममह न
वकत्रही शरुसत्रमवाव ॥ यदि ननयानुयसा रुयवर्गववनवप्रसमा शय विष्टा ॥ कसद्वदया सुमाः

१७३

समस्तनीयः सुकमनया यदवेनिकनीयसमकृत् ॥ नया वागनया वाजावेनत्यत्रिष्टुक्तात्सुकः कृमावोय
त्रिष्टुक्तात्सु ॥ कदात्रकः क
नीयसं नै ॥ नरु ॥ ॥
युक्तात्सु दगनवदनीः
नकिश्चिद्रवतु ॥ दय
निसृमिथयत्रमरुमं यत्रिः
यीश्च नवदहं ॥ कसमम
टिनं तु समुच्चमिवा ॥ ॥ अथ नो कृमावो विरुप्रवर्तनं वृत्तानं निवदयामास ॥ सुदृगवर्तनवाः

जादवीपत्रिऊनाथमादमूयगना॥मादपुखागनाथकनूलाकेसुवंगुदमानासुंदगमलिऊगु॥ ॥

अथजादवीचगान्यस्की
गविकीकुट्टिद्धावादन०००
सुंदइद्धागलिवमसयचंदः

निजयगनवृधिवमानः
दुमादुमोनियमिनी॥न
नापंकवाहादवाथगती

सायत्रिनिदि(गविदिगथक
न०युवादिन०सुचिवंगामवः
चंपुद्धादयोमासा॥ ॥अ

१५४

थसुचिवात्संरुमपसरावाजात्तायकनूगंविलत्ताप॥हाकसंपूककमनात्रमदगनीया॥मृत्वावमंगीद्यमू

पगनामिसुत्तापसमभवदिवागन॥विनाकपत्रंसमरुविष्यनिद०खमनरु॥दवीचमादान्यगनापकीकु

कगीवाद्गुमूत्रकातयनी
वनसुवत्ताकनलीवनसुग
यंघमाधवलीनसदिविषकी

सुत्तापूक०००मत्ताधव
वकाकनूगंनोदिनि॥हा
सु०गकममयुविथनना

सासुसयत्रिवरुमानामदिषाः
कान्कपियसूककनवजसुत्ता
गकाय०पूजाभनयनमनादत्रं

पयद्धा॥हाकिंगतीवमिदुअयनयनाहिवासंपग्थाभियसूकवत्रंनिदुगंयथिया॥सुचदयमयल्पायं

मयेनं प्रिग्यासनमवक्त्रना विरुदं ॥ दायेन त्यायकं सप्ररुसंयस्त्रिन्दयमयकथिदगिनः ॥ प्रान्नवदोसः
 नोदुंक्षत्वायभयियसूताना गंगनः ॥ गीयु मनः ॥ सल्य भनायदनायत्वेव ॥ दूमनय
 कपारुमिहिशामभयमिहिश वासुके ॥ पवित्रताचका दनामरुना ॥ ॥ अथनाः ॥ १५५
 जादेवीचवद्रविधं कवृगक वृक्षपविद्वनः ॥ ससर्वाः ववमानवमूचामदनाउनका
 यनसार्द्धं पूरुसगवीत्रपूजांक्षत्वा नस्मिन् विवोयदलसूवर्गुमयधैर्यसूनास्नानिगवीनामि ॥ स्यात्तु

सूपूनवानन्दान्यः ॥ सननका सनननसमयमदासत्तानामवाउकुमावा इत्तु ॥ नेवदद्वयं ॥ ॥ नत्कस्य
 देना ॥ ॥ वदंसनकाः सनननसमथनमदासः खानामवाउकुमावा इत्तु ॥ नदा
 यिमयानन्दवागद्वषभादा पविमूकननत्रकादिशि थदः ॥ खेः ॥ रुयवाउगदनूष्टही
 नं ॥ किंखलूपूनविदानीं सर्व दाषापगननसम्यक्स्व्य दननि ॥ नवंदिनकेकस्यसत्त्व
 सार्थकलं समूदयं नवकपूवाजानिसंसावाविमविथयं ॥ खलूसत्त्वसायथजगत्पविष्टहीनं इक्ष्वमन

७
२५

नित्यनमः (वा) उरुगो वा ऊकुमा यो मदायुषा दसुथा मदायवशा न काय संक मिता यव वा यो सुदुर्वला गयिका ॥
वा यो सुगो दृष्टा प्रवित्रलिः ॥ फांगानिक गालिचर्ममा ॥ कुंघ्रवृक्षामव कीर्ण पतिना निद्र
द्वारा यत्किञ्चिद्मातुं रसा ॥ पतिनेधत्र नीयं पथानि ॥ उरुगो नृपसुगो संमृद्धि कोदि ॥ १२१
ननु यव निवत्र नीयं नष्टम ॥ नासूत्र पापुत्र आलिकः ॥ गात्रा ॥ स्मृतीन्द्रियविहीनमूढ
चिरात्वा ॥ न वांचया ययक प्रभास्य वा दमान लभ कारो ॥ संवर्गि न ऊत्सना स्त्रिता द्वा दवथ कुन्धान सिं ॥

पतिनमा नृधसान् ऊत्सना विप्रियागम दोषी च ॥ पथानि मृग गति ॥ वा ऊकुलान् नृगना सुखय विष्टकाया ॥ ना र्णा
रुना र्णां क्रीवपनूतं य (ग) वः ॥ न्यायलो ॥ सर्वाङ्गमस्यादि ॥ सुविहिविचरि यमाना यि अति ॥
कयू युद्धदया पूव विद्या गारु ॥ (ग) क ग व विद्या ॥ उय सं ॥ कुमिता नृपनिं सुदीन मनसा रि
(ग) क सं न फा क वृध स्ववं वा ॥ दिनि ॥ वाक्षार्थ मदा वथ सी ॥ वा वाचन ॥ शृणु मम नृप न न वन्दुः
(ग) का गिना मम द अरु ग नी वं ॥ उरु र्णां रुन मूखा र्णां क्राव मय मूक मवित्र ॥ सुचिहिविवांगमंगं यी च नि ॥

ग्यादा निमम द्रयं च यथा याद गं निमिहं न ह्य ४ यथा मिदं न यीय सूनां यूक धां भविजन ददादि समः
 जीवितं क्रमं कृत्वा ४ स्व प्राप्त याद ह्य सु यो मम कथा न सु तानि ॥ या स गृहीय मदं कथा नः
 सूतं पिय नायं च ग्या न सु यः पुवि ह्य ॥ ग्या न नाय द न कथा न कं च ॥ स्व प्रा न न च समः
 ४ द ग ग्या कं पुवि ह्य द द य सिं ॥ अ नि दा द ग्या कः चिंता म न धं म म रु वि षा नि नः
 चिंता म न धं म म रु वि षा नि नः चिंता म न धं म म रु वि षा नि नः

११८

धनं लीय ॥ सू गी य प वि दी ना वि न ह्य चि र्वा चि सं ह म ना ॥ सर्वान् ४ पू व ग धा य क यू रं स वं च द मा ना ४ व न्द
 न ४ द ह्य ना म ग म दी र्वा ॥ स मूर्च्छि न य नि नां च क रु ध व नी थ स म न्न य ग्या का र्का पू न विः
 या ग्या सा न सा वा ऊ न्द धाः मा त्वा प म् का डि ह्य र्थ ग ना ४ क्त्वा ना धां ॥ सर्व न्ग ना नः
 ऊ ना ना ग म् पु द्दी ना लि ना ४ ॥ क थ आ ग ना य म् म्वाः वा द मा ना ४ ॥ पृ ष्ठ नि य थै व नं म
 म दा स त्वं किं वि ना वा क ग न ४ सा पु रं म दा स त्व ४ किं द न्वा म् दं म य म ना धं ॥ स त्व द र्ग न यि य म ना धं न वि त्र ध

विनष्टशमं॥सू(ग)कवदनभययाकि विषयसिंदारुतिर्दनाकशाअननमायासकदानिद्याष॥वाजा
 मदासुखत्वायवादमानः॥ (ग)कार्त्त॥सिंवनिगति॥ लभये॥अग्रमदीर्घाचवत्रनी
 यपननीमिश्रति॥उदकच॥ यावत्सुनिनसरा॥उः॥ ल्यायपृष्ठिचंदीनमानसाकि ११त
 समपूनादिसुताजीवन्ति॥ वाजामदावथआदमदी॥ वाचवभवंचदिमिदिदिभाः
 सुअमात्यपार्षथाडिह्लासार्थगताकुमागामंमात्वमनिदीनमानसारुवादिभत्यासि(ग)कद्वदया॥चवंस

दावथथक्रमपयित्वाकदायमदीचकंथ॥निबुभवाऊकलाभायशुमूखावादमान॥(ग)कार्त्त॥अः
 मात्यगणपविवृत॥सूदीनमन॥ साधदीनचक्रथनिबुमाः॥ नगत्रपूत्रताडिह्लासार्थयः
 वाजापूनांवाङ्कयमात्ते॥गकस॥ दमाष्टाशुमूखावादमाना॥ भवन्ति॥निर्गकंदृष्टावाजा
 नंवाह्लासपृष्ठन॥समनवद्धा॥ ॥समननचनिबुकाकावा॥ जासमदावथ॥समननः
 वारियपूवकचुदगनार्थपुक्रनिदिगमांसू(ग)रनयभादृष्टान्यनवंपूवंपमृष्टिरुशीषद्वा॥स

मननवनिष्काभात्राजसमदावथ४समननवार्थियपूवकत्रवदभनार्थियकनिदिगतांमू (आसन
यनादृष्टान्नगप्रपूवमूतिः
मूयंश्रदमानागकृन्दावृक्ष
श्रदमान४स्तिभाकुद्ववाथक
न॥ ॥उपसंभमनयनवाह॥मदावथमश्रावसिंस॥मा (आ कविरुत्सं॥रुवनयननिष्टनिकपू
तगीर्षश्चविविजसिफाङ्ग
(आकार्कसवाहमदाव
न्यक्त४॥अथान्नममाः
पाङ्गनासिकगतीसं॥अथ
थसाददथासू४अथमूखाः
पस्त्वगगत्तगीयमवाचः

१६०

श्र४यियमनाया॥नवित्रभागम्य००द नवअनिक॥उम्भसित्वंपूववमनायं॥मूद्रकमावमनिगः
म॥माहृदितीयामागुज्राः
जानमिदमववीदिति॥द्वोच
वपूववशानदग्धन॥नयय
वायोचपूवामयहकुका मां॥नवांमदासत्त्ववत्रकमाशमदानककावृधवलंजभत्वा॥वा (मोचत्वायविधिः
गगुरुन४॥वजावकी (मु
नयूकोमदानयन्दुतिष्टः
आमदासत्त्वअनिरागाया
मसवमुपादृगशासायमूखावा
न४ (आकानससंयदीको॥नकसू
४॥दृष्टाववायोमवित्रपसगा

मदावांसर्वाश्चमत्तानिदवाप्रयिथा॥नंवाविगसीममदात्रमिद्धाअनागरुधनिअदंसुगयो॥यनिमासदा
सत्तागिनिगटाकुसाएकि
स्ववगिपंकुनवाऊपूवं॥न
निरुधधनीयविनरुचिः
वृत्तास्ववशदमानागाका

नायायाकृवाठिताया॥
वंचयत्तासवव॥सुधागं
रुशागाकागिभापेकलि

मद्रुर्कनिमोनाकृत॥सअंगवा
संमूर्च्छितावाजामदात्रथथा॥य
नंसुदावृक्षाअमात्यपाषाक

१७१

रुसिंचनितकसनसर्वस्मिनाकृवाकृशसकन्दमाना॥नृतीयामास्यानयमः

युवीन॥दृष्टोसयायउलोकुमात्रोसमूर्च्छितोकरुमदावनमिं॥यनिमोववन्धंरविनरुचिकोअस्माठिगूः
दकनचसिंचितानि॥यावस्मृतिं
कृत्तिरुनियकनिरुमो॥कनू
वधूमदीवनचदागवसा॥सथ
(गाकयचिरु॥गाकयविद्ध॥यत्रिदवयित्वाचवंदिगाजायत्रिदवयनि॥नकथमयूयिथामनाम॥य

नसयून॥स्मिनीदि॥जाः
नासयवयत्रिदवयनिः
ववाजाहदिदीनचिरु॥पू

दीफययानिदिगथकमु॥मूः
नावर्द्धवाकृसननंस्मिदनि
रुविशामासूविद्रिफचिरु॥४ः

स्म अति द्वावन वा कसन मा भ यं ननु यथा यपु गोपिय द ग नो यं ॥ मा नम मा तु विज ननु का यं ॥ न जी विरु ना स रु न वि या गं ॥ तुं ॥ द द्वा व पु गो सु न वां म मा द क नृ ण स वं कु न्दि न आ रु मा ण ॥	मो ॥ गो धु ण या न न व वा ऊ (मा का नि ना न द्द न यं स्फू ट वा जा यि त्वा म र्ग ग ण न माः जा जा यि न त्पू र्ण द य गृ ही त्वा य वा द मा ना	य न न दं गी यु वु ऊ धा नी य वे ग य दा ऊ कू ला न न गी नृ पृ णो व द्द द्वा न ला स न सा नि ॥ ७२ द्दि द्दि पा रि वृ ण ग न न कु द गि
--	---	---

पिपू वा व जि त्वा सां गी यु गी ल्पं त्र मा ण नृ पा द वी अ द र्म त्पू र्ण का मा ॥ अ दं च स ग्गा य म् नि रू धा ग न १ पू र्व स त्व व वा व रु व ॥ पू र्ण श वा सु द्वा द ना दि व न पा थि व न्द्राः वी मा म दा य णा द रु थ भे नी या मा व रु न ॥ या यी अ रु रु न म दा य जा य नी या यी सु ना पं च क अ मी दि रि क्का द यी सु ना वि षा नि आ सी रु ॥	ह्ना दि म दा स त्व व थ स य म दा व थ ना म व रु व वाः रु ना म दा द व अ सी द थ अ सी द थ	ने व वा यी स खि ता रु ना सी रु ॥ आ ॥ म दि षी च आ सी द व मा य द वा ऊ पु गो म रु इ यी व रु दी व रुः अ सी द थ
--	--	--

॥ अथ महावाजा महादवी च वरुवित्रक नृणां पवित्रं वनं कृत्याम वा रुद्राणां वम च मदा ऊन कायनः
 सार्द्धं युवसां गत्री यजूं कृत्या अस्मिं पदे गतं स मदा सु त्वसा ॐ भगत्री ययुनि श्रुषिनाः
 ॥ अयं स पत्रमय सुय ४ न रुद्र न च मदा सत्य न असा वा यो आत्मा राव पवित्र कं ॥ ७३ ॥
 वं ययं ययुनि श्रुषिनां कृत्याः कृतं ॥ ॐ भगत्री ययुनि सय पवित्र भना इना गतं च गतः
 नामे मति का न्ते ४ क ॥ ४ सर्व सत्त्वानां वृद्ध कार्य च कात्रिना ॥ अस्मिं पदे गति दिग्ध मा भ अय मयानां सत्त्वाः ॥

नां स दव मानुषिकाया ४ यजा या अनूक वायां स मय कां वा (ओत्रि कं) उत्थादिनं ॥ अयं च ददुत्र यं पय ये ४ ॥ असा सु
 पसा दनि दगनि गा या धा सचः सुपा वृद्धा वि श्रान न गते वान्धे न म नूपा फ ॐ मि ॥
 ॥ ॐ तिगी सुवर्षु यग सा रु म स गन्ध वा ऊ वा खीयः ॥ त्रिवर्त्तना मान विंगनि ॥ ॐ ॥
 नमः ॥ अथ खलु गानि अन्न कानि वा वि सत्त्व गत स दसा धियन सुवर्षु नः
 त्वा क ॥ ॐ ॥ वरु कृट् रुथा ग न रु नाय संकान्ता ॥ ४ ॥ उय संक मय ग स सुवर्षु वत्ता क वरु कृट् रुथा

गथागतस्य पादो गिप्रसावन्दि त्वा नका नै स्मिमानिकगानिकना इलिरुनानिगंसुवर्गुवत्ताकवचनकृतं तथा
 गतमरिसंवि त्सासुवर्गु वल्लुजितगककायसुवः पुवर्गुवयवरासिनाङ्गसुवर्गुः
 गिप्रिवामुनीन्दसुवर्गुवर्गु मनिपूवर्गुवीक॥सुलकले लकालेद्विनांगसुविप्रिगुवाः
 जनविप्रिगिनांगसुविनाडि नंकाअनसुयरासं॥सु निर्मलंसागमिवावप्रदं॥वक्त्र
 श्ववंसुसुववद्वयाधंसिंदश्ववंगडितमद्यधंसाद्वद्वसंवितसुप्रनिमलश्ववंसुपूवकलविंकवृत्तसु

१३४

वडितं॥सुनिर्मलंसुविमलगतसुयुक्तं॥पृथंवरुत्तकलसमलंकृतं डितं सुविमलसुनिर्मलसागलंडितं सु
 भवसर्वसद्युगान्तिनं डितं पत्रमः सत्त्वदिगान्दकमानं॥यजसा कवसुखसदायकं॥पत्रमार्थसु
 सुदगकं डितं॥यत्रिनिर्वाहसुख यदगकं॥अमरसासुखः सदायकं मे कीवत्तउपायवीः
 यवकं॥नगकं सगर्गुसुवद्युध समुद्रसागत्रं॥वक्त्रकलस द्मुकादिरेवकेकं गुधविन्दुग
 वपकासिदुं॥नरत्नक्रिकं मयापकागिरं किं गुधविन्दुगुधार्थुवाङ्गु॥यत्र समुपायिकपृथ संवयं न स लक्ष्म्या

पण्डितविमर्शमां॥ ॥ अथ खलु प्रविश कर्तुं विमर्श उक्ताया मनाद कागमरुद्रासंगं यावत्प्रित्वा दक्रिबं जानुः
 मधुसं पृथिव्यां यमिहा यमनरुग वां रुना पुं लिं यम माय त्वाः कसां वसायामि मां लि गथा लि
 प्रहिरु वित्ता॥ सत्तं मनीन्दु गनपूः धास क व स द स शी वा वृयु लेत्र सं क रं॥ उदात्र व वृव वः १३५
 मोम द गन॥ स द स ग मि वि व य स न अ न क व मि क ल न क स स प रं॥ वि वि ग व ल क स व ल
 स क व नी ला व द ना प व का श्र ना रु वे दू र्य ना मा व स टिका रं॥ नि र स न व उ मि व द प च न न प य वि ला साः

विमर्श न क टि रि शा प सी द म स न्द्र प व रु रान ना॥ प र प म स ल स र वा व प्रे वि ति॥ प स ल व लु न्द्रि य वा व द ग
 न श क य वृ य उ न कान् वृ य॥ अ व व लु वि व ज वि वा उ म॥ य ले व स वं उ म ला क स प रं
 वि उ द्ध का वृ य गु ले व सं क रं॥ स मा न मे नी व ल य ग्ग स चि नं वि वि ग य लु व न वा अ न वि
 ना॥ स मा वि वा य क गु ले वः सं क रं॥ न या रि य द्वा द क वी स र वं क वी गु र क वं स च स
 र वा क ला ग मं॥ वि वि ग ग री व गु ले व सं क रं॥ वि वा व स क व स द स का नि ष॥ वि वा उ म लं य म मि वि वां गु

लि० यथा कलं स्तंग गल कर्म लु संम वर्य था सर्व यु ले वृ यन ॥ संद ग्ध स स च वि ता क वा रु ष ॥ ग क्री व गं ख कु म
 द न्द्र सं नि रा ॥ ४ ॥ य वा व य द्वा रा
 वि व रा न जी कं ॥ न्द्र सो मा वः
 व लू म नि ना रू व मि रि वि वा
 धा ग र रु व प वि व रू नि म विं ग नि न म ॥ ४ ॥

सृ पा शु व य द ना व नि रु
 कृ न्द्र म र्वा न श स्मि रं प द
 व र सूर्य रू न जी क ॥ ३ ॥

मू ख ना वि वा रु ग ॥ स डा उ दं सीः
 क्रि षा व रु स क रु सी नं ॥ वे ड र्थ १७७
 ॥ ॐ ॥ नि स र्व नेः
 ॥ अ थ ख ॥ ॐ ॥ वा लू वा वि स त्वः

सम च याना म कू स द व ना द्द रु द्वा न र्वा व ला या मि मा रि गं था रि रु ग व नं रु र्द ॥ १ ॥ न मा रु व द्वा यः
 सृ वि शु द्ध वा व य ॥ वि शु द्ध वः
 ना य व वि शु द्ध वृ द्ध य ॥ अः
 अ दा अ दा वृ द्ध म न न र्वा वः
 ग न ॥ ग क कू ल क रु न व रु सूर्य य न द गं वा वि न स रू म रू मं ॥ स र्व ष स त्वा न अ नू ग द र्थ गि न क र्वा व ॥ ग क म

मी प नि र्वा न वृ द्ध य स द्वा न
 हा अ दा वृ द्ध म न न र्वा वः
 वं डा इ च वं पू य मि वा नि द

पू र्वा य ग ना न वृ द्ध य ॥ रु वा य रु
 सं अ दा अ दा सा ग व म रू रु यं ॥ ३ ॥
 रं ॥ अ दा अ दा का नू नि क र्वा व

गवानामनासु च वाधिसन्तावाधिसन्तः
 मखासावसवावनीपषट्सु
 मखासुगवना राधिसमयः
 आर्यसुवर्णपुलासाकमः
 यधिसमाकः ॥ ७० ॥

समन्वयाकृतदवनासवसनीमहादवीपु
 वगवठकिन्नवमहावगादिय
 नन्दनिनि ॥ ७१ ॥
 रुद्रुमाकः ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥ यधमादिपुलावा ॥ ७४ ॥

७५

पांरुथागनासु च दक्षिणं श्रुयानिवाधः ॥ ७५ ॥
 ॥ ७६ ॥ नयासम
 ॥ ७७ ॥ मासा नष्ट
 ॥ ७८ ॥ असुवर्णपुलासाकमः
 मि सवृत्तविन्नवनासिचन्द्रमसि ॥ ७९ ॥

॥ ८० ॥ यधमादिपुलावा ॥ ८१ ॥
 ॥ ८२ ॥ नयासम
 ॥ ८३ ॥ मासा नष्ट
 ॥ ८४ ॥ असुवर्णपुलासाकमः
 मि सवृत्तविन्नवनासिचन्द्रमसि ॥ ८५ ॥

८६

[illegible]

सुयासु ॥ सर्वक ॥ १७ ॥ सुगन्ध ॥ सांभ ॥ सुकुय ॥ क ॥ द ॥ म ॥ म्या ॥ कि ॥ थो ॥ ५ ॥ स्तान ॥ के ॥ ७ ॥ द ॥ प ॥ न ॥ जा ॥ रा ॥ क ॥ थ ॥ क ॥ म ॥ म ॥
 रु ॥ क ॥ म ॥ नि ॥ व ॥ ल ॥ य ॥ म ॥ ल ॥ व ॥ रु ॥ रा ॥ मि ॥ ग ॥ ने ॥ स ॥ वि ॥ रु ॥ वि ॥ च ॥ क ॥ म ॥ नि ॥ व ॥ द ॥ म ॥ मि ॥ ॥ दा ॥
 न ॥ प्रा ॥ नि ॥ आ ॥ रु ॥ श ॥ व ॥ न ॥ म ॥ सा ॥ वा ॥ हा ॥ ना ॥ के ॥ का ॥ या ॥ ॥ ॥ क ॥ म ॥ ग ॥ प्रा ॥ वि ॥ न ॥ रा ॥ द ॥ मि ॥ रु ॥ न ॥ ॥ थ ॥ प ॥
 रु ॥ क ॥ म ॥ श ॥ व ॥ श ॥ पु ॥ ला ॥ द ॥ कि ॥ ना ॥ वि ॥ स ॥ का ॥ या ॥ ॥ ॥ कि ॥ ल ॥ क्ष ॥ ण ॥ क ॥ ण ॥ वा ॥ ऊ ॥ प्र ॥ ल ॥ ल ॥ ल ॥ द ॥ ॥
 या ॥ वे ॥ का ॥ या ॥ रु ॥ ॥ ॥ इ ॥ ना ॥ रा ॥ य ॥ भ ॥ ग ॥ ॥ आ ॥ ज्ञ ॥ म ॥ दे ॥ न ॥ स ॥ वा ॥ ना ॥ व ॥ मे ॥ ले ॥ ॥ नि ॥ न ॥ का ॥ या ॥ ॥ रु ॥ ल ॥ ॥ ॥ सु ॥ रु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

Suvarnaprabhāṣā

790

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH75

